Master of Arts (Economics) (DDE)

Semester – I

Paper Code – 20ECO21C3

Economics of Growth and Development – I

संवृद्धि एवम् विकास का अर्थशास्त्र – I

DIRECTORATE OF DISTANCE EDUCATION

MAHARSHI DAYANAND UNIVERSITY, ROHTAK

(A State University established under Haryana Act No. XXV of 1975)

NAAC 'A+' Grade Accredited University

Material Production

Content Writer: *Dr. Parveen Kumar*

Copyright © 2020, Maharshi Dayanand University, ROHTAK

All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means; electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the written permission of the copyright holder.

Maharshi Dayanand University
ROHTAK – 124 001

ISBN :

Price : Rs. 325/-

Publisher: Maharshi Dayanand University Press

Publication Year : 2021

Master of Arts (Economics)

Semester –I

Economics of Growth and Development – I

Paper Code – 20ECO21C3

इकाई – 1 (आर्थिक संवृद्धि और विकास)

आर्थिक संवृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक : पूंजी, श्रम और तकनीक, आर्थिक संवृद्धि ऐतिहासिक परिपेक्ष में और इसकी उपादेयता : सरचनात्मक विविधता और विकासशील देश की विशेषताएं।

इकाई – 2 (विकास और अल्पविकास)

विकास का माप : आय माप, न्युनतम आवश्यकता उपागम, PQLI और HDI और कैपिबिलिटी उपागमः गरीबी, असमानता और विकास, माप, प्रभाव और नीतिगत विकल्पः विकास अन्तरालः संकल्पना और माप।

इकाई – 3 (विकास के क्लासिकल सिद्धान्त)

एडम स्मिथ, रिकार्डो, कार्ल मार्क्स और शूम्पीटर का योगदान।

इकाई –4 (संवृद्धि मॉडल)

हैरोड और डोमार : संतुलन में अस्थिरता : नव क्लासिकी संवृद्धि मॉडलः सोलो और मीडः जॉन रोबिन्सन और कैल्डोर के संवृद्धि मॉडल।

परिचय

आर्थिक विकास को विकासशील देशों के आर्थिक चिन्तन का महत्वपूर्ण बिन्दु माना जाता है। परन्तु आर्थिक विकास केवल अल्पविकसित देशों तक ही सीमीत नही है। आर्थिक विकास का विकसित क्षेत्रों के लिए भी उतना ही योगदान है जितना की अल्पविकसित देशों के लिए है। आर्थिक विकास का विकासशील और विकसित देशों के लिए बराबर – बराबर योगदान है। 1929 की महामन्दी और द्वितीय विश्व युद्ध जैसी घटनाओं ने आर्थिक विकास की समस्याओं पर विचार करने को विवश कर दिया था। आर्थिक विकास के सिद्धान्तों को वृद्धि का अर्थशास्त्र, अर्धविकास का अर्थशास्त्र, विकास का अर्थशास्त्र जैसे नामों से जाना जाता है।

इस पुस्तक को चार इकाईयों में बांटा गया हे। पहली इकाई में आर्थिक सवृंद्धि और आर्थिक विकास में अन्तर के बारे में पढेगें। विकासशील देशों में कुछ विशेषताएं सामान्यता हर जगह पाई जाती है। परन्तु सभी देशों में सभी विशेषताएं सामान्य रूप से पाई जाती है। इस तरह से अल्पविकसित देशों में कुछ विशेषताएं हर जगह पाई जाती है और कुछ विशेषताएं अलग – अलग होती है। दूसरी इकाई में हम आर्थिक विकास के माप के बारे में अध्ययन करेगें। आर्थिक विकास को मापने की कई सारी विधियां है। आर्थिक विकास को मापने की सबसे पुरानी विधि राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय है। 1950 के दशक तक राष्ट्रीय आय का बढना ही आर्थिक विकास का बढना माना जाता था परन्तु 1960 के दशक के बाद आर्थिक विकास के माप न्यनूतम आवश्यकता माप, PQLI, HDI और कैपिबिलिटी उपागम का विकास हुआ है। गरीबी और असमानता का भी आर्थिक विकास के साथ सम्बन्ध को बताया गया है। तीसरी इकाई में आर्थिक संवृद्धि की एडम स्मिथ, रिकार्डो, मार्क्स और शुम्पीटर के सिद्धान्तों का अध्ययन करेगें। एडम स्मिथ ने बाजार में अदृश्य हाथ की भी बात की है। चौथी इकाई में विकास और संवृद्धि के कैम्ब्रिज और नव – क्लासिकी सिद्धान्त का अध्ययन करेगें। नव क्लासिकी सिद्धान्त में सौलो और मीड जैसे अर्थशास्त्रियों का अध्ययन करेगें। कैम्ब्रिज अर्थशास्त्री में जॉन रॉबिन्सन और कैल्डोर जैसे अर्थशास्त्रियों की बातों का अध्ययन करेगें।

डॉ0 प्रवीन कुमार

सहायक प्राध्यापक

राजकीय महाविद्यालय, जाटुसाना, रेवाडी

विषय सूची

इकाई – 1 .... **1**
1.0 परिचय 1
1.1 इकाई के उद्देश्य 1
1.2 आर्थिक संवृद्धि और विकास 2
1.3 आर्थिक संवृद्धि को प्रभावित करने वाले तत्व 3
1.4 आर्थिक संवृद्धि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के सम्बन्ध में 5
1.5 विकासशील देशों में संरचनात्मक विविधता 7
1.6 विकासशील देशों की विशेषताएं 9
1.7 सारांश 12
1.8 मुख्य शब्दावली 12
1.9 अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न 12
1.10 अपनी प्रगति जानिए के उत्तर 12
1.11 अभ्यास हेतु प्रश्न 13
1.12 आप ये भी पढ सकते है। 13

इकाई – 2 .... **14**
2.0 परिचय 14
2.1 इकाई के उद्देश्य 15
2.2 विकास के माप 15
2.2.1 आय माप 15
2.2.2 न्यूनतम आवश्यकता उपागण 16
2.2.3 PQLI 16
2.2.4 HDI 17
2.2.5 कैपिबिलिटी उपागम 19
2.3 गरीबी, असमानता और विकास 19
2.3.1 गरीबी का माप 19
2.3.2 गरीबी के प्रभाव 21
2.3.3 गरीबी को दूर करने के नीतिगत उपाय 23
2.3.4 असमानता का माप 24
2.3.5 असमानता का प्रभाव 28
2.3.6 असमानता को दूर करने के उपाय 28
2.4 विकास अन्तराल 29
2.5 सारांश 29
2.6 मुख्य शब्दावली 29
2.7 अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न 30
2.8 अपनी प्रगति जानिए के उत्तर 30
2.9 अभ्यास हेतु प्रश्न 30
2.10 आप ये भी पढ सकते है। 31

इकाई – 3 .... **32**
3.0 परिचय 32
3.1 इकाई के उद्देश्य 33
3.2 एडम स्मिथ का सिद्धान्त 33
3.3 रिकार्डो का सिद्धान्त 35
3.4 मार्क्स का सिद्धान्त 39
3.5 शूम्पीटर का सिद्धान्त 42
3.6 सारांश 44
3.7 मुख्य शब्दावली 45
3.8 अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न 45
3.9 अपनी प्रगति जानिए के उत्तर 46
3.10 आप ये भी पढ़ सकते है। 47

इकाई – 4 .... **48**
4.0 परिचय 48
4.1 इकाई के उद्देश्य 49
4.2 हैराड और डोमर के मॉडल – संतुलन में अस्थिरता 49
4.3 नव – क्लासिकी संवृद्धि मॉडल 56
4.3.1 सोलो का संवृद्धि मॉडल 56
4.3.2 मीड का संवृद्धि मॉडल 60
4.4 जॉन राबिन्सन का पूंजी – संचय सिद्धान्त 64
4.5 कैल्डोर का संवृद्धि मॉडल 68
4.6 सारांश 72
4.7 मुख्य शब्दावली 72
4.8 अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न 73
4.9 अपनी प्रगति जानिए के उत्तर 73
4.10 अभ्यास हेतु प्रश्न 74
4.11 आप ये भी पढ़ सकते है। 74

इकाई – 1

इकाई की रूपरेखा

3.10 परिचय

1.1 इकाई के उद्देश्य

1.2 आर्थिक संवृद्धि और विकास

1.3 आर्थिक संवृद्धि को प्रभावित करने वाले तत्व

1.4 आर्थिक संवृद्धि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के सम्बन्ध में

1.5 विकासशील देशों में संरचनात्मक विविधता

1.6 विकासशील देशो की विशेषताएं

1.7 सारांश

1.8 मुख्य शब्दावली

1.9 अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न

1.10 अपनी प्रगति जानिए के उत्तर

1.11 अभ्यास हेतू प्रश्न

1.12 आप ये भी पढ सकते है।

3.10परिचय

वृद्धि और विकास का सम्बन्ध विकसित और विकासशील देशो से है। आर्थिक विकास का क्रमबद्ध अध्ययन एडम स्मिथ से शुरू हुआ है। शुरू में आर्थिक विकास का सम्बन्ध आज के विकसित देशों के साथ था। परन्तु समय के साथ इसका अध्ययन क्षेत्र बदलता रहा है। परन्तु 20वीं शताब्दी के पचास और साठ के दशक में अर्थशास्त्रियों ने अल्पविकसित देशों की समस्याओं की तरफ भी ध्यान देना शुरू कर दिया था। इसके साथ विकसित राष्ट्र भी यह महसूस करने लग गए थे कि ''किसी एक सीान की दरिद्रता या गरीबी अन्य सीान की समृद्धि के लिए खतरा है। ''वृद्धि और विकास को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों में अल्पविकसित देशो के सरकारो ने भी रूचि लेनी शुरू कर दी थी। वृद्धि और विकास के अर्थशास्त्र को कई नामों से जाना जाता है। आर्थिक विकास का क्रमबद्ध अध्ययन करने का श्रेय सबसे पहले एडम स्मिथ को जाता है। इसके बाद बहुत सारे अर्थशास्त्रियों ने विकास के अर्थशास्त्र में अपना योगदान दिया है।

1.1 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है।

- आर्थिक संवृद्धि और विकास की संकल्पनाओं में अन्तर करना
- आर्थिक संवृद्धि को प्रभावित करने वाले कारको का अध्ययन करना
- आर्थिक संवृद्धि के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन करना।
- विकासशील देशों की विशेषताओं का अध्ययन करना।

1.2 आर्थिक संवृद्धि और विकास

संसार में आज के समय सबसे बडी आर्थिक समस्या आर्थिक संवृद्धि और विकास की है। आधुनिक युग में आार्थिक विकास प्रमुख चिंतन का विषय है। मायर एवम् बाल्डविन के अनुसार ''राष्ट्रों की निर्धनता का अध्ययन राष्ट्रों के धन के अध्ययन से भी अधिक महत्वपूर्ण है।'' आर्थिक विकास का महत्व सभी देशो के लिए है लेकिन अल्पविकसित देशों के लिए इसका विशेष महत्व है। क्योकि अल्पविकसित देशों में गरिबी, असमानता, बेरोजगारी जैसे अनेक आर्थिक समस्याएं रहती है। अल्पविकसित देश गरीबी, और बेरोजगारी से छुटकारा पाना चाहते है। आर्थिक विकास की समस्या का एडम स्मिथ ने क्रमबद्ध रूप के अपनी पुस्तक में 1776 में विचार प्रकट किए थें। उसके बाद अनेक अर्थशास्त्रियों ने विकास सम्वन्धी समस्या का अध्ययन किया है। परन्तु केन्ज और इससे पहले के अर्थशास्त्रीयों का ध्यान विकसित देशों की ओर था। अल्पविकसित और अविकसित देशो की तरफ ध्यान 20वीं शताब्दी के 50 के दशक के बाद गया है। आर्थिक समृद्धि औंर विकास की सकल्पनाओं में बहुत सारे अर्थशास्त्रीयों ने अपना योगदान दिया है। शुरूआती दौर मे आर्थिक संवृद्धि और विकास में अन्तर नही बताया जाता था। आर्थिक संवृद्धि को विकास ही माना जाता था। अब आर्थिक संवृद्धि का प्रयोग विकसित देशों के लिए किया जाता है और अल्पविकसित अथवा विकासशील देशों के लिए आर्थिक विकास का प्रयोग किया जाता है।

आर्थिक संवृद्धि को इस प्रकार परिभाषित किया जाता है की आर्थिक संवृद्धि प्रति व्यक्ति आय या उत्पादन में वृद्धि से है। दूसरी तरफ आर्थिक विकास से अभिप्राय प्रति व्यक्ति या राष्ट्रीय आय में वृद्धि के साथ गुणात्मक परिवर्तन जैसे गरिबी को दूर करना, आर्थिक कल्याण में वृद्धि, बेरोजगारी कम करना आदि सें है।

आर्थिक संवृद्धि =़ केवल परिमाणात्मक परिवर्तन (उत्पादन के आकार में वृद्धि)

आर्थिक विकास = परिमाणात्मक तथा गुणात्मक परिवर्तन (उत्पादन में वृद्धि और साथ ही लोगों के कल्याण में वृद्धि)

महबूब उल हक के अनुसार विकास ''गरीबी के विरूद्ध लडाई है।'' गरीबी चाहे किसी भी रूप में हो। आर्थिक विकास को गुणात्मक परिवर्तनो से संबंधित माना जाता है जबकि आर्थिक संवृद्धि को मात्रात्मक परिवर्तनों से संम्वधित माना जाता है स्पाष्ट शब्दों में यह कहा जा सकता है। कि आर्थिक सवृद्धि एक संकुचित धारणा है तथा आर्थिंक विकास एक व्यापक धारणा है। आर्थिक विकास की जो परिभाषाएं दी गई है उनमे महत्वपूर्ण बातें निम्नलिखित है।

1 प्रकिया

आर्थिक विकास को सतत प्रकिया के रूप में देखा जाता है। इसका अर्थ विशेष प्रकार की शक्तियों के कार्यशील रहने के रूप मे लगाया जा सकता है। ये शक्तियां जव एक अवधि तक एक साथ कार्यशील रहती है तो आर्थिक तत्वों मे हमेशा विवर्तन और परिवर्तन होने रहने है। इस प्रक्रिया के कारण राष्ट्रीय आय मे वृद्धि के साथ अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों में भी परिवर्तन होता है।

2 वास्तविक राष्ट्रीय आय

वास्तविक राष्ट्रआय में वृद्धि का होना आर्थिक विकास कहलाता है। यह भी बताया जाता है की आर्थिक विकास तथा वास्तविक राष्ट्रीय आय कें सीधा सम्बन्ध है। जब वास्तविक राष्ट्रीय आय से अभिप्राय मौद्रिक राष्ट्रीय आय की क्रम शक्ति सें है। मौद्रिक राष्ट्रीय आय में कीमत सूचकांक से कटौती करके वास्तविक राष्ट्रीय आय की गणना की जाती है।

इसको निम्नलिखित सूत्र द्वारा भी ज्ञात किया जा सकता है।

$$Y_r = \frac{Ym}{P}$$

Y_r = वास्तविक राष्ट्रीय आय

Ym = मौद्रिक राष्ट्रीय आय

P = कीमत सूचकांक

इस सूत्र द्वारा बताया गया है कि विकास का महत्व या विकास अर्थपूर्ण तभी होता है जब विकास वृद्धि के साथ – साथ कीमत में बढोतरी न हो। अतः यह कहा जा सकता है कि विकास प्रोत्साहन की आवश्यकता शर्त कीमत स्थिरता है।

3 दीर्घकाल

दीर्घकाल विकास का तीसरा तत्व है। अर्थशास्त्रीयों दवारा यह माना गया है कि आर्थिक विकास का सम्बन्ध दीर्घकाल से होता है न कि अल्पकाल से। अन्य शब्दों में विकास की प्रक्रिया एक या दो वर्षों में होने वाले परिवर्तनों से सम्बन्धित न होकर यह लम्बे वर्षो तक चलने वाली प्रक्रिया से है। आर्थिक विकास विशेष घटकों से प्रभावित होने वाला विकास है।

श्रीमती उर्सला हिक्स ने भी माना है की आर्थिक संवृद्धि शब्द का प्रयोग विकसित देशो के लिए किया जाता है क्योकि विकसित देशो मे जो उत्पादन के साधन होते है वो पहले से ही विकसित होते है दूसरी तरफ आर्थिक विकास शब्द का प्रयोग विकासशील देशो के लिए किया जाता है। क्योकि यहां पर अवशोषित साधनो का पूर्ण उपयोग व विकास की सम्भावनाएं अधिक होती है। प्रो0 शूम्पीटर ने बताया है कि आर्थिक संवृद्धि एक सामान्य प्रक्रिया है। इसके लिए विशेष प्रयत्न नही करने पडते है जबकि आर्थिक विकास एक सामान्य और स्वाभाविक प्रक्रिया नही है। आर्थिक विकास के लिए अनेक संरचनात्मक परिवर्तन करने पडते है। आर्थिक विकास संतुलन की अवस्था को बदल देता है।

1.3 आर्थिक संवृद्धि को प्रभावित करने वाले तत्व

आर्थिक संवृद्धि को अनेक कारक कम या ज्यादा प्रभावित करते है। कुछ कारक आर्थिक संवृद्धि को बढाते है और कुछ कारक संवृद्धि को कम करते है। अलग – अलग अर्थशास्त्र की विचारधाराओं के अनुसार आर्थिक संवृद्धि के अलग कारक है। क्लासिकल अर्थशास्त्रीयों के अनुसार पूजीं निर्माण आर्थिक संवृद्धि का सबसे बडा कारक है। अलग – अलग अर्थशास्त्रियों ने अलग – अलग कारकों को आर्थिक संवृद्धि का कारक बताया है।

प्रो0 शुम्पीटर के अनुसार 'नव–प्रवर्तन आर्थिक विकास का आवश्यक तत्व है।

प्रो0 रोस्टोव ने पूंजी निर्माण और श्रम – शक्ति को आर्थिक विकास का कारक माना है।

आर्थिक संवृद्धि को प्रभावित करने वाले कुछ कारक निम्नलिखित है।

3. **प्राकृतिक साधन**

एक देश के प्राकृतिक साधन उस देश के आर्थिक विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। आमतौर पर यह कहा जा सकता है कि जिस देश के पास प्राकृतिक साधन जितनी मात्रा में अधिक होगें उस देश का उतनी ही मात्रा में आर्थिक विकास होगा और शीघ्र होगा। प्राकृतिक साधनों से अभिप्राय किसी देश के उन सभी भौतिक साधनों से है जो देश को प्राकृति की तरफ से उपहार स्वरूप प्राप्त होते है। एक देश की प्रकृति की ओर से उपहार स्वरूप प्राप्त होने वाले कुछ इस प्रकार है जैसे खनिज पदार्थ, वन सम्पति, जल – सम्पदा, जलवायु, वर्षा और प्राकृतिक बन्दरगाह। ये सभी प्राकृतिक साधन देश के आर्थिक विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक साधनों को आर्थिक विकास के लिए कितना महत्व है। इस बारे में रिचार्ड गिल ने लिखा है कि प्राकृतिक साधन भी किसी देश के आर्थिक विकास में जनसंख्या तथा श्रम की पूर्ति की तरह महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। कृषि का विकास उपजाऊ भूमि और पानी के अभाव में नही हो पाता है। बढता औद्योगीकरण कोयला, लोहा, खनिज सम्पदा के कारण अधूरा रह जाता है। प्राकृतिक साधनों के बारे में दो बातों को याद रखना अति आवश्यक है। पहली प्राकृतिक साधन सीमित व निश्चित होते है। माननीय प्रयत्नाों से ही खोजा जा सकता है। परन्तु उनका नव – निर्माण नही किया जा सकता

है। दूसरी ओर यह भी बहुत बडी भूल होगी कि जिस देश में जितने अधिक प्राकृतिक साधन होगें उस देश का विकास उतना ही अधिक होगा। लुइस के अनुसार '' अन्य बाते समान होने पर, लोग अल्प – साधनों की अपेक्षा समृद्ध साधनों का श्रेष्ठतर उपयोग कर सकते है। अल्पविकसित देशों के सामने सबसे बडी समस्या यह है कि उनके प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग पूर्ण रूप से नही होता है। संसाधनों का उचित रूप से प्रयोग न होना देश को अल्पविकसित बना सकता है। जबकि जापान जैसे देश जिनमें बडी कम मात्रा में प्राकृतिक संसाधन है, वे अपनी श्रेष्ठतम तकनीकी की बदौलत कम संसाधनों का भी किफायतपूर्ण प्रयोग करके विकासशील से विकसित देश की श्रेणी में आ जाते है।। इसलिए संसाधनों के उचित प्रयोग के लिए हमारे पास तकनीक भी उच्च स्तर की होनी चाहिए। कम प्राकृतिक संसाधन और उच्च तकनीक के साथ भी आर्थिक विकास संभव हो सकता है।

2. श्रम अथवा मानवीय साधन

मानवीय साधनों की अभिप्राय किसी देश में निवास करने वाली जनसंख्या से है। व्यष्टि अर्थशास्त्र में हमने पढा है कि श्रम और पूंजी उत्पादन के दो महत्वपूर्ण साधन है। परन्तु इन दोनों में से श्रम सबसे महत्वपूर्ण है। उत्पादन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन श्रम को माना गया है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्र एडम स्मिथ ने कहा है कि '' प्रत्येक देश का वार्षिक श्रम वह कोष है जो मूल रूप से जीवन की अनिवार्यताओं व सुविधाओं की पूर्ति करता है।'' एक देश का आर्थिक विकास मानवीय श्रम पर निर्भर करता है। ऐसा माना जाता है कि जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास की पहली आवश्यकता है। लेकिन जब जनसंख्या वृद्धि अधिक तेजी से होती है तो वह आर्थिक विकास के लिए घातक सिद्ध हो जाती है। जब तक जनसंख्या वृद्धि प्रति व्यक्ति उत्पादन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नही डालती तब तक उस को श्रेष्ठतम माना जाता है और जब जनसंख्या वृद्धि प्रति व्यक्ति उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डालना शुरू कर देती है तो उस जनसंख्या वृद्धि को हानिकारक माना जाता है।

मानवीय शक्ति का आर्थिक विकास के लिए सही ढंग से प्रयोग करने हेतु कुछ तत्वों की आवश्यकता होती है। 1. जनसंख्या पर नियंत्रण किया जाए। 2. मानवीय पूंजी निर्माण को बढाया जाए। 3. श्रम शक्ति द्वारा उत्पादकता को बढाया जाए। रिचर्ड गिल के अनुसार ''आर्थिक विकास एक मानवीय उपक्रम है। न की यांत्रिक प्रक्रिया मात्र है। अन्य मानवीयों उपक्रमों की भांति इसका परिणाम सही अर्थो में इसको संचालित करने वाले जन समुदायों की कुशलता गणुों व प्रवृत्तियों पर निर्भर करता है। उत्पादन क्षमता में वृद्धि श्रमिकों की दक्षता के कारण होती है।

आर्थिक विकास के लिए जनसंख्या का उपभोग कई तरीको से कर सकते है। सबसे पहले जनसंख्या पर नियंत्रण होना चाहिए। जनसंख्या पर नियंत्रण करने के लिए परिवार नियोजन कार्यक्रम चलाने चाहिए और जन्म दर को कम करने के उपाय करने चाहिए। इसके साथ में वर्तमान में जो श्रम शक्ति है। उसके दृष्टिकोण में बदलाव करने की जरूरत है। उनमें श्रम – गौरव का महत्व उत्पन्न करने की जरूरत है। इसके लिए उनमें धार्मिक, सांस्कृतिक, संस्थागत और सामाजिक परिवर्तन करने की जरूरत है। श्रमिकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन करने का जिससे उनकी उत्पादकता बढ सके। सबसे अच्छा साधन उनकी अच्छी शिक्षा है। शिक्षा के साथ प्रशिक्षण भी आर्थिक विकास में अपना योगदान देता है। क्योंकि दिन – प्रतिदिन नई – नई तकनीकी उत्पादन प्रक्रिया में शामिल होती रहती है। श्रमिकों और कर्मचारियों को नई तकनीक सीखने की जरूरत होती है। ऐसा करने से इनकी उत्पादकता बढती है। प्रशिक्षण में कमी से भौतिक पूंजी की उत्पादकता काफी कम हो जाती है। प्रशिक्षण और शिक्षा

में निवेश मानव – पूंजी में निवेश है जोकि उत्पादकता को बढाता है। शिक्षण – प्रशिक्षण से आर्थिक विकास की गति तीव्र हो जाती है।

3. पूंजी

प्रो0 कुजनेट्स के अनुसार ''पूंजी व पूंजी का संचय आर्थिक विकास की एक अनिवार्य आवश्यकता है।'' आर्थिक विकास का लक्ष्य तब तक पूरा नही हो सकता जब तक देश में प्र्याप्त मात्रा में पूंजी व पूंजी निर्माण नही हो सकता है। प्रो0 नर्कसे ने कहा है कि आर्थिक विकास की पूर्व शर्त पूंजी निर्माण ही मानी जाती रही है। किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए अत्यन्त मात्रा में पूंजी व पूंजीगत वस्तुओं की आवश्यकता होती है। पूंजीगत वस्तुओं के कारखाने, मशीनरी, भवन, बांध, नहरे, रेले, सडके आदि शामिल होते है। एक देश का आर्थिक विकास उतना ही अधिक होगा जितने कि उस देश के पास साधन होगें। जो देश आज के दिन विकसित कहे जाते है उनके विकसित होने का मुख्य कारण पूंजी निर्माण की ऊंची दर का होना है। पूंजी निर्माण से अभिप्राय पूंजीगत पदार्थो की ऊंची दर का होना है। पूंजी निर्माण से अभिप्राय पूंजीगत पदार्थो में वृद्धि है। अतः यह कहा जा सकता है कि जितनी मात्रा में पूंजीगत पदार्थो में वृद्धि होगी उतनी ही अधिक मात्रा में पूंजी निर्माण होगा। पूंजी निर्माण के कारण गरीब देशों को धनवान बनाया जा सकता है। हम इस निष्कर्ष पर पहूंच सकते है कि किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए पूंजी निर्माण की आवश्यकता है और पूंजी निर्माण पूंजी से ही सम्भव हो सकता है। वास्तविक पूंजी आर्थिक विकास का सबसे बडा निर्धारक तत्व है। आर्थिक संवृद्धि और पूंजी निर्माण में धनात्मक संबंध है। हम पूंजी भंडार का आर्थिक विकास पर प्रभाव देखने के लिए श्रम पूर्ति को स्थिर मान लिया जाता है। पूंजी निर्माण को बढाने के दो महत्वपूर्ण पहलू है एक तो राजकोषीय और दूसरा मौद्रिक। सरकार की राजकोषीय नीति बचतो को बढाने का काम करती है। गैर – आर्थिक संस्थाएं भी बचतों को प्रभावित करती है। पूंजी निर्माण सामाजिक और सांस्कृतिक प्रणाली द्वारा भी प्रभावित होती है। पूंजी निर्माण का दूसरा पहलू मौदिक विस्तार है। यह वित्तीय संस्थाओं की कार्यशैली पर निर्भर करता है। बचत इकट्ठी करने के बाद उसकी निवेश का रूप भी देना पडता है। निवेश का लक्ष्य उच्चतम सामाजिक सीमान्त उत्पादकता होनी चाहिए।

4. तकनीक

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो0 शुम्पीटर ने भी माना है कि तकनीकी प्रगति किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए मुख्य घटक है। तकनीकी ज्ञान के कारण कम लागत पर वस्तुएं उत्पन्न की जा सकती है और नई वस्तुओं का उत्पादन भी सम्भव होता है। नये – नये नवप्रवतनों द्वारा भी उत्पादन को बढा कर आर्थिक विकास प्राप्त किया जा सकता है। तकनीकी पिछडेपन के कारण आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न होती है। उत्पादन करने के लिए अल्पविकसित देशों में तकनीक ठीक ढंग से विकसित नही हो पाती जिसके कारण आर्थिक विकास में रूकावट आती है। शोध कार्य के लिए भी तकनीक की आवश्यकता होती है। पूंजी प्रधान तकनीक का प्रयोग करके देश के आर्थिक विकास को बढावा दिया जाता है।

1.4 आर्थिक संवृद्धि ऐतिहासिक परिपेक्ष्य के सम्बन्ध में

अल्पविकसित या विकासशील देशों के बहुत से लोग सोचते है कि पश्चिमी देशों की तरह उनका देश भी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का रास्ता अपनाता तो उनका देश भी आज विकसित देश होता। परन्तु इन तर्क के पीछे कोई आधार नही है। परन्तु फिर भी विकसित देशों की विकास यात्रा का अध्ययन करना अल्पविकसित देशों के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है। टोडारो और स्मिथ ने आठ अलग विशेषताएं बताई है। जो की विकसित और विकासशील देशों से मेल नही खाती है। जिससे की विकसित देशों के विकास मॉडल को उसी रूप मे। विकासशील देश नही अपना सकते है। उन्हें संशोधित करने की आवश्यकता हो सकती है।

1. साधन उपलब्धता

साधन की उपलब्ध्यता विकासशील देशो मे।विकसित देशों की तुलना में कम है। जब विकसित देशों ने 200 वर्ष पहले विकास यात्रा शुरू की थी तो उनके पास आप के विकासशील देशों की तुलना में ज्यादा साधन थे। साधन उपलब्धता में प्राकृतिक साधनों के साथ मानवीय साधन भी आते है। कई सारे विकासशील देशों में प्राकृतिक साधन भी प्रचुर मात्रा में है फिर भी वे अल्पविकसित है। इसके पीछे कारण मानवीय पूंजी। मानवीय पूंजी में शिक्षा और स्वास्थ्य आते है। शिक्षा का स्तर अल्पविकसित देशों में कम होता है। जिस कारण से वे उपलब्ध प्राकृतिक साधनों का भी उचित उपयोग नही कर पाते है। तकनीकी ज्ञान भी अल्पविकसित देशों में कम होता है। इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि प्राकृतिक साधनों का विकास मानवीय पूंजी का निर्भर करता है। क्योंकि मानवीय पूंजी की प्राकृतिक साधनों का उचित उपयोग कर सकती है। शिक्षा का स्तर ऊंचा उठाने से अल्पविकसित देशों में उपलब्ध प्राकृतिक साधनों का उपभोग ज्यादा किफायतपूर्ण होने लग जाएगा।

2. प्रति व्यक्ति आय का कम होना

प्रति व्यक्ति आय का स्तर अल्पविकसित देशों में कम होता है। इन देशों में प्रति व्यक्ति आय का स्तर उन विकसित देशों से भी कम जब उन्होनें अपनी विकास यात्रा शुरू की थी। अल्पविकसित देशों में लगभग 75 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा से नीचे रह रहे है। परन्तु विकसित देशों में 19वीं शताब्दी में भी इतनी गरीबी नही रही है। अल्पविकसित देशों में साधन कम होते हुए असमानता का स्तर भी बहुत अधिक है।

3. जलवायु अन्तर

लगभग सभी विकसित देश टेम्परेट क्लाइमेट जोन में आते है। जबकि अल्पविकसित देश ज्यादातर उष्ण क्षेत्रों में आते है। ज्यादा उष्ण क्षेत्रों में कर्मचारियों का स्वास्थ्य अच्छा नही होता है। यह जलवायु उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। ऐसा होने से श्रम की उत्पादकता कम हो जाती है। ऐसी जलवायु में मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी कम हो जाती है। जिससे कृषि का उत्पादन भी कम हो जाता है। जिससे कृषि का उत्पादन भी कम हो जाता है। उष्ण क्षेत्रों में ज्यादा बारिश होने की वजह से परिवहन व्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव पडता है। इसलिए उष्ण क्षेत्र भी अल्पविकसित देशों की समस्याओं की एक जड है।

4. जनसंख्या

जनसंख्या के आकार और उसकी वृद्धि दर का भी आर्थिक विकास पर प्रभाव पडता है। विकासशील देशों के आर्थिक विकास में जनसंख्या का प्रतिकूल प्रभाव पडा है। परन्तु विकसित में कभी भी जनसंख्या का उनके आर्थिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव नही पडा है क्योंकि जब आर्थिक विकास विकसित देशों में शुरू हुआ था तो विकसित देशों में मृत्यु दर अधिक थी। जिसकी वजह से वहां जनसंख्या विस्फोट की स्थिति नही आई। परन्तु औद्योगीकरण के साथ मेडिकल सुविधाओं का भी विस्तार हुआ जिसकी वजह से मृत्यु दर काफी कम हो गई। इस वजह से वहां पर जनसंख्या वृद्धि की दर बढ गई। परन्तु शिक्षा और स्वास्थ्य की अच्छी सुविधाओं से उपलब्ध पूंजी का प्रयोग अच्छे से होने लग गया। इसलिए जनसंख्या की वृद्धि विकसित देशों के लिए वरदान साबित हुआ। जबकि अल्पविकसित देशों में जनसंख्या का आकार बढा है। क्योंकि अल्पविकसित देशों में अच्छी स्वास्थ्य सुविधाओं से मृत्यू दर में कमी आ गई थी। परन्तु शिक्षा के अभाव में वहां जन्म दर में कमी नही आई। इसलिए अल्पविकसित देशों में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति आ गई है। जिसकी वजह से जनसंख्या का विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड रहा है।

5. अतर्राष्ट्रीय प्रवास

हम जानते है कि विकासशील देशों में कृषि में जरूरत से अधिक मजदूर काम करते है। इसको हम श्रम आधिक्य कहते है। हम यह भी जानते है कि खेती में तकनीकी प्रगति के लिए श्रमिकों का दूसरे क्षेत्रों में हस्तान्तरण करने की जरूरत है। विकसित देशों ने अपने विकासशील दौर न अपने श्रमिकों का दूसरे देशों में हस्तान्तरण किया था। दूसरा यूरोप में अकाल ने भी किसानों और श्रमिकों का सीानान्तरण किया था। जिस वजह से यूरोप में खेती के

साधनों पर जो आधिक्य आया हुआ था वो कम हो गया था। दूसरा अमेरिका में खाली पडे साधनों का अच्छे से प्रयोग हो गया परन्तु वर्तमान में स्थिति बदल गई है। आज के दिन बहुत सारे माइग्रेशन के नियम है जिसकी वजह से श्रमिक एक देश से दूसरे देश में नही जा सकते है।

6. अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्धों के फायदे

अन्तर्राष्ट्रीय बाजार ने यूरोप और उत्तरी अमेरिका का सदियों तक फायदा पहुंचाया है। इन देशों ने व्यापार के लिए विदेशी व्यापार को ढूंढना शुरू किया था। इस विदेशी व्यापार ने उनके औद्योगिक विकास की सहायता पहुंचायी थी। विदेशी व्यापार ने अल्पविकसित देशों की संपति को विकसित देशों में पहुंचाया था। इस बारे में दादा भाई नारौजी ने अपनी पुस्तक लिखी है हालांकि कुछ उद्योग ऐसे भी है जो विकसित देशों ने अपनी उपनिवेशों में लगाए थे। लेकिन ये उद्योग भी विकसित देशों ने अपने उद्योगों को गति देने के लिए लगाए थे।

7. तकनीकी अनुसंधान

तकनीकी अनुसंधान के कुल खर्चे का 98 प्रतिशत खर्चे विकसित देश करते है। इसलिए विकसित देशों में तकनीकी ज्ञान का भंडार ज्यादा है। तकनीकी ज्ञान उपलब्ध साधनों की उत्पादकता बढा देता है। विकासशील देश उच्च तकनीक का आयात करते है। परन्तु उच्च तकनीक का आयात करना खर्चे को काफी बढा देता है और साथ ही विकसित देशो की तकनीक विकासशील देशों के साथ अनुपयुक्त होती है। ऐसा करने से तकनीकी द्ववैता आ जाती है।

8. स्थिरता और राजनीतिक संस्थाओं की लोचशीलता

औद्योगिक क्रान्ति से पहले, पश्चिम देश राजनीतिक रूप से स्वतन्त्र थे। परन्तु अल्पविकसित देशों ने स्वतन्त्रता काफी समय बाद हासिल की है।

1.5 विकासशील देशों में संरचनात्मक विविधता

विकास के अर्थशास्त्र में तीसरी दूनिया के गरीब देशों को कई नामो से जाना जाता है। इनको अर्थशास्त्री पिछडे हुए, अल्पविकसित, कम विकसित और विकासशील देशों के नाम से जानते है। अर्थशास्त्री प्रो0 जगदीश भवगती ने बताता है कि यह श्रोता और व्याख्या करने वालों पर निर्भर करता है कि वह किस नाम से इन देशों को बुलाता है। विश्व बैंक की वार्षिक रिपोर्ट विश्व विकास रिपोर्ट में आय के स्तर के अनुसार उनकी अल्प आय अर्थव्यवस्था, अल्प मध्यम आय अर्थव्यवस्था, उच्च मध्यम आय अर्थव्यवस्था और उच्च आय अर्थव्यवस्थाओं में विभाजित किया है। इसी तरह संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की मानव विकास रिपोर्ट में सभी देशों को रैक दी जाती है। देशों को रैक देने के लिए मानव विकास सूचकांक तैयार किया जाता है। मानव विकास सूचकांक को तैयार करने मे।प्रति व्यक्ति आय, शिक्षा और स्वास्थ्य को शामिल करते है। यह सूचकांक बताता है कि अल्पविकसित देशों में भी आर्थिक स्थिति अलग – अलग हो सकती है। हम अल्पविकसित देशों में भी विभिन्न देशों को अलग – अलग रैकिंग दे सकते है। आय के स्तर की गणना से हम मान सकते है की इन सब में आय का स्तर कम होता है। परन्तु इनके प्राकृतिक संसाधनों, जनसंख्या, आर्थिक स्थिति, मानव विकास, राजनैतिक और सामाजिक संरचना की दृष्टि से ये सभी अलग – अलग हो सकती है।

अल्पविकसित देशों में निम्न प्रकार से संरचनात्मक विविधता हो सकती है।

1. आकार और आय का स्तर

भौगोलिक क्षेत्र, जनसंख्या का आकार और आय का स्तर विकास को प्रभावित करता है। किसी देश का बडा क्षेत्र होने पर देश के प्राकृतिक संसाधन ज्यादा हो सकते है। इसी तरह ज्यादा जनसंख्या होने पर मांग का स्तर भी ज्यादा होगा और जिससे बाजार का आकार भी बढ जाता है। भारत, चीन, ब्राजील जैसे जनसंख्या के लिहाज से बडे देशों में विकास की ज्यादा संभावनाएं है। छोटे देश टोगो, बुरून्डी, हान्डुराज आदि में बाजार का छोटा आकार

होने के कारण उन देशो में विकास का स्तर भी कम होता है। परन्तु कुछ छोटे देश, जैसे की मध्य एशिया के देशों मे।पैट्रोलियम का ज्यादा उत्पादन होने के कारण वहां विकास का स्तर ज्यादा होता है। परन्तु दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के देश में जनसंख्या कम है और संसाधन बहुत बडी मात्रा में है। परन्तु फिर भी संसाधनों का उचित मात्रा में प्रयोग नही हो पा रहा है। इसलिए इन महाद्वीपों के देशो में संसाधनो के होते हुए भी पिछडापन है।

2. ऐतिहासिक पृष्टीूमि

सभी विकासशील देशों की ऐतिहासिक पृष्टीूमि समान नही है। इनमें से ज्यादातर देश पश्चिम यूरोपीय देशों के औपनिवेश रहे है। लेटिन अमेरिका के देशों को ज्यादा पहले से स्वतन्त्रता मिली हुई है। इसलिए वहां अन्य एशिया और अफ्रिका के देशो की तुलना में वहां विकास का स्तर ऊंचा है। एशिया महाद्वीप में भी भारतीय उपमहाद्वीप और दक्षिण – पूर्वी देशों में औपनिवेशिक शोषण ज्यादा हुआ है। इन सभी देशों को दूसरे विश्व युद्ध के बाद स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है। जबकि जापान में जोकि औपनिवेशिक शोषण से अछूता रहा था। वहां पर विकास का स्तर अन्य औपनिवेशिक एशिया के देशों से ऊंचा है। इसलिए हम निष्कर्ष निकाल सकते है कि जो किसी देश के कभी उपनिवेश नही रहे वहां पर विकास का स्तर ऊंचा है और जहां पर औपनिवेशिक शासन ज्यादा समय रहा है वहां विकास कम हुआ है।

3. भौतिक और मानव संसाधन

1930 के दशक तक विकास और अल्पविकास को एक देश में उपलब्ध भौतिक संसाधनों के रूप में परिभाषित करते थे। परन्तु अगर केवल भौतिक साणनो से ही विकास निधारित होता तो लेटिन अमेरिकन देश और अफ्रीकन देश सबसे ज्यादा विकसित देश होते। हम यह तो कह सकते है की विकास के लिए भौतिक साधन आवश्यक है। परन्तु यह नही कह सकते की भौतिक साधन होने से अपने आप विकास की गाडी चल पडेगी। भौतिक संसाधनो का प्रयोग मानवीय पूजी पर निर्भर करता है। यदि भौतिक संसाधनो का प्रयोग करने वाली कुशल मानवीय पूंजी नही है तो आर्थिक विकास पर इसका ऋणात्मक प्रभाव पडता है और यदि मानवीय पूंजी दक्ष है और भौतिक संसाधन न्यूनतम मात्रा में है तो भी वहां विकास की संभावनाएं निकल सकती है। जापान जैसे देश मे जहां भौतिक संसाधनो की अल्प मात्रा थी। उसने दक्ष मानवीय पूंजी के बल पर बहुत कम समय मे आर्थिक विकास कर दिखाया।

4. आर्थिक नियोजन और सार्वजनिक व निजि क्षेत्र

सभी अल्पविकसित देशों ने एक ही प्रकार की आर्थिक प्रणाली नही अपनाई। चीन, वियतनाम, क्यूबा जैसे देशो ने कई वर्षो तक समाजवादी प्रणाली अपनाई और आर्थिक नियोजन पर काम किया था। हम यह कह सकते है की उपरोक्त सभी देशों ने निजि क्षेत्र पर कोई ध्यान नही दिया था। इन सभी देशों ने आर्थिक नियोजन का रास्ता तो अपनाया किन्तु सभी देशों में आर्थिक नियोजन भी एक ही प्रकार का नही था। नियोजन का सोवियत मॉडल सभी अल्पविकसित देशों में लागु नही हुआ था। ज्यादातर अल्पविकसित देशों में सार्वजनिक और निजि क्षेत्र दोनो की भूमिका पर जोर दिया गया था। इस तरह की आर्थिक प्रणाली को मिश्रित अर्थव्यवस्था कहते है। इनमें से ज्यादातर देशों ने लोकतांत्रिक आर्थिक नियोजन की प्रणाली अपनाई जिसमें भारत भी शामिल था। लेटिन अमेरिका में US के प्रभाव से वहां पर सार्वजनिक क्षेत्र को कम महत्व दिया गया था। इस प्रकार प्रत्येक देश ने अलग – अलग आर्थिक प्रणाली को अपनाया था।

5. रोजगार की सरंचना

एक सामान्य धारणा अल्पविकसित देशों में रोजगार के बारे में यह है कि यह सभी देश कृषि प्रधान है। परन्तु यह कथन पूर्ण रूप से सत्य नही है। क्योंकि इन देशों में रोजगार में कृषि क्षेत्र का योगदान अधिक तो है, लेकिन बराबर – बराबर नही है। विश्व विकास रिपोर्ट 2008 के अनुसार, कुछ अल्प आय स्तर वाले देशों में कृषि क्षेत्र का रोजगार में भाग लगभग 80 प्रतिशत है। परन्तु इनमें से भी नाइजीरिया और इन्डोनेशिया में 1994 में यह 55 प्रतिशत था। मध्यम आय देशों में कृषि पर निर्भरता कुछ कम है। ब्राजिल में 1994 में केवल 31 प्रतिशत श्रम बल कृषि क्षेत्र

पर निर्भर था। जबकि मैक्सिकों में यह 28 प्रतिशत, दक्षिण कोरिया में 21 प्रतिशत और वेनेजुएला में यह केवल 16 प्रतिशत है। मलेशिया में 1981 में 41 प्रतिशत श्रम बल कृषि पर आधारित था परन्तु 1990 में यह भाग केवल 27 प्रतिशत बच गया था। इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि केवल एक अल्पविकसित देश दूसरे अल्पविकसित देश से ही भिन्न नही है बल्कि एक देश में ही बहुत कम समय में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे है।

6. बाहरी निर्भरता

सभी अल्पविकसित देशों की निर्भरता विकसित देशों के साथ अलग – अलग है। यह निर्भरता भी आर्थिक विकास का कारण बनती है। जितनी निर्भरता किसी देश की दूसरे देश के साथ होती है उस देश की विकास करने की सम्भावना उतनी ही कम हो जाती है।

राजनैतिक संरचना

किसी भी देश की आर्थिक संरचना का अध्ययन करने से पहले राजनैतिक संरचना का भी अध्ययन कर लेना चाहिएए, क्योंकि राजनैतिक संरचना आर्थिक संरचना को भी प्रभावित करती है। राजनीति संरचना भी एक देश को, दूसरे देश से अलग करती है। अल्पविकसित देशों में राजनीतिक ढांचा निजी स्वार्थी और विशिष्ट वर्ग द्वारा प्रभावित होता है। अमेरिका में बडे जमींदार, अफ्रीका में नेता और बडे सरकारी अफसर, खाडी देशों के तेल के शेख, एशिया में उद्योगपति यह दिखाते है कि विकासशील देशों में इन ग्रुप का साम्राज्य होता है।

3.10 विकासशील देशों की विशेषताएं

विकासशील देशों की आपस में विभिन्नताएं होती है जैसा कि हमने पिछले अध्याय में किया है। परन्तु फिर भी कुछ विशेषताएं ऐसी होती है जो की सभी अल्पविकसित देशों में पाई जाती है। जैसे की अल्पविकसित देशों में पूंजी निर्माण कम होता है और कृषि आधारित अर्थव्यवस्था होती है। अल्पविकसित देशो की कुछ सामान्य विशेषताएं इस प्रकार है।

1. प्रति व्यक्ति आय का नीचा स्तर

अल्पविकसित में जनसंख्या अधिक और संसाधनों की कमी के कारण प्रति व्यक्ति आय कम होती है। GNP प्रति व्यक्ति 2016 में भारत में $ 1680 थी। भारत में एक तिहाई जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवन निर्वाह कर रही है। संसार में विकसित और विकासशील देशों में आय की असमानता बहुत अधिक है और यह अन्तराल लगातार बढने लग रहा है। विश्व बैक के 2018 के आंकडों के अनुसार विकसित देशों में औसत प्रति व्यक्ति GNP $ 44166 थी जबकि अल्पविकसित देशों में यह केवल $ 790 थी। परन्तु ऐसा नही है की सभी अल्पविकसित देशों में उतनी कम प्रति व्यक्ति GNP है। प्रति व्यक्ति आय के साथ – साथ विकसित और अल्पविकसित देशों में आय अन्तराल पाया जाता है। यदि वृद्धि हुई हो तो यह अन्तराल और ज्यादा बढ जाता है। उदाहरण के तौर पर यदि विकसित देश नार्वे में 1 प्रतिशत की वृद्धि होती है तो नार्वे की प्रति व्यक्ति आय में 800 डॉलर की वृद्धि होगी जबकि सबसे निर्धन देश बुरूडी में यह 7 गुणा कम होगी। इसका अर्थ यह हुआ कि इस आय की वृद्धि को समाप्त करने के लिए बुरून्डी को 700 प्रतिशत की वृद्धि करनी पडेगी। साथ ही साथ आय की असमानता भी बढती जा रही है। यह असमानता केवल प्रति व्यक्ति आय में ही न होकर मानव विकास की सूचकांक जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य में भी है। प्रो0 कुरिहास के अनुसार, '' प्रति व्यक्ति आय का निम्न स्तर एक अल्प – विकसित देश की आधारभूत विशेषता है।'' विश्व बैक की 2006 की रिपोर्ट के अनुसार संसार की 70 प्रतिशत जनसंख्या अल्पविकसित देशों में निवास करती है जबकि इस जनसंख्या की विश्व की कुल आय का केवल 20 प्रतिशत भाग ही प्राप्त होता है।

2. सामान्य गरीबी

अल्पविकसित देशों में सामान्य गरीबी होती है। अल्पविकसित देशों में कम प्रति व्यक्ति आय के साथ असमानता भी अधिक होती है। जिसके कारण गरीबी और अधिक होती है। आय की असमानता के साथ गरीबी को कम किया जा सकता है। गरीबी का मापने के प्रयत्न किए जाते रहे हैं विश्व बैकं के अनुसार गरीबी रेखा प्रति दिन

प्रति व्यक्ति $ 1.90 है। भारत में इस परिभाषा के अनुसार 50 प्रतिशत से अधिक लोग गरीबी रेखा से नीचे रह रहे है। इन देशो में लोग अधिकतर अनाज खाते है। इसके अलावा खूराक में मांस, मछली और दूध से बने पदार्थो का अभाव होता है। उदाहरण के लिए भारत मे प्रति व्यक्ति प्रति दिन अनाज का उपयोग 430 ग्राम है जबकि विकसित देशों मे यह 200 ग्र्रम से भी कम है। इन देशो मे बाकि उपयोग के अलावा घास फूस की झोपडी तथा नाममा़त्र के वस्त्र होते है। विकासशील देशो की ज्यादातर आबादी अल्प पोषण तथा खराब स्वास्थ्य से ग्रसित है। संयुक्त राष्ट्र खाद और कृषि संगठन के एक अनुमान के अनुसार 50 प्रतिशत से अधिक बच्चे कुपोषण के शिकार है। लगभग 1 बिलियन लोगो मे प्रोटीन की कमी पाई जाती है।

3. कृषि आधारित अर्थव्यवस्था

अल्पविकसित देशों में 70 प्रतिशत से अधिक लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते है। उनका प्रमुख व्यवसाय कृषि होता है। भारत में आधी से अधिक जनसंख्या कृषि कार्यो में लगी हुई है। अल्पविकसित देशों में जरूरत से ज्यादा लोग कृषि में लगे होते है। यह प्रतिशत विकसित देशों में 1 से 5 प्रतिशत के बीच होता है। कृषि में इतनी ज्यादा जनसंख्या का लगा होना किसी देश के अल्पविकास को बताता है। अर्थशास्त्री हार्वे लिबिन्सटीन ने बताया कि अल्पविकसित देश मुख्य रूप से कृषि पर आधरित होते है। इन देशों में लगभग 30 से 75 प्रतिशत जनसंख्या कृषि क्षेत्र पर निर्भर करती है। परन्तु इस क्षेत्र में ज्यादा प्रतिशत लोग काम पर लगे है और आय का प्रतिशत इनकी जेब में जाता है। इसलिए ज्यादा लोग जो कृषि में लगे हुए है वह केवल जीवन निर्वाह के लिए खेती करते है। तकनीकी रूप से भी विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों की कृषि पिछडी हुई है। रासायनिक उर्वरको और उन्नत बीजों का प्रयोग अल्पविकसित देशों में विकसित देशों की तुलना में कम होता है। इसके साथ में जोतो का आकार छोटा होता है और जा उपलब्ध जोत होती है वह भी विखण्डीत होती है। ऐसा होने से किसान की फसल उगाने की लागत बढ जाती हे। अल्पविकसित देशों में भूमि पर कार्य करने वाले ज्यादातर लोग भूमि को पट्टे या किराये पर लेते है। इनका भूमि पर कोई अधिकार नही होता है। इसलिए इनका उत्पादन बढाने का कोई प्रलोभन नही होता है। वाणिज्य खेती इन देशों में कम प्रतिशत भूमि पर होती है। इन देशों में कृषि में घटते प्रतिफल का नियम लागू होता है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि भूमि की मात्रा स्थिर होती है।

एक और समस्या कृषि क्षेत्र के लिए यह है कि कृषि पदार्थो की आय लोच कम होती है। इसका प्रभाव यह पडता है कि जब इन पदार्थो की कीमत पूर्ति बढने के कारण गिर जाती है तो कीमत कम होने के कारण इन पर होने वाला व्यय भी कम हो जाता है। व्यय के कम होने से किसानों की आय भी कम हो जाती है।

4. निर्यात में प्राथमिक वस्तुओं की प्रधानता

अल्पविकसित देशों के निर्यात में प्राथमिक वस्तुएं होती है और आयात में मशीनरी और उपभोक्ता वस्तुएं होती है। निर्यातों पर अत्यधिक निर्भरता से इनका विकास प्रभावित होता है। निर्यात पर निर्भरता होने से अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों का विकास नही हो पाता है। ऐसा होने से असंतुलित विकास की स्थिति जन्म ले लेती है। कच्चे माल का निर्यात करने से प्राकृतिक संसाधनों का अत्याधिक मात्रा में दोहन होता है। प्रो0 कुरिधरा के अनुसार, ''एक अल्प – विकसित अर्थव्यवस्था की प्रबल आयात – आवश्यकताओं की तुलना में निर्बल निर्यात – क्षमता उसकी ब्रहा ऋणग्रस्तता के रूप में प्रकट होती है। ''इन देशों में कुल उत्पादन से निर्यात उत्पादन का अनुपात लगभग 20 प्रतिशत होता है। इन देशों की विदेशी विनिमय कमाने के अधिकांश भाग के लिए एक या दो वस्तुएं ही होती है। जैसे की वैन्जुएला अपने निर्यात के 92 प्रतिशत के लिए तेल पर निर्भर है, कोलम्बिया काफी पर निर्भर है, चिली तांबे पर निर्भर है और होण्डरास अपनी कमाई के लिए केलों पर निर्भर है। इस प्रकार की निर्भरता इनके विकास पर ऋणात्मक प्रभाव डालती है। विश्व बैंक के एक आंकडे के अनुसार अल्पविकसित राष्ट्र संसार के 80 प्रतिशत साधनों, ज्यादातर कच्चे माल का निर्यात करते है। यह भी देखने में आया है कि अल्पविकसित देश ज्यादातर प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थो का निर्यात करते है। ऐसा करने से अल्पविकसित देशों के लोगों को कम प्रोटीन मिल पाता है,

जिसकी वजह से पोषणयुक्त आहार की कमी हो जाती है। इसलिए ऐसा होने से उनके शरीर पर भी कुप्रभाव पडता है।

5. जनसंख्या का दवाब

अल्पविकसित देशों में जनसंख्या वृद्धि दर तीव्र होती है। सामान्य रूप से हम यह कह सकते है कि इन देशों में जनसंख्या की औसत वार्षिक वृद्धि दर 2 से 3 प्रतिशत के लगभग रही है। पिछले पांच दशकों में दक्षिण ऐशिया, अफ्रीका और लेटिन अमेरिका में जनसंख्या बहुत तेजी से बढी है। अल्पविकसित देशों में केवल चीन ही ऐसा देश है जिसने जनसंख्या की 2 प्रतिशत से घटाकर लगभग 1 प्रतिशत किया है। जनसंख्या वृद्धि के बारे में प्रो0 किनलेसाइड ने लिखा है कि, '' बम्ब की तुलना में गर्भाशय भले ही मन्दगामी है परन्तु उसका प्रभाव उतना ही भयंकर सिद्ध होता है। भस्मीकरण के बजाय, श्वास घुटन मानव – जीवन का ही अन्त कर सकता है।'' विश्व विकास रिपोर्ट 1989 के अनुसार 1980 से 1987 के बीच विकसित और विकासशील देशों की वृद्धि दरों का अन्तर लगाभग 3 गुणा था। अल्पविकसित देशों में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति पाई जाती है। जनसंख्या विस्फोट मे।जनसंख्या बहुत ही तीव्र गति से बढने लगती है। जनसख्या विस्फोटकी स्थिति के पीछे निम्न मृत्यु दरे और ऊंची जन्म दरे बताई जाती है। क्योंकि अल्पविकसित देशों में पहले की तुलना में विकास होने से बिमारियों का उपचार होने लगा है। ऐसा होने से मृत्यू दरों में कमी आई है। परन्तु जन्म दरे ऊंची ही बनी हुई है। अल्पविकसित देशों की अपेक्षा विकसित देशों में जीवन प्रत्याशा अधिक होती है। भारत में साधारण नागरिकों की औसत आयु 68.2 वर्ष है। जबकि जापान जैसे विकसित देश में यह औसत आयु 85 वर्ष है। विकासशील देशों की कम औसत आयु के पीछे पोषण आधार को अल्प मात्रा में उपलब्ध होना बताया जाता है। अल्पविकसित देशों में विकसित देश की तुलना में जनसंख्या धनत्व भी अधिक पाया जाता है।

6. अशोषित प्राकृतिक साधन

प्रो0 के0 के0 कुरीहरा ने कहा है '' एक अर्थव्यवस्था जिसके पास अधिक प्राकृतिक साधन है परन्तु उनको विकसित करने हेतु आवश्यक तकनीक एवम् पूंजी नही है वह उतनी ही गरीब है जितनी साधनों के बिना अर्थव्यवस्था'' इसका अर्थ यह है कि आर्थिक विकास को प्राकृतिक संसाधनों की मात्रा से नही मापा जाता है बल्कि यह प्राकृतिक संसाधनों के क्रमबद्ध प्रयोग पर निर्भर करता है। कम प्राकृतिक संसाधनों से भी कोई देश प्रगति कर सकता है। यह अन्तर उस देश की भौतिक और मानव पूंजी पर निर्भर करती हैं जापान जैसा देश कम प्राकृतिक संसाधन होते हुए भी विकसित भौतिक और मानवीय पूंजी के बल पर विकसित देश बन गया। जबकि अफ्रीका जैसा देश अधिक प्राकृतिक संसाधन होते हुए भी अल्पविकसित बना हुआ है।

साधनों के अल्प प्रयोग के निम्न कारण है।

1 प्राकृतिक साधनों तक पहूंच न पाना

2 पूंजी की अल्प मात्रा

3 निम्न तकनीक

4 सहायक तत्वों की ऊंची लागत

5 उत्पादन पर एकाधिकारक प्रतिबन्ध

6 बाजार का छोटा आकार

किसी भी देश में प्राकृतिक साधनों की कम मात्रा तो हो सकती है लेकिन ऐसा बिल्कुल अभाव नही हो सकता है। हम यह कह सकते है कि अल्पविकसित देशों में तकनीक सामाजिक और आर्थिक संगठन ऐसा नही होता है की जिससे अपने प्राकृतिक साधनों की दुर्लभता को पार करने में सफल नही हो सके। जैसे की अफ्रीका और दक्षिणी

अमेरिका के जंगलों की खोज और अनुसंधान नही हो सका है। इस प्रकार अल्पविकसित देशों में साधन तो होते है लेकिन तकनीकी ज्ञान के अभाव में, बाजार का छोटा आकार, मानवीय पूंजी के अभाव में उनका उपयोग नही हो पाता है।

7. पूंजी निर्माण की नीची दर

पूंजी निर्माण किसी भी देश के आर्थिक विकास की पहली शर्त है। क्योंकि पूंजी होने से ही उपलब्ध संसाधनों का उचित दोहन सम्भव हो सकता है। अल्पविकसित देश गरीबी के दुःश्चक्र में फंसे रहते है। पूंजी का अभाव दो तरह से होता हैं एक तो निम्न प्रति व्यक्ति पूंजी उपलबधता और दूसरा पूंजी निर्माण की निम्न दर। पूंजी निर्माण बचत पर निर्भर करता है। जबकि प्रति व्यक्ति आय कम होने के कारण बचते भी कम होती है। इस प्रकार विकास के लिए अपेक्षित निवेश का स्तर भी कम होता है। प्रो0 नर्कसे ने कम बचत का कारण प्रदर्शन प्रभाव बताया है। प्रो0 लुईस ने बताया है कि विकास के लिए उपयुक्त निवेश की दर 16 से 20 प्रतिशत होनी चाहिए। जबकि इन देशों में यह दर लगभग 10 प्रतिशत होती है। प्रो0 हैबरलर लिखते है '' कोई आश्चर्य नही कि दरिद्र और पिछडी हुई अर्थव्यवस्थाएं जब जागती है और जल्दी से विकास का निश्चय कर लेती है और अधिक विकसित अर्थव्यवस्थाओं तक पहूंच जाती है तो अधिक व्यय करने को प्रेरित होती है और अपने साधनों से बढकर रहती है। ''पूंजी निर्माण की कम दर का कारण केवल आर्थिक न होकर सामाजिक और राजनैतिक भी होता है। ऐसे देशों में बचतों के कम होने का कारण अत्याधिक असमानताएं भी है। जिन लोगों की आय अधिक होती है वे अपनी आय को अनुत्पादक काम पर लगा देते है जिससे की बचत कम हो पाती है। इस प्रकार अल्पविकसित देशों में न तो ज्यादा आय प्राप्त करने वाले अधिक मात्रा में बचत कर पाते है और न ही कम आय प्राप्त करने वाले बचत कर पाते है। इस प्रकार अल्पविकसित देशों में पूंजी निर्माण की दर कम ही रहती है।

1.7 सारांश

इस इकाई में हमने आर्थिक संवृद्धि को प्रभावित करने वाले कारको और अल्पविकसित देशों की विशेषताओं के बारे में पढ़ा है। आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले असंख्य कारक है। परन्तु पूंजी, श्रम और तकनीकी का प्रभाव आर्थिक संवृद्धि पर सबसे ज्यादा पडता है। पूंजी, श्रम और तकनीकी उत्पादन फलन के भी कारक होते है। श्रम, पूंजी का उत्पादन पर सबसे ज्यादा प्रभाव पडता है। अगले भाग में हमने अल्पविकसित देशों की विशेषताएं और उनमें आपसी अन्तर के बारे में पढा है। कुछ विशेषताएं सभी अल्पविकसित देशों में समान रूप से दिखाई देती है जबकि कुछ विशेषताएं प्रत्येक अल्पविकसित देशों में अलग – अलग पाई जाती है। जैसे की जनसंख्या कुछ देशों में ज्यादा मिलती है जबकि कुछ देशों में कम पाई जाती है।

1.8 मुख्य शब्दावली

- **आर्थिक संवृद्धि –** आर्थिक संवृद्धि से अभिप्राय प्रति व्यक्ति आय या उत्पादन में वृद्धि से है।
- **आर्थिक विकास** – आर्थिक विकास से अभिप्राय प्रति व्यक्ति या राष्ट्रीय आय में वृद्धि के साथ गुणात्मक परिवर्तनों जैसे – गरीबी को दूर करना, आर्थिक कल्याण में वृद्धि से है।
- **राष्ट्रीय आय** – राष्ट्रीय आय अन्तिम वस्तुओं ओर सेवाओं का एक वित्त वर्ष में कुल मुल्य है। इसमें मध्यवर्ती वस्तुओं का उपभोग हटा लिया जाता है।

1.9 अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न

1. आर्थिक संवृद्धि से अभिप्राय .... में वृद्धि से है।
2. आर्थिक विकास प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के साथ .... से है।
3. आर्थिक विकास एक .... है।

4. आर्थिक विकास का सम्बन्ध .... से है।

1.10 अपनी प्रगति जानिए के उत्तर

1. प्रति व्यक्ति या राष्ट्रीय में वृद्धि से है।
2. गुणात्मक परिवर्तन
3. सतत प्रक्रिया
4. दीर्घकाल

1.11 अभ्यास हेतु प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आर्थिक संवृद्धि से क्या अभिप्राय है ?
2. आर्थिक विकास से क्या अभिप्राय है ?
3. विकासशील देशों की कुछ मुख्य विशेषताएं बताईए ?
4. प्रदर्शन प्रभाव पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए ?
5. किस देश की प्रति व्यक्ति आय सबसे ज्यादा है ?
6. भारत की प्रति व्यक्ति आय कितनी है ?
7. राष्ट्रीय आय को परिभाषित कीजिए ?
8. आर्थिक विकास का कोई एक सूचक बताईए ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास की विस्तार से व्याख्या करे ?
2. आर्थिक विकास की परिभाषा दीजिए। आर्थिक विकास के माप के अभिसूचकों को स्पष्ट कीजिए ?
3. आर्थिक संवृद्धि को परिभाषित कीजिए ? इसका मापन कैसे किया जा सकता है ?
4. आर्थिक विकास से आप क्या समझते है ? प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि कहां तक आर्थिक विकास का संतोषजनक माप प्रस्तुत करती है ?
5. आर्थिक विकास तथा आर्थिक संवृद्धि के बीच भेद स्पष्ट कीजिए। क्या राष्ट्रीय आय में संवृद्धि आवश्यक रूप से सम्पूर्ण आर्थिक विकास को प्रकट करती है।

1.12 आप ये भी पढ़ सकते है एवम् सन्दर्भ सूची

- Ahuja, H.L. (2017). Development Economics (Ist Edition). New Delhi S. Chand & Company Pvt. Ltd.
- Jhingan, M.L. (2004). The Economics of DevelopmentAnd Planning (4 th edition). New Delhi : Vrinda publication Pvt. Ltd. Hindi medium
- Puri, V.K. & Mishra, S.K. (2019). Indian Economy (37th edition). Mumbai : Himalaya Publishing House Pvt. Ltd.
- Mishra, S.K. & Puri, V.K. (2006). Economics of DevelopmentAnd Planning (12th edition). Mumbai : Himalya Publisnig House
- Singh, S.P. (2007). Economic DevelopmentAnd Planing (21st Edition). New Delhi : S.Chand & Company Ltd. (Hindi Medium)
- Todaro, M.P. & Smith, S.C. (2012). Economic Development (11th Edition). Boston :Addision – Wesley

- Thirlwal,A.P. (2006). Growth & Development (8th Edition). Palgrave Macmillan. Hampsnire
- Taneja, M.L. & Myer, R.M. (2014). Economics of Development & Planning (2nd Edition). Jalandhar. Vishal Publishing Co. (Hindi Medium)

इकाई – 2

विकास और अल्पविकास

इकाई की रूपरेखा

2.0 परिचय

2.1 इकाई के उद्देश्य

2.2 विकास के माप

2.2.1 आय माप

2.2.2 न्युनतम आवश्यकता उपागम

2.2.3 PQLI

2.2.4 HDI

2.2.5 कैपिबिलिटी उपागम

2.3 गरीबी, असमानता और विकास

2.3.1 गरीबी का माप

2.3.2 गरीबी के प्रभाव

2.3.3 गरीबी को दूर करने के नीतिगत उपाय

2.3.4 असमानता का माप

2.3.5 असमानता के प्रभाव

2.3.6 असमानता को दूर करने के उपाय

2.4 विकास अन्तराल

2.5 सारांश

2.6 मुख्य शब्दावली

2.7 अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न

2.8 अपनी प्रगति जानिए के उत्तर

2.9 अभ्यास हेतु प्रश्न

2.10 आप ये भी पढ सकते है।

2.0 परिचय

पिछली इकाई में हमने आर्थिक संवृद्धि और विकास के बारे में जाना है। वृद्धि और विकास को प्रभावित करने वाले कारको के बारे में भी पढा है। इस इकाई में हम वृद्धि और विकास को मापने के बारे में पढेगें। विकास के माप में समय के साथ परिवर्तन होता गया है। 1950 और 1960 के दशक में वृद्धि को ही विकास समझा जाता

था क्योंकि जैसा की हम जानते है कि आर्थिक संवृद्धि होने से उत्पादन बढता है और उत्पादन लोगों के कल्याण को बढा सकता है। परन्तु उत्पादन बढने से कल्याण उस दशा में बढता है जब आय की असमानता शून्य है। परन्तु भारत जैस अल्पविकसित देशों में आय की असमानता बहुत ज्यादा है। इसलिए अर्थशास्त्रियों ने यह महसूस किया कि उत्पादन बढने से भी लोगों के कल्याण के स्तर मे।बहुत ज्यादा वृद्धि नही हुई। इसका मतलब यह हुआ की उत्पादन या आय का बढना लोगों के कल्याण के स्तर को नही बढाता है। इसके बाद विकास के माप आए जो कि लोगों के कल्याण के स्तर को मापते है। इसमें से प्रमुख माप न्यूनतम आवश्यकता माप, PQLI, HDI और कैपिबिलिटि उपागम है। इसके बाद हम गरीबी, असमानता का विकास के सथ सम्बन्ध की चर्चा करेगें। गरीबी के अध्याय में हम इसके माप, प्रभाव और इसको खत्म करने की चर्चा करेगें। इसी तरह से असमानता के माप, प्रभाव और बेरोजगारी को दूर करने की चर्चा करेगें।

2.1 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है।

- विकास के महत्वपूर्ण मापों का अध्ययन करना।
- गरीबी और असमानता का विकास के संदर्भ में अध्ययन करना।
- विकास अन्तराल का विकासशील देशों के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

2.2 विकास के माप

1950 और 60 के दशक तक विकास को ज्यादातर प्रति व्यक्ति उत्पाद से मापा जाता था। परन्तु प्रति व्यक्ति उत्पाद से कल्याण बढना आय की असमानता पर भी निर्भर करता है। इस मापदण्ड में कई समस्याएं जुडी हुई है। इस मापदण्ड में उन वस्तुओं को शामिल नही किया जाता जोकि बाजार में नही बेची जाती है। इसलिए इस मापदण्ड की कमियों को ध्यान में रखकर दूसरे मापदण्डों पर भी विचार शुरू हो गया था। इस क्रम में न्यूनतम आवश्यकता उपागम, PQLI, HDI और कैपिबिलिटि का नाम प्रमुखता से लिया जाता है।

2.2.1 आय माप

विकास के मापदण्ड में जब आय मापदण्ड की बात करते है तो यह दो तरह का हो सकता है पहला राष्ट्रीय आय वृद्धि मापदण्ड और दूसरा प्रति व्यक्ति आय मापदण्ड।

राष्ट्रीय आय वृद्धि मापदण्ड

प्रो0 मायर एवम् बाल्डविन, कुजनेटस, यंगसन तथा मीड जैसे अर्थशास्त्रियों ने राष्ट्रीय आय बढने को विकास का सूचक माना है। इन अर्थशास्त्रियों के अनुसार आर्थिक विकास का सही मापदण्ड वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि है। जबकि प्रति व्यक्ति आय भ्रमात्मक है। क्योंकि इससे ठीक जानकारी प्राप्त नही हो पाती है। परन्तु इसको मापने में कठिनाई है। कुछ सेवाओं का माप मुद्रा में करना मुश्किल होता है। जबकि राष्ट्रीय आय का माप सदैव मुद्रा में किया जाता है। राष्ट्रीय आय की गणना करने में दोहरी गणना की भी समस्या आती है। एक वस्तु की गणना एक से ज्यादा बार भी हो सकती है। ऐसा होने से राष्ट्रीय आय बढ जाती है। राष्ट्रीय आय में अन्तरण भुगतान को शामिल नही किया जाता है।

प्रति व्यक्ति आय मापदण्ड

राष्ट्रीय आय मापदण्ड के विपरीत एक दूसरा मापदण्ड प्रति व्यक्ति आय मापदण्ड भी है। यह मापदण्ड दीर्घकाल में प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि से है। अर्थशास्त्री राष्ट्रीय आय मापदण्ड को सही नही मानते है। इनका कारण यह भी हो सकता है कि विकासशील देशों में लोगों का जीवन निम्न स्तर का होता है। इसमें सुधार

करने की आवश्यकता होती है। लोगों के जीवन स्तर का प्रति व्यक्ति आय से सीधा सम्बन्ध होता है। इसलिए जनता के आर्थिक कल्याण और जीवन स्तर की दृष्टि से विकास तब माना जाएगा जब प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो रही हो। बुकैनन तथा एलिस के अनुसार,'' आर्थिक विकास से आशय पूंजी निवेश के उपयोग द्वारा अल्पविकसित क्षेत्रों की वास्तविक आय सम्भावनाओं को विकसित करने की दृष्टि से ऐसे परिवर्तन लाना व ऐसे उत्पादक स्त्रोतों को बढावा देता है, जो प्रति व्यक्ति वास्तविक आय बढाने की सम्भावना प्रकट करते है।

2.2.2 न्युनतम आवश्यकता उपागम

कुछ अर्थशास्त्री सकल राष्ट्रीय आय या प्रति व्यक्ति आय के विकास के माप से सहमत नही थे। आय के माप से असहमत होकर कुछ अर्थशास्त्रियों में नयुनतम आवश्यकता उपागम का विकास किया। आय के माप के रूप मे।विकास को मापने में कुछ कठिनाई आती है। क्योंकि आय के रूप में विकास को मापने में गरीबी, बेरोजगारी और आय की असमानताओं को गौण महत्व दिया गया। डेविड मोरबैटज के अनुसार विकासशील देशों में संवृद्धि दर तो अधिक रही परन्तु यह गरीबी, बेरोजगारी और आय की असमानताओं को कम करने में विफल रही थी। आय को विकास के माप के रूप में अपनाने की आलोचना होने लगी थी। इस प्रकार 1970 के दशक मे विकास प्रक्रिया की गुणवता की ओर ध्यान देना भी प्रारम्भ हो गया था। न्युनतम आवश्यकता उपागम में हम गरीबी को कम करने, रोजगार को बढाने और असमानता को कम करने की बात करते है। इस विकास के उपागम में आम लोगों को स्वास्थ्य, शिक्षा, पानी, आवास आदि उपलब्ध कराने की बात की गई है। इसका मूल उद्‌देश्य उत्पादकता बढा कर गरीबी को खत्म करने की बात की गई है। न्यूनतम आवश्यकता उपागम में जो लक्ष्य होते है वे लक्ष्य मानव विकास से जुडे होते है।

हिक्स और स्ट्रीटन न्यूनतम आवश्यकता उपागम में 6 सामाजिक सूचकों की बात करते है।

न्यूनतम आवश्यकता	सूचक
1. स्वास्थ्य	जन्म के समय जीवन की प्रत्याशा
2. शिक्षा	साक्षरता दर
3. खाद्य	प्रति व्यक्ति कैलोरी की आपूर्ति
4. जल आपूर्ति	शिशु मृत्यु दर तथा पीने योग्य पानी तक प्रतिशत के रूप में जनसंख्या की पहूंच
5. स्वच्छता	शिशु मृत्यु दर तथा स्वच्छता प्राप्त जनसंख्या का प्रतिशत
6. आवास	कोई नही

2.2.3 PQLI (जीवन का भौतिक गुणवत्ता सूचकांक)

विकास के माप की परम्परागत विधियों की आलोचना को देखते हुए मोरिश डी0 मोरिश ने 23 विकसित तथा विकासशील देशों का अध्ययन करके जीवन प्रत्याशा 1 वर्ष की आयु (LEI) शिशु मृत्युदर (IMI) तथा आधारभूत साक्षरता सूचकांक (BLI) तीनों का औसत लेकर जीवन का भौतिक गुणवता सूचकांक (Physical Quality of Life index) PQLI का निर्माण किया था।

$$PQLI = \frac{LEI+IMI+BLI}{3} \times 100$$

इस सूचकांक का निर्माण 1979 में किया था। PQLI का न्युनतम मुल्य 0 होता है और अधिकतम 100 होता है। 100 की तरफ जाने का मतलब है देश उत्तम अवस्था की तरफ जा रहा है और 0 की ओर जाने का मतलब है की देश खराब अवस्था की ओर जा रहा है। PQLI में तीनो सूचकों का औसत लेते है। हम इनमें से प्रत्येक का अधिकतम मूल्य लेकर चलते है। प्रत्याशित आयु का अधिकतम मूल्य 77 वर्ष लेकर चलते है। क्योंकि 973 में स्वीडन में प्रत्याशित आयु 77 वर्ष थी। न्यूनतम आयु 28 वर्ष लेकर चलते है क्योंकि 1950 में गिनि बसाऊ में प्रत्याशित आयु नीचे की सीमा 28 वर्ष थी। इसी प्रकार शिशु मृत्युदर की अधिकतम मान 229 रखा गया है, क्योंकि गेवन ने 1950 में मृत्युदर की अधिकतम मान 229 रखा गया है, क्योंकि गेवल में 1950 में मृत्युदर 229 प्रति हजार थी। शिशु मृत्यू दर को ऊपरी सीमा 9 है क्योंकि स्वीडन में शिशु मृत्यु दर 9 थी। जो कि सबसे कम थी।

मौरिश का विश्लेषण यह दर्शाता है कि जरूरी नही है कि एक देश की आय बढने पर कल्याण का स्तर बढे। परन्तु सामान्य विश्लेषण यह है कि आय बढने पर PQLI बढता है। परन्तु GNP और PQLI में कोई गहरा सम्बन्ध नही है। एक वर्ष की आयु में जीवन संभावना तथा शिशु मृत्युदर के बीच सहसंबंध का गुणांक ऊंची डिग्री तथा ऋणात्मक होता है। शिक्षा तथा जीवन संभावना के बीच धनात्मक संबंध पाया जाता है। PQLI सूचक में वे समस्याएं नही है जोकि राष्ट्रीय उत्पाद से जुडी होती है। PQLI सूचक कल्याण पक्ष पर अधिक बल देता है। PQLI का प्रयोग विभिन्न देशों के विकास का तुलनात्मक अध्ययन में प्रयोग कर सकते है।

परन्तु PQLI की कुछ सीमाएं भी है। इसमें एक कमी यह है कि इसमें प्रत्येक सूचक को समान रूप दिया जाता है। जबकि सभी का योगदान अलग – अलग होता है। PQLI सूचक GNP का पूरक है न की प्रतिस्थापक क्योंकि यह कल्याण के स्तर को तो देखता है लेकिन आर्थिक वृद्धि को मापने का काम नही करता है। PQLI सूचक में गैर – आय वाले घटक भी महत्वपूर्ण है।

2.2.4 HDI (मानव विकास सूचकांक) Human Development Index

HDI का प्रतिपादन महबूब उल हक तथा उनके सहयोगी अर्थशास्त्री ऐ0 के0 सेन तथा सिंगर हंस जैसे अर्थशास्त्रियों ने किया था। हमने पिछले सूचकांकों में भी अध्ययन किया है की 1970 के दशक में आर्थिक संवृद्धि को ही विकास मानने पर मतभेद उभरने लगे थे। इसलिए बाद के दशकों मे।अन्य मापदण्डो का विकास होने लगा है। HDI भी उनमें से एक है। क्योंकि HDI में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के साथ लोगों के कल्याण के स्तर में वृद्धि को भी देखते है। HDI में प्रति व्यक्ति आय के साथ शिक्षा और स्वास्थ्य को भी लेते है। HDI सूचक को देखकर संयुक्त राष्ट्र सघ मानव विकास रिपोर्ट प्रस्तुत करता है। HDI सूचक को देखकर ही विभिन्न देशों को मानव विकास के सन्दर्भ मे।रैकिंग दी जाती है। सन् 2010 तक HDI आय शिक्षा और स्वास्थ्य का अर्थमितिय औसत होता था। परन्तु 2010 के बाद यह आय शिक्षा और स्वास्थ्य का ज्यामितिय औसत होता है।

2010 की मानव विकास रिपोर्ट में स्वास्थ्य को दर्शाने के लिए जीवन प्रत्याशा को सूचक माना है। परन्तु ज्ञान सूचक और रहन – सहन के स्तर के सूचक मे।परिविर्तन किया गया है। सन् 2010 से पहले की मानव विकास रिपोर्ट में जीवन के स्तर के सूचक के रूप में GDP प्रति व्यक्ति पीपीपी डॉलर को लिया जाता था। परन्तु मानव विकास रिपोर्ट 2010 में GDP प्रति व्यक्ति पीपीपी डॉलर को इसका सूचक माना गया है। यह इसलिए किया गया क्योंकि घरेलू आय और राष्ट्रीय आय में वैश्वीकरण के बाद ज्यादा अन्तर आने लग गया है। ज्ञान के सूचक के रूप में साक्षरता दर की जगह स्कूल के औसत वर्ष और सकल नामांकन की जगह स्कूल के प्रत्याशित वर्ष को शामिल किया गया है।

मानव विकास सूचकांक को तैयार करने के लिए न्युनतम और अधिकतम मान प्रत्येक सूचक का दिया जाता है। उदाहरण के लिए जीवन प्रत्याशा की न्यूनतम आयु 20 वर्ष लेकर चलते है। ऐतिहासिक प्रमाण हमें जीवन प्रत्याशा के मिल जाते है। किसी भी देश की जीवन प्रत्याशा 20 वर्ष से कम नही रही है। इसी तरह से हम स्कूल

के औसत वर्ष शून्य मान के चल सकते है। स्कूल के अधिकतम वर्ष 15 होते है। जबकि प्रत्याशित स्कूल के अधिकतम वर्ष 18 हो सकते है। इसी तरह से GNI प्रति व्यक्ति को न्यूनतम आवश्यकता पूरा करने के लिए $100 मान कर चलते है। जबकि अधिकतम GNI प्रति व्यक्ति $ 75000 हो सकती है क्योंकि डीटन ने अनुमान लगाया था कि $75000 प्रति व्यक्ति आय के बाद कल्याण का स्तर नही बढता है। कई देश ऐसे भी है जिनकी प्रति व्यक्ति आय $75000 से भी अधिक है। सूचकांक निकालने का सूत्र इस प्रकार है।

$$\text{सूचकांक} = \frac{\text{वास्तविक मान} - \text{न्युनतम मान}}{\text{अधिकतम मान} - \text{न्युनतम मान}}$$

इसके बाद HDI तीनों सूचकांकों का ज्यामितिय माध्य निकाल लिया जाता है।

$$HDI = \sqrt[3]{\text{जीवन स्तर सूचक} \times \text{ज्ञान सूचक} \times \text{स्वास्थ्य सूचक}}$$

भारत का HDI

भारत के HDI निकालने के लिए न्यूनमत और अधिकनम मान का अध्ययन हमने पहले ही कर लिया है। अब हम सूचकांक निकालने के लिए वास्तविक मान की बात करेगे।

HDR 2018 के अनुसार भारत की जीवत प्रत्याशा 68.8 वर्ष है। अधिकतम जीवन प्रत्याशा 8.5 है और न्युनतम 20 है।

$$\text{स्वास्थ्य सुचकांक} = \frac{68.8 - 20}{85 - 20} = .7508$$

ज्ञान के सूचकांक मे स्कूल मे बिताए वर्ष और स्कूल मे बिताए गए प्रत्याशित वर्षो का औसत लेते है। स्कूल मे बिताएं गए औसत वर्ष शुन्य भी हो सकते है और अधिकतम प्रत्याशा 18 वर्ष हो सकती है और स्कूल में बिताए गए औसत वर्षो का अधिकतम मान 15 वर्ष हो सकता है।

$$\text{स्कूल मे बिताए गए औसत वर्ष का सुचकांक} = \frac{6.4 - 0}{15 - 0} = 0.4267$$

क्योकि भारत मे बिताए गए स्कूल में औसत वर्ष 6.4 है।

$$\text{स्कूल में बिताए गए औसत वर्ष की प्रत्याशित सूचकांक} = \frac{12.3 - 0}{18 - 0} = 0.6833$$

क्योंकि भारत में प्रत्याशित स्कूल में बिताए गए 12.3 वर्ष है।

$$\text{ज्ञान सूचकांक} = \frac{0.4267+0.6833}{2} = 0.555$$

भारत की GNI प्रति व्यक्ति PPP के अनुसार $ 6353 है।

$$\text{आय सूचकांक} = \frac{Log\ 6353 - Log\ 100}{Log\ 75000 - Log\ 100} = 0.6271$$

अब हम तीनों सूचकांकों का ज्यामितिय माध्य लेगें।

$$HDI = \sqrt[3]{0.7508 \times 0.555 \times 0.6271} = (0.7508 \times 0.555 \times 0.627)^{1/3} = 0.646$$

भारत की HDI 2018 की HDR (मानव विकास रिपोर्ट) के अनुसार 0.646 है। सबसे अधिक HDI नार्वे की है जोकि 0.953 है। भारत का सीान 189 देशो मे 130 सीान पर है। नाइजर देश की HDI सबसे कम है।

HDI का न्युनतम मूल्य शून्य होता है और अधिकतम मुल्य एक होता है। जितना मुल्य एक के पास होता है उतना ही कोई देश विकास की तरफ जाता है। और जितना HDI का मुल्य शून्य की तरफ जाता है तो कोई भी देश उतना ही अल्पविकास की तरफ जाता है। परन्तु अब तक किसी देश का मुल्य शून्य भी नही हुआ है और न ही एक हुआ है।

2.2.5 कैपिबिलिटी उपागम

प्रो0 अमर्त्य सेन आर्थिक विकास को क्षमता के विस्तार के रूप मे परिभाषित करते है। प्रो0 अमर्त्य सेन ने विकास को, वास्तविक स्वतन्त्रता जिसका लोग आनन्द उठाने है, के रूप मे माना है। विकास की प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार की पराधीनता को खत्म किया जाता है। उन पराधीनताओं में मुख्य रूप से गरीबी है। प्रो0 सेन का यह मत परम्परावादी विकास की परिभाषाओं से अलग है। परम्पराबादी परिभाषाओ मे केवल कुल उत्पाद या प्रति व्यक्ति उत्पाद का बढना विकास समझा जाता है। सेन का विकास का स्वतन्त्रता सम्बन्धी मापदन्ड सेन के क्षमता मापदण्ड का आधार है। कैपिबिलिटी उपागम में यह समझा जाता है की व्यक्ति क्या कर सकता है और क्या नही कर सकता है। क्षमता तब बढती है की भूख से छुटकारा मिले, कूपोषण से मुक्ति मिले। यह सब देश की क्षमता का निर्माण करती है। सामाजिक जीवन मे हमारी गतिविधियां भी हमारी क्षमता को बढाता है।

2.3 गरीबी, असमानता और विकास

हमने पिछले अघ्ययाय मे विकास के माप के बारे मे पढा है। 1960 के दशक तक मानते थे की राष्ट्रीय आय बढने पर कुछ समय बाद मानव विकास भी संभव हो पाएगा। यानि राष्ट्रीय आय बढने पर गरीबी और असमानता जैसी समस्याओ का अन्त हो जाएगा। परन्तु भारत जैसे विकासशील देश में यह आजादी के 70 वर्षो के बाद भी नही हो पाया है भारत के राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय मे तो बढोतरी हुई है। लेकिन 21.9 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा से नीचे रह रहे है। अब सभी को पता को चल रहा है की आर्थिक संवृद्धि से धन के वितरण की असमानताएं बढी है। गरीब और गरीब होते जा रहे है तथा अमीर और अमीर होते जा रहे है। इस सम्बन्ध मे अर्थशास्त्राी महबूब उल हक न कहा है ‘‘हमे पढायां गया था कि हम कुल राष्ट्रीय उत्पाद का ध्यान रखे और यह गरीबी का ध्यान रखेगा। इसे अब उलट करना होगा, गरीबी का ध्यान रखना होगा और यह कुल राष्ट्रीय उत्पाद का ध्यान रखेगी।’’ हम गरीबी और असमानता को जुडवा समस्या कह सकते है। क्योकि एक के बढने पर दूसरी भी बढती है इन दोनो मे घनात्मक सम्बन्ध पाया जाता है।

2.3.1 गरीबी का माप

विश्व बैक गरीबी का अनुमान लगाने के लिए गरीबी रेखा का अनुमान लगााता है। विश्व बैंक 2011 की कीमत के अनुसर गरीबी रेखा के $ 1.90 प्रति दिन मान कर चलता है। जिस व्यक्ति को खर्च करने के लिए प्रतिदिन $ 1. 90 नही मिलते है उसको गरीब माना जाता है परन्तु हमारे पास गरीबी की कई सारी अवधारणाएं है। अर्थशास्त्राी पूर्ण निर्धनता की बात करने है। पुर्ण निर्धनता मे वे सभी लोग है जिनकी न्यूनतम जरूरते पूरी नही हो पा रही है उनकी संख्या जानने के लिए लोगो की कुल संख्या ली जाती है जो वास्तविक आय के न्यूनतम स्तर से नीचे रह रहे है। ये लोग किसी भी शहर या देश मे होते है।

1 व्यक्ति संख्या (Head Count)

गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की संख्या को हैड काऊन्ट कहा जाता है। इन सब लोगों की न्यूनतम आवश्यकताएं पूरी नही हो पाती है। गरीबी की संख्या को H से दिखा रहे है और कुल जनसंख्या को N से दर्शा रहे है। इस प्रकार Head Count Index = H/N होगा। विश्व बैंक के अनुमान के अनुसार विश्व में जिन लोगों की आय प्रतिदिन $ 1.25 नही है वो गरीब है। उन लोगों की संख्या H का मान होगा। N कुल जनसंख्या को दिखा रहा है। इस प्रकार गरीबी रेखा से नीचे रह रहे लोग प्रतिशत के रूप में हमारे पास आ जाते है।

2. निर्धनता अन्तर (Poverty Gap)

हमें केवल निर्धनता का अध्ययन करने के लिए गरीबी रेखा से नीचे रह रहे लोगों का केवल प्रतिशत के रूप में अध्ययन नही करना चाहिए। उदाहरण के लिए भारत में गरीबी रेखा से नीचे 21 प्रतिशत लोग रह रहे है परन्तु ऐसा नही हो सकता की सभी लोग जो गरीबी रेखा से नीचे रह रहे है उनका जीवन स्तर समान हो। कभी भी गरीबी रेखा से नीचे रह रहे लोगो की स्थिति समान नही हो सकती है। इसलिए गरीबी रेखा से नीचे रह रहे लोगों की स्थिति समान नही हो सकती इसलिए गरीबी रेखा से ज्यादा महत्वपूर्ण गरीबी अन्तराल है। निर्धनता अन्तराल गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की आय को बताता है और यह भी बताता है कि लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाने के लिए कितनी आय की जरूरत होगी। इसको रेखाचित्र की सहायता से दिखाया ज सकता है।

चित्र 1.1

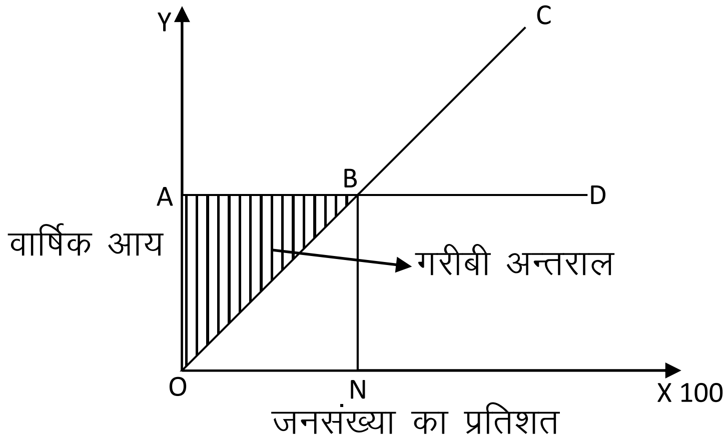

चित्र – 1.1 में X – अक्ष पर जनसंख्या का प्रतिशत और Y – अक्ष पर आय को दिखाया हुआ है। इस चित्र से स्पष्ट है की गरीबी रेखा से नीचे रह रहे सभी लोग समान नही होते है। जितनी आय कम होती उतनी ही गरीबी की तीव्रता बढती रहती है। OA यहां पर गरीबी रेखा है।

कुल निर्धनता अन्तराल (Total Poverty Gap) का मापने का सूत्र इस प्रकार है।

कुल निर्धनता अन्तराल (TPG) = $\sum_{i=1}^{H} (Y_p - Y_i)$

Y_p = गरीबी रेखा आय

Y_i = ith व्यक्ति की आय

H= गरीबी रेखा से नीचे व्यक्तियों की संख्या

कुल निर्धनता अन्तराल को गरीबी दूर करने के लिए कुल आय में कमी के रूप में दिखा सकते है। माना की गरीबी रेखा 200 रूपये है और किसी व्यक्ति की आय 50 रूपये हो तो इसका मतलब है कि यहां गरीबी अन्तराल 150 रूपये है। गरीबी रेखा से वाटर निकलने के लिए 150 रूपये की जरूरत है। इस तरह सभी लोगों के गरीबी अन्तराल का योग करके कुल गरीबी अन्तराल का माप कर सकते है। कुल निर्धनता अन्तराल की तरह औसत निर्धनता अन्तराल को भी माप सकते है। औसत निर्धनता अन्तराल (Average Poverty Gap) को निम्नलिखित सूत्र की सहायता से माप सकते है।

$$APG = \frac{TPG}{N}$$

N यहां पर कुल जनसंख्या है।

भारत में 2011–12 में योजना आयोग ने गरीबी रेखा को प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन के हिसाब से 27.20 रूपये ग्रामीण क्षेत्र में और 33.33 रूपये शहरी क्षेत्रों में बताया है। इस तरह एक महीने में 816 रूपये प्रति व्यक्ति प्रति महीना ग्रामीण क्षेत्र मे।और 1000 रूपये प्रति व्यक्ति प्रति महीना शहरी क्षेत्रों में गरीबी रेखा के रूप में परिभाषित किया है। योजना आयोग ने यह अनुमान तेन्दुलकर समिति की गरीबी रेखा की सिफारिश पर दिया है। इसके बाद रंगाराजन समिति ने 2014 में गरीबी रेखा को 2011–12 मे।प्रति व्यक्ति प्रतिदिन ग्रामीण क्षेत्रों में 32 रूपये और शहरी क्षेत्रों में 47 रूपये प्रति व्यक्ति प्रतिदिन के रूप में परिभाषित किया है। परन्तु गरीब के अनुमान आजादी के बाद कई सारे अर्थशास्त्रियों ने लगाया है। भारत में गरीबी के अनुमान मिन्हास, आहुलवालिया, वर्धन और दाण्डेकर व रथ ने दिए है। परन्तु इन अर्थशास्त्रियों के गरीबी के अनुमान अलग – अलग रहे है।

ग्रामीण क्षेत्र में गरीबी का अनुमान 1967 – 68

(ग्रामीण क्षेत्र में प्रतिशत)

अर्थशास्त्री	गरीबी का प्रतिशत
बी एस मिन्हास	37.1
एम. एस अहुलावालिया	56.5
पी के वर्धन	54
दाण्डेकर एण्ड रथ (1968–69)	40

अहुलावालिया ने गरीबी रेखा के नीचे रह रहे लोगों की संख्या को प्रतिशत के रूप में सबसे ज्यादा बताया है।

2.3.2 गरीबी का प्रभाव

पिछले अध्याय में हमने गरीबी के माप की बात की है। गरीबी को मापने की विधियों की बात की है। इस भाग में गरीबी के प्रभाव की बात करेगें। गरीबी के प्रभाव निम्नलिखित है।

1. **ग्रामीण निर्धनता**
   गरीबी का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों की तुलना में ज्यादा है। अधिकांश गरीब लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते है और कृषि तथा सम्बन्धित गतिविधियों में काम करते है। 50 प्रतिशत से अधिक लोग कृषि क्षेत्र में लगे रहते है। अफ्रीका और एशिया में लगभग 80 प्रतिशत निर्धन लोग ग्रामीण क्षेत्रों मे।रहते है। विकासशील देशों में ज्यादा खर्चा सरकार शहरी क्षेत्रों पर करती है। इस प्रकार गरीबी का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्र में शहरी क्षेत्र की तुलना में ज्यादा होता है।

2. महिलाओं का प्रभाव

गरीबी का प्रभाव पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं पर ज्यादा होता है। महिलाओं और बच्चों का ज्यादा कठोर जीवन का सामना करना पडता है। महिलाएं और बच्चे गरीब और अल्प पोषक होते है। पुरूषों की तुलना में महिलाओं के वित्तीय साधन कम और अस्थायी होते है। महिलाओं पर पुरूषों की तुलना मे।तनाव भी अधिक होता है। अल्पविकसित देशों में ज्यादातर लोगो के घरों में देख– रेख महिलाओं द्वारा होती है। परिवार की देख – रेख कर रही महिलाओं की शिक्षा भी कम रहती है और प्रजनन शक्ति ऊंची रहती है। जिसके कारण महिलाओं पर अधिक तनाव रहता है। महिलाओं की गरीबी का कारण महिलाओं और पुरूषों की आय की असमानता भी है। ज्यादातर जगहो पर महिलाओं को पुरूषों की तुलना में कम वेतन मिलता है।

3. निर्धनता और साख

निर्धन लोगों को ऋण उपलब्ध नही हो पाता है। अगर गरीब लोगों को साख उपलब्ध हो जाए तो वे इसे उत्पादित क्रियाओं में निवेश करके अपने जीवन को बेहतर बना सकते है। गरीबो तक साख न पहूंच पाने के कई सारे कारण हो सकते है। गरीब लोगों के पास जमीन या अन्य परिसंपतियों का अभाव होता है। परन्तु ऋण लेने के लिए गारन्टी की आवश्यकता होती है। गारन्टी होने से बैक को ऋण वसूलने में आसानी हो जाती है। गारन्टी का होना एक प्रकार से ऋण देने वाले के लिए बीमे का काम करती है। गारन्टी के न होने पर ऋण लेने वाले पर चुकाने का प्रभाव नही पडता है। परन्तु गरीब लोगों के पास इस प्रकार की कोई गारन्टी नही होती है इसलिए उनको ऋण से वंचित रहना पडता है। उस प्रकार गरीब लोगों को औपचारिक क्षेत्र में ऋण लेने में समस्याओं का सामना करना पडता है। अनौपचारिक क्षेत्र में कुछ लोगों की बिना गारन्टी के थोडी मात्रा में ऋण तो मिल सकता है लेकिन इस ऋण की ब्याज की दर बैक की ब्याज दर से कई गुणा अधिक होती है। इसलिए इनको चुकाना गरीब लोगों के लिए बडा मुश्किल हो जाता है। गरीब लोगों की भुगतान क्षमता भी सीमित होती है। जब ऋण भुगतान का समय समीप आता है। तब भुगतानकर्ता के मन में दुविधा पैदा होती है।

4. निर्धनता और बीमा

भविष्य की अनिश्चितता को कम करने के लिए बीमा करवाया जाता है। जोखिम न उठाने के लिए बीमा करवाया जाता है। प्राकृतिक आपदा या और किसी संकट या अमीर या गरीब सब पर प्रभाव पडता है। परन्तु उनका प्रभाव अमीर लोगों पर कम और गरीब लोगों पर ज्यादा होता है। अमीर लोग इन जोखिमों से बचने के लिए बीमा कर लेते है। परन्तु गरीब लोग बीमा की योजनाओं को बारे में कम ज्ञान रखते है। इसलिए उनके मिलने वाले लाभों से वंचित रहते है। परन्तु समस्या केवल कम ज्ञान या अनपढता की न होकर के उनकी कम आय की भी होती है। उनके लिए बीमा कराने के लिए राशी उपलब्ध नही हो पाती है। जिससे की गरीब लोगों को बीमे का लाभ नही मिल पाता है। इसका एक और भी कारण यह है कि निर्धन लोगों की श्रम की अवसर लागत धनी लोगों की तुलना में कम होती है। निर्धन लोगों को इन योजनाओं में राशि को जमा कराने के लिए अधिक काम करना पडता है। इस प्रकार जोखिम को कम कर करने के लिए उनको अधिक काम करना पडता है परन्तु फिर भी उनकी बचत कम हो जाती है।

5. पोषण का प्रभाव

गरीब लोगों के पास आय की कमी होती है। जिससे वो पर्याप्त मात्रा में आधार नही ले सकते है। उचित आधार नही मिलने से शरीर में कमजोरी आ जाती है। इस प्रकार कई प्रकार की बिमारिया उन्हें घेर लेती है। इससे उनकी कार्यक्षमता भी घटने लगती है। कम पोषण मिलने से प्रत्याशित आयु भी कम होने लगती है। मानसिक उदासीनता, उदासी, कम बौद्धिक क्षमता आदि की समस्या होने लगती है।

6. निर्धनता और परिवार

निर्धनता को परिवार के सभी सदस्य समान रूप से नही बांट सकते है। गरीबी को बांटने का तात्पर्य यहां पर उपलब्ध अल्प आहार को बांटने से है। ज्यादा निर्धनता में आहार की समान मात्रा में बांटने से कोई

भी व्यक्ति पूर्ण रूप से स्वस्थ्य नही हो सकता है। अगर भोजन को सब मे न बांटकर एक को खिलाया जाता तो एक व्यक्ति स्वस्थ्य हो सकता है परन्तु सब में बांट देने पर सभी अस्वस्थ हो जाते है। इसका सारांश यह निकलता है कि परिवार की आय का असमान वितरण कार्य क्षमता को बढा देता है। परन्तु यह कथन व्यावहारिक रूप से उचित नही हो सकता है। यह केवल कल्पना करना हो सकता है। यह कभी नही हो सकता कि कुछ लोग हमेशा भुखे रहे और कुछ लोग परिवार में पेट भर खाए। इसलिए समान वितरण हमेशा श्रेष्ठ माना जाता है।

इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि गरीब लोग हमेशा प्रतिकूल स्थिति में रहते है।

2.3.3 गरीबी का दूर करने के नीतिगत उपाय

इस भाग में हम गरीबी को खत्म करने के उपायों पर चर्चा करेगें। गरीबी को खत्म करने या कम करने के निम्नलिखित उपाय हो सकते है।

1. सम्पत्ति का पूनः वितरण

अल्पविकसित देशों में सम्पत्ति और आय का असमान वितरण पाया जाता है। इन देशों में 20 प्रतिशत से कम लोगों के पास 50 प्रतिशत कुल राष्ट्रीय आय का भाग होता है। इसका कारण यह है कि सम्पति का ज्यादातर भाग इन 20 प्रतिशत लोगो के पास ही है। मानवीय पूंजी भी इन 20 प्रतिशत लोगों के पास शिक्षा और स्वास्थ्य के रूप में होती है। निर्धनता को मिटाने के लिए सम्पति का विकेन्द्रीयकरण होना चाहिए। आय और सम्पति के असमान वितरण को कम करना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि सुधारों को लागू करना चाहिए। शहरी क्षेत्रों में छोटे कारोबारियाों को कम ब्याज दरों पर साख को उपलब्ध कराना चाहिए। इससे वे अपने व्यापार का प्रसार कर सकते है। असमान वितरण केवल भौतिक साधनों का ही न होकर मानवीय पूंजी का भी होता है। मानवीय पूंजी शिक्षा और स्वास्थ्य का भी अल्पविकसित देशों में असमान वितरण होता है। इसको भी कम करने का प्रयत्न करना चाहिए।

2. फलनात्मक वितरण में परिवर्तन

श्रम की कीमत तुलनात्मक रूप से पूंजी की कीमत से कम होनी चाहिए। ऐसा होने से असमानताएं कम होती है। यह प्रबंधकों को इस योग्य बनाती है कि पूंजी के सीान पर श्रम का प्रयोग कर सके। ऐसा करने से रोजगार का स्तर बढने लगता है। ऐसा होने से रोजगार का स्तर बढता है। निर्धनता कम हो जाती है। श्रम संगठन मजदूरी को अपने संगठन द्वारा मजदूरी को बाजार प्रणाली से तय मजदूरी से ऊपर निर्धारित करवा देते है जबकि पूंजी की कीमत कम तय होती है। ऐसा होने से श्रम के सीान पर पूंजी का प्रयोग ज्यादा मात्रा में होने लगता है। इस प्रकार सरकार को इस अपूर्णता को खत्म करवाना चाहिए और श्रम की कीमत या मजदूरी वहां तय होनी चाहिए जहां पर बाजार की मांग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा मजदूरी तय होती है।

3. संरचनात्मक सुधार

अल्पविकसित देशों का आर्थिक और सामाजिक ढांचा कुछ ऐसा होता है कि जिस कारण गरीबी और आय की असमानताएं विद्यमान होती है। गरीबी को दूर करने के लिए इस आर्थिक ढांचे को बदलने की आवश्यकता होती है। गरीबी को दूर करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि सुधार को लागु करना चाहिए। भूमि सुधार करने से असमानता पर गहरी चोट लगती है। ऐसा होने से असमानता कम होती है और साथ में गरीबी भी कम होती है। क्योंकि गरीब लोगों को परिसंपति मिलती है जिसके कारण उनकी आय प्राप्ति की संभावना बढ जाती है।

4. मुद्रास्फीति पर नियंत्रण

कीमतों में बढोतरी का सबसे ज्यादा प्रभाव गरीबों पर पडता है। मुद्रास्फीति आय और संपत्ति की विषमताओं को बढा देती है। जबकि अल्पविकसित देशों में पहले से ही ज्यादा विषमताएं होती है और

मुद्रास्फीति इस अन्तराल को और बढा देती है। कोई भी कार्यक्रम अल्पविकसित देशों में जब तक लागू नही हो सकता जब तक की कीमतों में वृद्धि को ना रोका जाएं।

5. सामाजिक तथा आर्थिक अपराधों पर रोक

अल्पविकसित देशों में भ्रष्टाचार और अपराध ज्यादा होता है। भ्रष्टाचार और अपराध जैसी गैर – कानूनी क्रियाओं का जड से खत्म करना चाहिए। कालाधन, कर की चोरी जैसे गतिविधियों के खिलाफ कदम उठाने चाहिए।

6. मध्यम वर्ग को राहत

कीमतों में लगातार वृद्धि का निश्चित आय वाले वर्गो को कष्ट उठाना पडता है। उनको कीमतों में हुई वृद्धि की भरपाई के लिए विभिन्न प्रकार की राहत देनी चाहिए। जैसे की उनको आय कर में छूट देनी चाहिए, पुस्तक बैंक की सीापना आदि काफी सारे कदम उठाने चाहिए।

7. कर नीति

गरीबों की आय को बढाने के लिए विलासित की वस्तुओं पर कर, आरोही प्रत्यक्ष करों का लगाकर, अमीर वर्ग से धन सरकार अपने खजाने में लेकर यह धन गरीबों में निःशुल्क शिक्षा, मुद्रा का सीधा हस्तान्तरण इत्यादि कार्यक्रम के द्वारा गरीब लोगों के जीवन स्तर को उठाना चाहिए। परन्तु वास्तविकता में आरोही कर दांचा केवल प्रत्यक्ष कर प्रणाली में ही संभव हो सकता है। जबकि अप्रत्यक्ष कर प्रणाली आरोही न होकर अधोगामी। इसका अर्थ यह है कि अप्रत्यक्ष करों का प्रभाव अमीर वर्ग की तुलना में गरीब वर्ग पर ज्यादा पडता है। इसलिए अप्रत्यक्ष कर प्रणाली भी अधोगामी न होकर बल्कि आरोही ही होनी चाहिए। इस प्रकार की नीतियों को कठोरता के साथ लागु करना चाहिए।

8. प्रत्यक्ष हस्तान्तरण भुगतान

आय की असमानता घटाने और गरीबी को कम करने के लिए आर्थिक सहायता प्रत्यक्ष रूप से होनी चाहिए। काम के बदले अनाज योजना प्रत्यक्ष हस्तान्तरण भुगतान का ही एक रूप है। इसमें श्रमिकों को निर्माण कार्यो जैसे तालाब निर्माण आदि में लगाना चाहिए। इस प्रकार के कार्यो में कई बार लागते ऊंची होती है और श्रमिकों की निपूणता कम होती है।

9. विकास रणनीति

ऊपर के सभी तत्वों से आवश्यक विकास की रणनीति है। विकास नीति की दिशा ग्रामीण विकास, विशेषतः कृषि के विकास से होना चाहिए। ऐसा होने से निर्धनता और असमानता को खत्म किया जा सकता है। निर्धनता और असमानता को खत्म करने के लिए सभी उपायों का प्रयत्न करना चाहिए।

2.3.4 असमानता का माप

असमानता को मापने की दो विधियां है। इसमें से पहली तो आय के वितरण का आकार और दूसरी आय का व्यावहारिक वितरण है।

दोनो मुख्य विधियों का विवरण इस प्रकार है।

(A) व्यक्तिगत वितरण

असमानता के माप के लिए व्यक्तिगत वितरण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। व्यक्तिगत वितरण में भी कई प्रकार की अन्ध्य विधियों को शामिल किया जाता है जैसे – व्यक्तिगत आय, लारेन्ज वक्र तथा गिन्नी अनुपात। व्यक्तिगत वितरण की अन्य विधियों का वर्णन इस प्रकार है।

1. व्यक्तिगत आय

व्यक्तिगत आय विधि का सम्बन्ध व्यक्ति की कुल आय से होता हैं जोकि व्यक्ति द्वारा प्राप्त की जाती है। इस बात का कोई औचित्य नही होता है कि जो आय प्राप्त की जाती है वह किस प्रकार प्राप्त

की हुई है। मुख्य बात यह नही होती की कमाई हुई आय कैसे प्राप्त हुई है अर्थात आय प्राप्त करने के लिए किन साधनों का प्रयोग किया गया है बल्कि यह बात महत्वपूर्ण होती है कि आय कितनी मात्रा में प्राप्त हुई है। इस विधि द्वारा बताया गया है कि यदि व्यक्ति की आय अधिक है तो उसे ऊंचे आय वर्ग में शामिल कर दिया जायेगा जबकि यदि व्यक्ति की आय कम होती है तो उसे नीचे आय वर्ग में शामिल कर दिया जायेगा। व्यक्तिगत वितरण, व्यक्तियों द्वारा कमाई गई आय पर आधारित है।

2. लोरैन्ज व्रक

लोरैन्ज वक्र द्वारा भी आय की असमानता को मापा जाता है। कोनार्ड लोरैन्ज एक अमेरिकन सांख्यिकीय शास्त्री थे जिनके नाम पर ही इस विधि का नाम पडा। इनके द्वारा इस विधि से जनसंख्या के वर्गो तथा उन्हें प्राप्त होने वाली आय के सम्बन्ध को दर्शाया है। रेखाचित्र द्वारा इस विधि का विवरण इस प्रकार है।

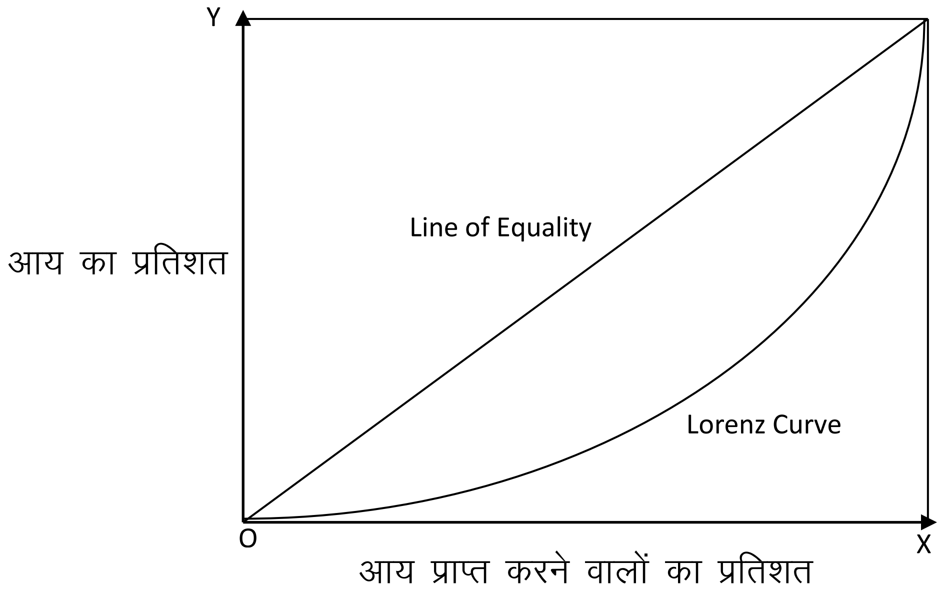

चित्र 2.1

चित्र में OX – अक्ष पर आय प्राप्त करने वालों का संचयी प्रतिशत दिखाया गया है तथा OY – अक्ष पर आय का प्रतिशत दिखाया गया है। 45° पर जो मूल बिन्दु से रेखा खीची गई है वह समानता रेखा कहलाती है और आय प्राप्त करने वालों में आय के समान वितरण को दर्शाती है। जिस वक्र को लारेन्ज वक्र का रेखाचित्र में नाम दिया गया है वह काल्पनिक आकडों पर आधारित है। इस वक्र द्वारा आय प्राप्त करने वाले के प्रतिशत तथा कुल आय के प्रतिशत में संख्यात्मक सम्बन्ध बताया जाता है। चित्र में समानता रेखा और लोरैन्ज वक्र के लम्बरूप दूरी द्वारा असमानता को मापा जाता है। असमानता अधिक तब होगी जब समानता रेखा और लोरैन्ज वक्र में अन्तर अधिक होगा तथा यह असमानता कम तब होगी यदि इन दोनों अर्थात समानता रेखा और लोरैन्ज वक्र के बीच अन्तर कम होगा। जब अर्थव्यवस्था में पूर्ण असमानता की स्थिति पाई जाती है। तो एक व्यक्ति द्वारा सारी आय प्राप्त कर ली जाती है और दूसरों को कुछ नही मिलता। इस स्थिति को लोरैन्ज वक्र के नीचे समतल और दाये लम्बस्वरूप अक्ष द्वारा दिखाया गया है। यह भी सत्य है किसी देश मे।न तो पूर्ण समानता है और न ही पूर्ण असमानता। कम असमानता और अधिक असमानता को हम निम्न दो रेखाचित्रों द्वारा दिखा सकते है।

चित्र 2.2 (a)

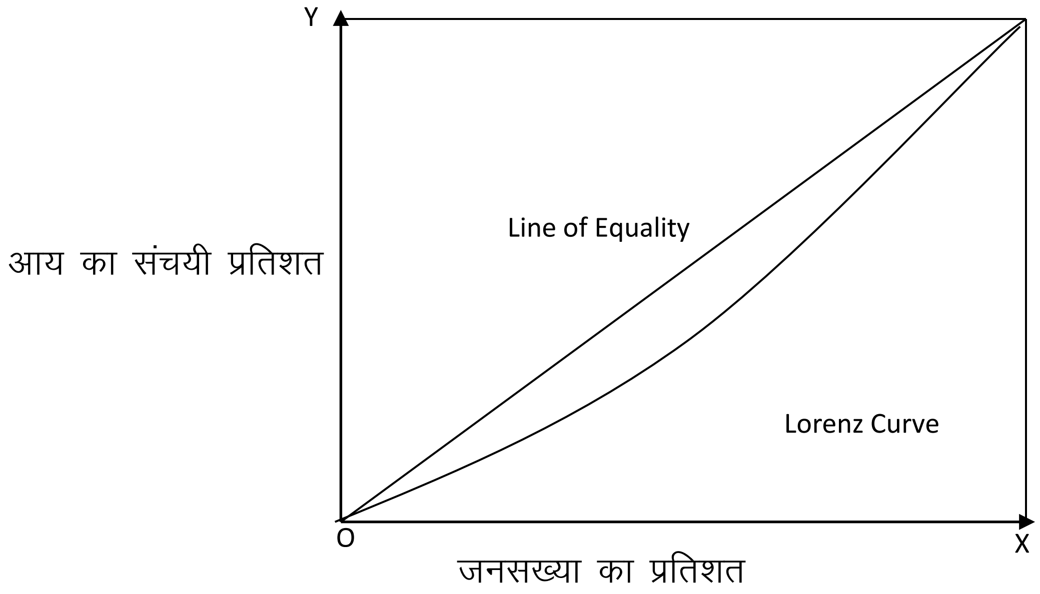

चित्र 2.2 (b)

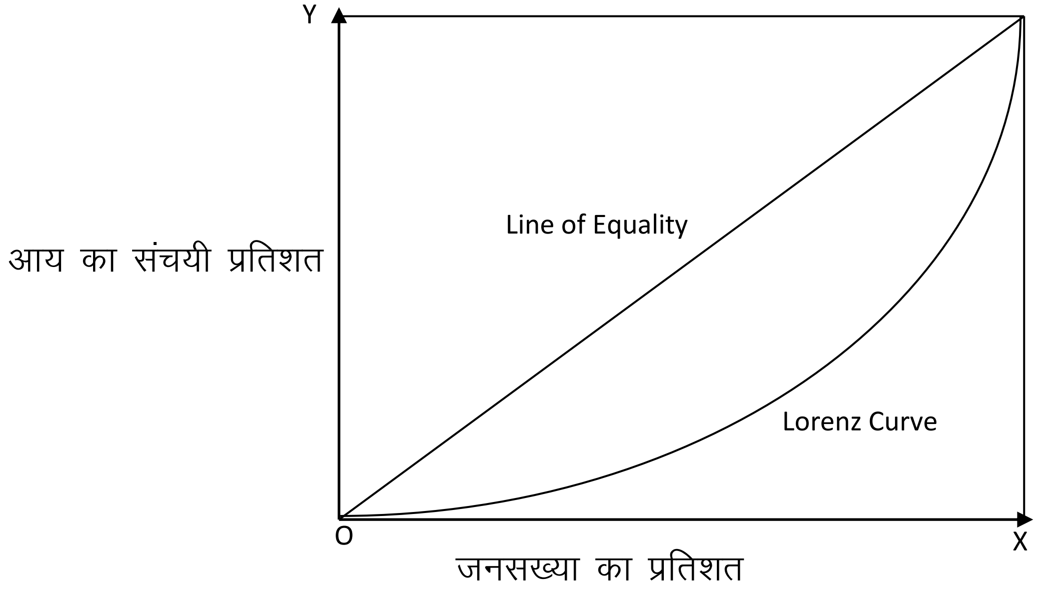

चित्र 2.2 (a) द्वारा कम असमानता को दिखाया गया है क्योंकि लोरैन्ज वक्र समानता रेखा के समीप है। चित्र 2.2 (b) द्वारा अधिक असमानता को दिखाया गया है। क्योंकि लोरैन्ज वक्र समानता रेखा से दूर है। असमानता की उतनी मात्रा अधिक होगी जितनी की लोरैन्ज वक्र की गोलाई अधिक है।

3. गिन्नी अनुपात

देश में जो असमानता पाई जाती है उसको गिन्नी अनुपात द्वारा भी मापा जा सकता है। देश में असमानता की मात्रा कितनी है यह पता लगाने के लिए समानता रेखा और लोरैन्ज वक्र के बीच का क्षेत्रफल तथा आधे समकोण चतुर्भुज के क्षेत्रफल के अनुपात को आंका जाता है। गिन्नी अनुपात इटली के सांख्यिकी

शास्त्री सी0 गिन्नी द्वारा 1912 में दिया गया। गिन्नी अनुपात द्वारा असमानता के माप का चित्र स्पष्टीकरण निम्न प्रकार से है।

आय का संचयी प्रतिशत

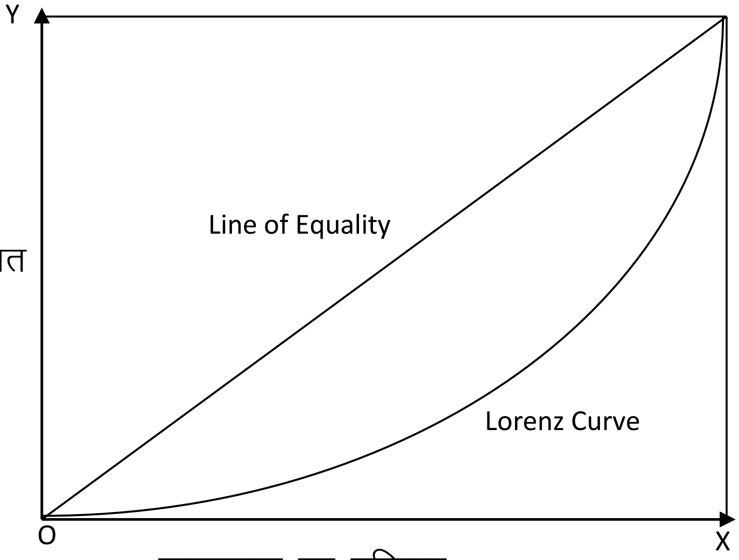

जनसख्या का प्रतिशत

जब अर्थव्यवस्था में पूर्ण समानता पाई जाती है तो गिन्नी अनुपात शून्य और एक के बीच में होता है। अर्थव्यवस्था में जितना अधिक गिन्नी अनुपात होगा उतनी ही असमानता अधिक होगी तथा जितना कम गिन्नी अनुपात होगा उतनी ही कम असमानता होगी।

(B) व्यावहारिक वितरण

व्यावहारिक वितरण का प्रयोग भी आय वितरण के स्वरूप की व्याख्या करने के लिए किया गया। इस विधि द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि उत्पादन के तीन साधनों की कुल आय (किराया, ब्याज, लाभ) प्रतिशत में श्रम की आय प्रतिशत क्या है ? उत्पादन के दो साधनों द्वारा इस वितरण की व्याख्या इस प्रकार है।

मजदूरी दर

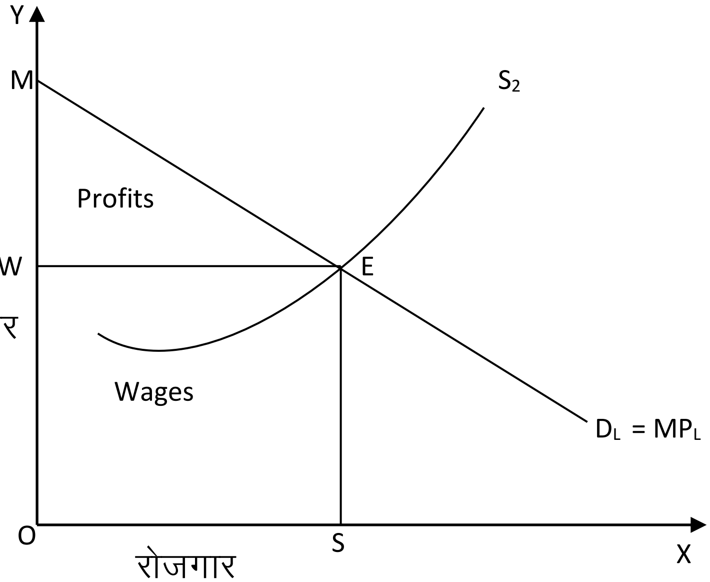

रोजगार

चित्र में OX – अक्ष पर रोजगार तथा OY – अक्ष पर मजूदरी की दर को बताया गया है। D_L मांग वक्र है जोकि नकारात्मक ढलान को दर्शाता है। यह नकारात्मक ढलान घटते सीमान्त प्रतिफल को बताता है। S_L

श्रम का पूर्ति वक्र है। यह पूर्ति वक्र श्रम शक्ति द्वारा निर्धारित होता है। S_L वक्र ऊपर की ओर चढता हुआ है। इसका अर्थ है कि यदि मजदूरी दर बढती है तो रोजगार भी बढता है और यदि मजदूरी कम होती है तो रोजगार भी कम हो जाता है अर्थात् मजदूरी दर तथा रोजगार में विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है। चित्र में कुल उत्पादन OMEL है जोकि दो भागों लाभ और मजदूरी में बटा हुआ है। चित्र में लाभ WME के बराबर है तथा मजदूरी OWES के बराबर है।

2.3.5 असमानता के प्रभाव

1. पूंजी निर्माण

बचत की पूंजी निर्माण में अहम् भूमिका होती है। पूंजी निमार्ण जितनी मात्रा में होगा। यह बचत की मात्रा पर निर्भर करता है। उपभोग के स्तर द्वारा बचते प्रभावित होती है। उपभोग की मात्रा तब घटती है यदि आय का वितरण असमान होता हो। उपभोग की मात्रा इसलिए घट जाती है क्योंकि गरीब लोगों की उपभोग प्रवृत्ति अधिक होती है परन्तु उनके पास उपभोग पर खर्च करने के लिए आय नही होती। अमीर लोगों के पास ऊंची मात्रा में आय होती है परन्तु उनकी उपभोग प्रवृत्ति कम होती है। इसलिए उनके पास बचत की मात्रा बढने लगती है।

2. ट्रिकल डाउन थ्योरी

यह प्रसिद्ध सिद्धान्त 'आर्थिक – वृद्धि के आय – वितरण पर प्रभाव' के रूप में जाना जाता है। इस सिद्धान्त द्वारा यह माना गया है कि GNP की जो वृद्धि दर होती है वह बचत – दर पर निर्भर करती है और आय की विषमताओं के कारण ही बचत – दर बढती है। जो देश विकास करना चाहते है उन्हें स्वयं कुछ भी प्रयास करने की आवश्यकता नही है क्योंकि आय का वितरण स्वयं समान हो जाता है यदि एक बार ऊंची वृद्धि दर को प्राप्त कर लिया जाए तो।

3. कुशलता में वृद्धि

जब लोग अधिक कठिन परिश्रम की ओर आकर्षित होते है तो वे आय की असमानता के कारण ही होते है। यदि सभी लोगों में एक समान मात्रा में आय प्राप्त होती है तो कोई भी अपनी कुशलता को बढाने का इच्छुक नही होगा। अतः कहा जा सकता है कि आय की विषमता द्वारा कार्य – उप्रेरणा को बनाए रखा जा सकता है।

4. नए उत्पादों के विकास में सहायक

जब शुरू में उद्योग सीापित किए जाते है तो उनकी उत्पादन – लागत तथा कीमतें अधिक मात्रा में होती है। इन उद्योगों को धनी लोगो द्वारा सहारा दिया जाता है क्योंकि धनी लोगों द्वारा वस्तुओं को ऊंची कीमतों पर खरीदा जाता है। धनी लोगों में मनोवैज्ञानिक बीमारी होती है ऊंची – कीमतों पर वस्तुओं को खरीदने की।

2.3.6 असमानता को दूर करने के उपाय

1. रोजगार में वृद्धि

असमानता के कारण देश को आर्थिक विकास सम्भव नही है। असमानता को दूर करने का मुख्य उपाय रोजगार मे। वृद्धि करना है। जब देश में रोजगार में काफी मात्रा में बढोतरी होगी तो देश में अपने आप ही असमानता में काफी मात्रा में कमी होगी।

2. सामाजिक न्याय

असमानता को दूर करने का एक महत्वपूर्ण कार्य सामाजिक न्याय भी है। इसका अर्थ है कि समाज के सभी वर्गो को आर्थिक प्रगति के लिए समान आधार प्राप्त हो।

3. संरचनात्मक सुधार

भारत में गरीबी और असमानताएं काफी बडी मात्रा में फेली हुई है। गरीबी और असमानताओं को दूर करने के एिल अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक सुधार आवश्यक है। इन संरचनात्मक सुधारों में भूमि सुधार तथा भूमि का पुनः वितरण आवश्यक रूप से शामिल है।

4. कुशलता में वृद्धि करके

गरीबी और असमानताओं को कुशलता में वृद्धि करके भी हटाया जा सकता है। लोग अधिक आय प्राप्त करना चाहते है तथा आर्थिक आय प्राप्त करने के लिए लोग अधिक कठिन परिश्रम करते है और इस कारण से लोगों की कुशलता मे वृद्धि होती है तथा देश में असमानता में कमी आती है।

5. ग्रामीण जन – कल्याण

ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों की तुलना में ज्यादा गरीबी होती है। अगर गग्रमीण जन कल्याण पर अधिक ध्यान दिया जाएगा तो गांव में लोगों की आय बढेगी जिससे की असमानता में कमी आऐगी।

2.4 विकास अन्तराल

विकास अन्तराल से अभिप्राय सम्पन्न देशों और गरीब देशों के विकास अन्तर से है। अल्पविकसित और विकसित देशों में कई सारे सूचकों में अन्तर हो सकता है। विकसित और अल्पविकसित देशों में कई सारी समानताएं भी होती है परन्तु भूगोल, आय, स्वास्थ्य, शिक्षा और शहरीकरण में अन्तर भी होता हैं। विकास अन्तराल कुछ देशों में कम या ज्यादा हो सकता है जैसे कि मौरिसस में औसत वृद्धि दर 4 प्रतिशत है जबकि अफ्रीकन देश कांगों में 1980 के बाद कोई परिवर्तन नही हुआ है। पिछले कुछ दशकों से विकासशील देश विकसित देशो की तरह विकसित होने की लगातार योजना बनाकर योजना पर काम कर रहे है। इसका मुख्य कारण तो अल्पविकसित देशों की गरीबी है परन्तु एक बडा कारण यह भी है कि विकसित और विकासशील देशों के विकास का अन्तराल लगातार बढ रहा है।

2.6 मुख्य शब्दावली

- **राष्ट्रीय आय** – एक लेख वर्ष में उत्पादित सभी अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं के अन्तिम मूल्य के जोड को राष्ट्रीय आय कहते है।
- **गरीबी** – गरीबी से अभिप्राय है कि जीवन को जीने के लिए कुछ अति – आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति से वंचित रहने से है।
- **सापेक्ष गरीबी** – सापेक्ष गरीबी से अभिप्राय है कि विभिन्न आय वर्गो के बीच कितनी मात्रा में विषमता पाई जाती है।
- **निरपेक्ष गरीबी** – निरपेक्ष गरीबी से अभिप्राय है कि जब एक व्यक्ति की न्यूनतम आय उसके न्यूनतम उपभोग को उपलब्ध ना करा सके।
- **बहुआयामीय गरीबी निर्देशांक** – यह निर्देशांक गरीबी को बहुआयामीय वचन के रूप में लेता है न की केवल गरीबी के केवल आयवचन के रूप में।
- **लैगिंक विषमता सूचकांक** – इस सूचकांक में पूरे देश में महिला और पुरूषों के बीच पायी जाने वाली विषमता को मापा जाता है।

$$\text{आयाम सूचकांक} = \frac{\text{वास्तविक मूल्य} - \text{न्यूनतम मूल्य}}{\text{अधिकतम मूल्य} - \text{न्यूनतम मूल्य}}$$

- **राष्ट्रीय आय मापदण्ड** – राष्ट्रीय आय का माप सैदव मुद्रा में किया जाता है। राष्ट्रीय आय की गणना में दोहरी गणना की भी समस्या आती है।
- **प्रति व्यक्ति आय मापदण्ड** – प्रति व्यक्ति आय मापदण्ड से अभिप्राय दीर्घकाल में प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि से है।

2.7 अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न

1 मानव विकास रिपोर्ट सबसे पहले .... में प्रकाशित हुई।
2 आर्थिक विकास का 'आधारभूत आवश्यकता प्रत्यागम का प्रतिपादन .... में .... ने किया।
3 जीवन की भौतिक गुणवता निर्देशांक का श्रेय .... को जाता है।
4 क्रय – शक्ति समता विधि का सबसे पहले प्रतिपादन .... ने किया।
5 मानव – विकास सूचकां को सबसे पहले .... ने किया।
6 मानव विकास रिपोर्ट .... मे।विषमता समायोजित मानव विकास सूचकांक, लिगिंग विषमता, बहु आयामीय गरीबी सूचकांक का प्रतिपादन किया।
7 .... ने वल्ड डेवेलपमेंट रिर्पोट 1990 में विश्व स्तर पर गरीबी का सबसे पहला अनुमान दिया।
8 बिन्दु – लर्निग टु रियलाइज एजुकेशन प्रामिज वर्ल्ड डेवेलपमेंट रिपोर्ट .... का प्रमुख विवेचन है।
9 HDI का अधिकतम मूल्य .... के बराबर होता है।
10 विषयता समायोजित प्रति व्यक्ति आय – धारणा का प्रतिपादन .... द्वारा किया गया।
11 निर्धनता के माप के लिए .... की अध्यक्षता में एक दल गठित किया गया।
12 .... द्वारा निरपेक्ष प्रतिमान निर्धनता की माप के लिए दिया।

2.8 अपनी प्रगति जानिए के उत्तर

1 1990
2 1970 तथा विश्व बैंक
3 जान टिनवर्जन
4 जी0 आर0 कैसेल
5 महबूब उल हक
6 2010
7 विश्व बैंक
8 2018
9 एक
10 अमर्त्यसेन
11 लकडावाला
12 आर वायड

2.9 अभ्यास हेतु प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1 विकास के माप से क्या अभिप्राय है ?
2 राष्ट्रीय आय वृद्धि मापदण्ड क्या है ?

3 प्रति व्यक्ति आय मापदण्ड क्या है ?
4 आधारभूत आवश्यकता प्रत्यागम से आप क्या समझते है ?
5 जीवन की भौतिक गुणवत्ता निर्देशाक से आप क्या समझते है ?
6 लिगिंग विषमता क्या है ?
7 बहु आयामीय गरीबी सूचंकांक क्या है ?
8 गरीबी से क्या अभिप्राय है ?
9 सापेक्ष गरीबी क्या है ?
10 निरेपक्ष गरीबी क्या है ?
11 असमानता से आप क्या समझते है ?
12 मानव विकास सूचकांक से क्या अभिप्राय है ?
13 कैपिविलिटी उपागम क्या है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1 गरीबी से क्या अभिप्राय है ? सापेक्ष और निरपेक्ष गरीबी की विस्तार से व्याख्या करे ?
2 असमानता क्या है। असमानता के सभी सूचकों की व्याख्या करे ?
3 PQLI और HDI विकास के माप में मुख्य अन्तर क्या है ?
4 गरीबी और विकास के सम्बन्ध को समझाइये ?
5 असमानता और विकास में क्या सम्बन्ध है ?
6 विकास अन्तराल क्या है ? विकास अन्तराल का माप कैसे किया जाता है ?

2.10 आप ये भी पढ़ सकते है एवम् सन्दर्भ सूची

- Ahuja, H.L. (2017). Development Economics (Ist Edition). New Delhi S. Chand & Company Pvt. Ltd.
- Jhingan, M.L. (2004). The Economics of DevelopmentAnd Planning (4 th edition). New Delhi : Vrinda publication Pvt. Ltd. Hindi medium
- Puri, V.K. & Mishra, S.K. (2019). Indian Economy (37th edition). Mumbai : Himalaya Publishing House Pvt. Ltd.
- Mishra, S.K. & Puri, V.K. (2006). Economics of DevelopmentAnd Planning (12th edition). Mumbai : Himalya Publisnig House
- Singh, S.P. (2007). Economic DevelopmentAnd Planing (21st Edition). New Delhi : S.Chand & Company Ltd. (Hindi Medium)
- Todaro, M.P. & Smith, S.C. (2012). Economic Development (11th Edition). Boston :Addision – Wesley
- Thirlwal,A.P. (2006). Growth & Development (8th Edition). Palgrave Macmillan. Hampsnire
- Taneja, M.L. & Myer, R.M. (2014). Economics of Development & Planning (2nd Edition). Jalandhar. Vishal Publishing Co. (Hindi Medium)

इकाई – 3

इकाई की रूपरेखा

3.10 परिचय

3.1 इकाई के उद्देश्य

3.2 एडम स्मिथ का सिद्धान्त

3.3 रिकार्डो का सिद्धान्त

3.4 मार्क्स का सिद्धान्त

3.5 शूम्पीटर का सिद्धान्त

3.6 सारांश

3.7 मुख्य शब्दावली

3.8 अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न

3.9 अपनी प्रगति जानिए के उत्तर

3.10 आप ये भी पढ सकते है।

3.0 परिचय

आर्थिक विकास का चिन्तन बहुत पुराना है। परन्तु इसका व्यवस्थित अध्ययन एडम स्मिथ से शुरू हुआ है। परन्तु उसके बाद रिकार्डो और मिल जैसे अर्थशास्त्रियों ने इसका आगे भी अध्ययन किया है। इन सभी के अध्ययन की तकनीक अलग – अलग थी। परन्तु सभी का परिणाम लगभग एक जैसा ही है। इनके बाद मार्क्स और शुम्पीटर ने भी इसका अध्ययन किया है परन्तु मार्क्स और शुम्पीटर के निष्कर्ष क्लासिकल अर्थशास्त्रियों से अलग थे। ये सभी सिद्धान्त इस बात की व्याख्या करते है कि वे कौन – कौन से तत्व है जिनसे आर्थिक वृद्धि की गति तेज हो जाती है। क्लासिकी अर्थशास्त्री में एडम स्मिथ और रिकार्डो जैसे अर्थशास्त्री आते है। इन सभी अर्थशास्त्रियों के लगभग एक जैसे विचार है। ये सभी सिद्धान्त इस बात की व्याख्या करते है की वृद्धि को कैसे बढाया जाए। क्लासिकी अर्थशास्त्री अबंध नीति को मानते हैं अबंध या मुक्त अर्थव्यवस्था में सरकारी हस्तक्षेप को मानकर नही चलते है। इसको हम अदृश्य हाथ के नाम से भी जानते है। ऐसा करने से वृद्धि दर अधिकतम हो जाती है। क्लासिकी अर्थशास्त्रियों ने वृद्धि मे।पूंजी संचय को आर्थिक वृद्धि का सबसे बडा तत्व बताया है। पूंजी संचय को ज्यादा बचत करने से बढाया जा सकता हैं। पूंजी संचय को ज्यादा बचत करने से बढाया जा सकता है। उन्होनें यह भी बताया है कि मजूदर वर्ग बचत करने में असमर्थ होते है। क्योंकि उनको जो मजदूरी मिलती है वे जीवन – निर्वाह स्तर की होती है। क्लासिकी अर्थशास्त्री यह मानते है कि पूंजीपति और भूमि के मालिक ही बचत करते है। उन्होनें यह भी बताया है कि लाभ की दर पर पूंजी संचय निर्भर करता है। जितनी लाभ की दर बढती है उतना ही पूंजी संचय बढता है। पूंजीपतियों में प्रतियोगिता होने से लाभ घटने लग जाते है। इसके बाद स्थिर अवस्था आ जाती है। जब एक बार लाभ घटने लग जाते है। तो लाभ आखिर में शून्य ही हो जाते है। मजदूरों की मजदूरी जीवन निर्वाह स्तर पर चली जाती है। घटते प्रतिफल का नियम इस अवस्था में आरम्भ हो जाता है।

3.1 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है।

- परम्परावादी अर्थशास्त्रियों के वृद्धि मॉडल का अध्ययन करना
- मार्क्स के सिद्धान्त का अध्ययन करना।
- शुम्पीटर के सिद्धान्त का अध्ययन करना।11

1.2 एडम स्मिथ का सिद्धान्त

परम्परावादी अर्थशास्त्रियों में एडम स्मिथ को प्रमुख माना जाता है। उन्हे अर्थशास्त्र का पिता भी कहा जाता है। एडम स्मिथ की प्रसिद्ध पुस्तक "AN Enquiry into the Nature & Causes of the Wealth of Nations" 1776 में प्रकाशित हुई। यह उनका मार्गदर्शी प्रयास था, जिसके द्वारा उसने आर्थिक प्रगति में पूंजी निर्माण की भूमिका का योगदान बताया।

इस सिद्धान्त के मुख्य तत्व इस प्रकार है।

पूंजी संचय

एडम स्मिथ ने पूंजी संचय को आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण तत्व माना है। पुराने अर्थशास्त्रियों के सामने मुख्य समस्या थी कि धन – सम्पति को कैसे बढाया जाए और धन सम्पति में वृद्धि को ही आर्थिक विकास माना जाता है। एडम स्मिथ ने माना है कि धन सम्पति को बढाने का मुख्य साधन अधिक उत्पादन है और अधिक उत्पादन के लिए अत्यधिक मात्रा में पूंजी की आवश्यकता होती है ताकि उस पूंजी को निवेश किया जा सके और पूंजी को अधिक मात्रा में निवेश करने के लिए बचत की भूमिका पर बल देते है। क्योंकि बचत पूंजी संचय का आधार माना गया है। बचत को अत्यधिक मात्रा में करने के लिए उपभोग की मात्रा को कम करना पडेगा इसलिए पूंजी – संचय को एडम स्मिथ का केन्द्र बिन्दू माना जाता है अर्थात यह मॉडल पूंजी – संचय के ही इर्द – गिर्द घूमता है।

श्रम विभाजन

बाजार के आकार का विस्तार करके भी आर्थिक विकास को बढावा दिया जा सकता है। उत्पादन को बढाने के लिए पूंजी की आवश्यकता होती है। श्रम विभाजन द्वारा उत्पादन को बढावा मिल सकता है। श्रम विभाजन के कारण विशिष्टीकरण भी होता है और विशिष्टीकरण से भी अनेकों लाभ मिलते है। जैसे 1. नई – नई मशीने प्रयोग में लाई जाती है जिनकी लागत भी कम हो सकती है। 2. श्रमिकों के कार्य करने के ढंग में बढोतरी होती है। 3. वस्तुओं के निर्माण – कार्य में समय की भी बचत होती है। स्मिथ का प्रसिद्ध कथन है कि ''श्रम का विभाजन मार्किट के विस्तार क्षेत्र के द्वारा सीमित हो जाता हैं '' इसका अर्थ है कि जब मार्किट का विस्तार होने लगता है तो श्रम विभाजन भी बढ जाता है। विशिष्टीकरण के कारण आपस में विनिमय भी बढता है अर्थात व्यापार को महत्व मिलता हैं एक व्यक्ति यदि केवल एक ही वस्तु का निर्माण करता है। तो उसे अन्य लोगों द्वारा बनाई गई वस्तुएं भी चाहिए। इसलिए उसको दूसरे द्वारा उत्पन्न की गई वस्तुओं को विनिमय करना पडता है। अतः श्रम विभाजन के कारण व्यापार को भी महत्व मिलता है और बाजार के आकार को बढावा मिलता है। जोकि आर्थिक विकास के लिए अति आवश्यक है।

प्राकृतिक नियम

आर्थिक विकास के लिए एडम स्मिथ ने प्राकृतिक नियम को अत्यधिक महत्वपूर्ण माना है। उन्होनें बिना किसी रूकावट के काम करने को बढावा दिया है। एडम स्मिथ के अनुसार किसी भी प्रकार का कोई सरकारी

हस्तक्षेप नही होना चाहिए। जब लोग अपने स्वार्थ के लिए काम करते है तो वो धन को हमेशा अधिक करने की सोचते है। और जब धन को अधिकतम करेंगे तो पूंजी संचय अपने आप बढने लगेगा। लोगों के खुछ के हित में काम करने से सामान्य हित होगा। एडम स्मिथ ने एक उदाहरण के द्वारा इस को समझाया है कि कैसे स्वयंहित के लिए किया गया कार्य सामान्य हित के लिए फायदेमंद है। उन्होनें बताया है कि ब्रैड बनाने वाले की उदारता के कारण हमें ब्रैड नही मिली बल्कि उसके धन कमाने की इच्छा के कारण हमें ब्रैड मिली है। इसलिए यदि एक व्यक्ति को स्वतंत्र छोड दिया जाए तो वो अपने धन को अधिकतम करेगा और यदि सभी लोगों को इसी प्रकार से स्वतंत्र छोड दिया जाए तो वो कुछ धन को अधिकतम बनाएंगे। सरकारी हस्तक्षेप लोगों की आय कमाने की इच्छा को दबाती है। लोग अपने तरीके से काम नही कर पाते है। अतः एडम स्मिथ ने अधिक विकास के लिए प्राकृतिक नियम को अत्यधिक महत्वपूर्ण माना है।

मुक्त व्यापार

एडम स्मिथ ने मुक्त व्यापार को महत्व दिया है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि श्रम विभाजन से वस्तुओं का आदान – प्रदान होता है जिस कारण से बाजार के आकार को बढावा मिलता हैं इसलिए एडम स्मिथ ने माना है कि उत्पादकों को इतनी छूट मिलनी चाहिए कि जिस जगह पर जिस समय पर अपना सामान चाहे बेच सके। सरकार को इस तरह के व्यापार में अपनी दखल अन्दाजी नही दिखानी चाहिए, यदि सरकार इस प्रकार की बाधाएं दिखाऐगी तो उत्पादकों की आय घटेगी जिस कारण उनकी बचत भी काफी मात्रा में कम हो जायेगी जिसके कारण पूंजी भी घट जायेगी और आर्थिक विकास में रूकावटें उत्पन्न होगी। अतः यदि मुक्त व्यापार को बढावा मिलता है तो उत्पादकों की आय बढने पर बचत बढेगी जिसके कारण पूंजी संचय को बढावा मिलेगा जिसके कारण देश का आर्थिक विकास होगा।

विकास के दूत

एडम स्मिथ के अनुसार किसान उत्पादक तथा व्यापारी उन्नति और आर्थिक विकास के दूत है। इन तीनो के कार्य एक – दूसरे से संबंधित है। कृषि का विकास होने पर ही उत्पादक अपने काम को बढावा देता है। कृषि के विकास के कारण ही निर्माण कार्यो और वाणिज्य कार्यो में वृद्धि होती है। और वाणिज्य कार्यो में वृद्धि से ही व्यापार को बढावा मिलता है। अतः किसान, उत्पादक और व्यापारी के कारण पूंजी संचय और आर्थिक विकास होता है।

विकास की प्रकिया

स्थिर अवस्था

एडम स्मिथ के अनुसार एक ऐसी अवस्था आ जाती है कि जब अर्थव्यवस्था स्थिर हो जाती है। स्थिर का अर्थ यह नही है कि बिल्कुल ही रूक जाती है। वृद्धि तो होती ह। लेकिन स्थिर दर से होती है। इस स्थिर अवस्था में पूंजी – संचय रूक जाता है।, जनसंख्या स्थिर हो जाती है, लाभ न्यूनतम होते है। मजदूरी निर्वाह स्तर पर होती है। प्रति व्यक्ति आय तथा उत्पादन में कोई परिवर्तन नही होता है और अर्थव्यवस्था गतिहीनता की अवस्था में पहुंच जाती है।

एडम स्मिथ मॉडल की मुख्य बाते :

1 पूंजी संचय पर बल दिया गया है।
2 पूंजी संचय के लिए बचत को महत्वपूर्ण तत्व माना है।
3 प्राकृतिक नियम और हस्तक्षेप मुक्त पर बल दिया गया है।
4 श्रम के विभाजन को महत्वपूर्ण माना गया है। इसे True Dynamic Force के नाम से भी जाना जाता है।
5 इन्होने माना है कि विकास की प्रकिया कृषि से शुरू होती है।

6 एक ऐसी अवस्था आती है जहां पर वृद्धि दर रूक जाती है।

7 इनका सिद्धान्त वृद्धि से सम्बन्धित है।

8 किसान उत्पादक तथा व्यापारी को विकास का दूत माना गया है।

9 यह Iron Law of Wages पर आधारित है।

आलोचनाएं

1 बचत

एडम स्मिथ ने माना है कि केवल भूमिपति, पूंजीपति और साहूकार ही बचत करते है। उन्होनें आय प्राप्तकर्ता को बचत के लायक नही समझा है। आय प्राप्तकर्ता को बिल्कुल ही नजर अंदाज किया है जबकि ऐसा नही है। आय प्राप्तकर्ता भी बचत करते है। जोकि पूंजी निर्माण में सहायक होता है।

2 सार्वजनिक क्षेत्र की उपेक्षा

एडम सिमथ ने सार्वजनिक क्षेत्र की उपेक्षा की है कि सरकार का कोई हस्तक्षेप नही होना चाहिए। जबकि ऐसा नही होना चाहिए। आजकल हर देश में पूंजी निर्माण में सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका होती है। अतः सरकारी हस्तक्षेप होना चाहिए।

3 उद्यमी वर्ग की उपेक्षा

एडम स्मिथ मॉडल की सबसे बडी कमजोरी यह रही है कि उन्होनें उद्यमी वर्ग की उपेक्षा की है जबकि शूम्पीटर में उद्यमी को विकास का केन्द्र बिन्दु बताया है जिसके कारण नवप्रवर्तन होते है जोकि पूंजी निर्माण में सहायक होता है।

4 स्थिर अवस्था का स्पष्टीकरण नही

एडम स्मिथ की स्थिर अवस्था का सही ढंग से स्पष्टीकरण नही होने के कारण इसकी आलोचना की गई। इनकी स्थिर अवस्था का अर्थ है कि वृद्धि तो हो रही है लेकिन स्थिर अवस्था में जबकि आर्थिक वृद्धि में यह प्रक्रिया संतोषजनक नही है। अतः यह धारणा अवास्तविक है।

5 पूर्ण प्रतियोगिता

यह मॉडल पूर्ण प्रतियोगिता की धारणा पर आधारित है जबकि किसी भी अर्थव्यवस्था में अबंध या पूर्ण प्रतियोगिता नही पाई जाती है। कुछ प्रतिबंध या रूकावटे हर क्षेत्र में पाए जाते है।

3.3 रिकार्डो का सिद्धान्त

डेविड रिकार्डो परम्परावादी अर्थशास्त्री हुए है। वह पहले अर्थशास्त्री थे जिन्होनें पुराने सिद्धान्तों को आर्थिक विश्लेषण की प्रक्रिया में ढाला है। रिकार्डो की पुस्तक The Principle of Political EconomyAnd Taxation 1917 में प्रकाशित हुई जिसमें की आर्थिक विकास के बारे में जानने के लिए कुछ रोचक तत्व मिलते है। एडम स्मिथ का अधिक ध्यान राष्ट्रों की सम्पति की ओर रहा है जबकि रिकार्डो ने अपने मॉडल में सीमान्त नियम की भी बात की है। जोकि यह बताता है कि राष्ट्रीय उत्पादन में लगान का भाग कितना है। इस मॉडल में इस बात की भी व्याख्या की गई है कि समस्त भूमि को अनाज के उत्पादन के लिए प्रयोग में लाया जाता है और भूमि पर घटते प्रतिफल का नियम लागू होता है।

रिकार्डो ने विकास के बारे में कुछ इस प्रकार बताया है अर्थात विकास के लिए इन तत्वों को शामिल किया है।

1. पूंजी संचय

रिकार्डो ने विकास सिद्धान्त में तीन साधनों को महत्व दिया है 1. भूमिपति 2. पूंजीपति 3. श्रमिक। विकास के महत्वपूर्ण कार्य इन तीन साधनों द्वारा ही किए जाते है। सबसे महत्वपूर्ण स्थान पूंजीपति को दिया जाता है। इसका मुख्य कारण है कि ज्यादा मात्रा में बचत इसी वर्ग द्वारा की जाती है। पूंजीपतियों के जो अपने लाभ

होते है उसी लाभ की कुछ अंश को बचत के रूप में रखते है और बचत पूंजी संचय में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पूंजी – संचय में बचत लोगों की शुद्ध आय पर निर्भर करती है जोकि लोगों के जीवन निर्वाह के पश्चात जो कुल उत्पादन में से अतिरेक के रूप में बचती है। जितना यह अतिरेक अधिक होगा बचत की मात्रा उतनी ही अधिक होगी। इसी अतिरेक द्वारा भूमिपति और पूंजीपति द्वारा निवेश किया जाता है। जिस प्रकार से पूंजी संचय के लिए लाभ को प्राथमिक स्त्रोत माना जाता है उसी प्रकार से मजदूरी और किरायो को दूसरे साधनों में शामिल किया जाता है। अब प्रश्न उठता है कि लाभ कहां से आता है। लाभ को इस प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है कि लाभ कहां से आता है। लाभ को इस प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है कि लाभ बने माल का बाजारी मूल्य और उसकी लागत का अन्तर है। पूंजीपतियों के लाभ द्वारा ही पूंजी संचय के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग इसलिए समझा जाता है क्योंकि सबसे बडा अर्थव्यवस्था में यही से लगाया जाता है। मजदूरो और किरायेदारों द्वारा इतनी मात्रा में बचत नही की जाती। लाभ को प्राप्त करने के लिए पूंजीपतियों द्वारा दो महत्वपूर्ण कार्य किए जाते है 1. पूंजीपति को विकास करने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण समझा जाता है। वह अपने लाभ को या तो अपने वर्तमान संयन्त्रों को बढाने के लिए लगाता है या फिर नए उद्योगों को शुरू करने में लगाता है। लाभ का अत्यधिक मात्रा में निवेश किया जाता है। इस प्रकार से जिस से नए उद्योग स्थापित होते है। इसके कारण बाहरी बचते उत्पन्न होती है और बाहरी बचतों के कारण पूंजी संचय को काफी मात्रा में बढावा मिलता है और इस प्रकार से विकास की शक्तियों को बढावा मिलता है।

2. पूंजीपति जिनसे लाभ हो सकता हो ऐसी निवेश संभावनाओं की खोज में रहता है। जब उन्हें लगता है कि निवेश करने से लाभ की संभावनाएं है तो वह उनसे लाभ उठाने की सोचता है और इस प्रकार से ऐसी निवेश संभावनाएं ही राष्ट्रीय उत्पादन को अधिकतम बनाती है।

दूसरे साधन अर्थात श्रमिक वर्ग का भी उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण साधन है। इस वर्ग को रोजगार प्राप्त करने के लिए पूंजीपतियों पर निर्भर रहना पडता है। पूंजीपतियों द्वारा श्रमिकों को रोजगार दिया जाता है और उनके द्वारा वस्तुओं के उत्पादन के लिए उन्हें आवश्यक यन्त्र और औजार भी दिए जाते है। श्रमिकों को प्राप्त होने वाली मजदूरी, वेतन कोष द्वारा निर्धारित होता है। मजदूरी दर का निर्धारण, वेतन कोष और श्रमिकों की संख्या द्वारा किया जाता है। यदि मजदूरी दर कम होगी तो श्रमिकों की ज्यादा मात्रा को काम पर लगाया जायेगा क्योंकि पूंजीपतियों द्वारा अपने उत्पादन को अधिक मात्रा में बढाना चाहेगा। इसी प्रकार से यदि मजदूरी दर ज्यादा होगी तो श्रमिकों की कम मात्रा को काम पर लगाया जायेगा क्योंकि ज्यादा मात्रा में श्रमिक लगाने से उत्पादन की लागत अधिक होगी जिससे कि पूंजीपत्तियों के लाभ कम हो जायेगें जोकि पूंजी संचय को काफी मात्रा में प्रभावित करेगें अर्थात पूंजी संचय कम होगा। यदि श्रमिकों के लिए मजूदरी – दर पर्याप्त मात्रा में हों तो श्रमिक वर्ग अपने जीवन सुविधाओं की वस्तुओं को खरीद सकते है तो इस कारण जनसंख्या बढ जायेगी। यदि श्रमिकों के लिए मजदूरी दर पर्याप्त मात्रा में नही होगी तो श्रमिक – वर्ग अपने जीवन सुविधाओं की वस्तुओं को खरीद नही पायेगें तो इस कारण जनसंख्या कम होगी। अतः कहा जा सकता है कि मजदूरी दर और जनसंख्या में सकारात्मक संबंध है। रिकार्डो ने कृषक लाभ को आधार मानते है लाभ और पूंजी संचय पर मजदूरी के प्रभाव की व्याख्या करने के लिए।

पूंजी संचय के लिए रिकार्डो सिंद्धान्त में कुछ अन्य साधन भी माने है जो इस प्रकार है :

1. कर

सरकार के हाथों में कर को पूंजी संचय के लिए महत्वपूर्ण समझा जाता है। रिकार्डो ने कर के बारे में बताया है कि करों को केवल अनावश्यक उपभोग को कम करने के लिए ही लगाना चाहिए। पूंजीपतियों, मजदूरों और भूमिपतियों पर कर लगाने से साधनों का हस्तांतरण इन वर्गो से सरकार को होगा। इसलिए निवेश

पर करो का प्रतिकूल प्रभाव पडता है। रिकार्डो ने कर को सही नही बताया क्योंकि कर लगाने से लाभ काम होगें और फिर पूंजी संचय कम होगा।

2. बचत

पूंजी संचय के लिए बचत अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। बचतों के द्वारा पूंजी संचय का निर्माण होता है। बचत जितनी मात्रा में अधिक होगी पूंजी संचय भी उतना ही अधिक होगा और बचत जितनी मात्रा में कम होगी पूंजी संचय भी उतना ही कम होगा।

3. मुक्त व्यापार

रिकार्डो ने मुक्त व्यापार को किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए अत्यनत महत्वपूर्ण बताया है। मुक्त व्यापार के द्वारा सभी देशों के साधनों का अधिक ढंग से उपभोग किया जा सकता है। इस सिद्धान्त ने भी उत्पादन के विशिष्टीकरण को माना है। विशिष्टीकरण के कारण एक देश अपनी सभी महत्वपूर्ण साधनों का ठीक ढंग से उपयोग करता है और ऐसा कम से कम लागत पर हो सकता है। रिकार्डो ने बताया कि पूंजीपतियों को निर्यात होने वाली वस्तुओं के उद्योगों में निवेश करना चाहिए। रिकार्डो ने पुष्टि की है कि मुक्त व्यापार होने से गतिहीन अवस्था को काफी हद तक कम किया जा सकता है और ऐसा होने से देश काफी मात्रा में उन्नति करेगा।

गतिहीन अवस्था

गतिहीन अवस्था से अभिप्राय है कि जब उद्यमियों द्वारा न तो उत्पादन बढाने और न ही कम करने की इच्छा होती है। अन्य शब्दों में विकास तत्वों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नही होता। रिकार्डो ने गतिहीन अवस्था को लाभ की घटती दर के रूप में परिभाषित किया है रिकार्डो ने भी एडम स्मिथ की तरह माना है कि पूंजी संग्रह के द्वारा विकास होता है और पूंजी संग्रह लाभ को पुनः निवेश करके प्राप्त किया जा सकता है। जब लोगों में बढोतरी से पूंजी संचय की मात्रा अधिक होती है तो कुल उत्पादन बढता है जिसके कारण मजदूरी कोष में भी बढोतरी होगी। जनसंख्या में वृद्धि मजदूरी कोष में वृद्धि होने से होती है जिसके कारण अनाज की मांग बढती है और अनाज की मांग में वृद्धि होने से कीमत में वृद्धि होती है। बढती हुई जनसंख्या के लिए अनाज की बढती हुई मांग को पूरा करने के लिए घटिया किस्म की जमीन पर खेती करना शुरू कर दिया जाता है और ऐसा होने पर बढिया भूमि पर लगान बढ जाता है और इन पर उत्पादित उपज का बहुत बडा भाग खुद लेते है। इन सब के कारण लाभ कम हो जाते है। लाभ के कम होने के कारण पूंजीपतियों और श्रमिकों के भाग कम हो जाते है और फिर मजदूरी की निर्वाह – स्तर तक गिरने की प्रवृत्ति होती है। घट रहे लाभों और बढ रहे लगान की यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक कि सीमान्त भूमि से उत्पादन काम पर लगाए गए श्रमिक की निर्वाह मजदूरी को पूरा नही करता। ऐसा रिकार्डो द्वारा बताया गया है। ऐसा होन पर स्थिर अवस्था आ जाती है क्योंकि लाभ शून्य हो जाते है और लाभ के शून्य होने पर पूंजी – संचय बिल्कुल ही रूक जाता है और फिर विकास रूक जाती है क्योंकि जनसंख्या में वृद्धि नही होगी, लगान ऊंचा होता है और मजदूरी – दर निर्वाह – स्तर पर होती है। इन सब के कारण विकास रूक जाता है। रिकार्डो द्वारा स्थिर अवस्था को चित्र द्वारा इस प्रकार से दिखाया जा सकता है।

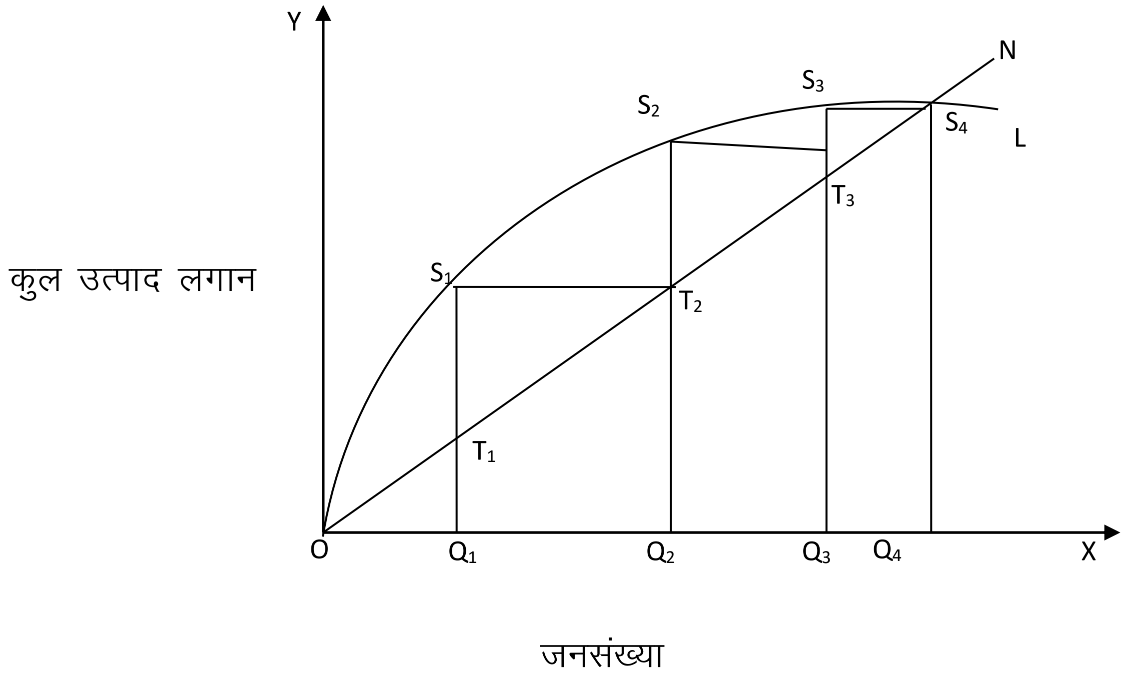

चित्र में OX - अक्ष पर जनसंख्या को मापा गया है और OY - अक्ष पर कुल उत्पादन घटा लगान को बताया गया है। वक्र OL जनसंख्या फलन है। जनसंख्या के बढने के साथ – साथ OL वक्र घटते प्रतिफल के नियम के लागू होने के कारण घटता है। ON स्थिर वास्तविक मजदूरी दर को प्रकट करती है। T_1Q_1, T_2Q_2, T_3Q_3, T_4Q_4 कुल मजदूरी बिल है। OQ_1, OQ_2, OQ_3, OQ_4 जनसंख्या पर जब S_1T_1 लाभ प्राप्त होता है तो मजूदरी बिल O_1T_1 है S_1T_1लाभ होने से निवेश को प्रोत्साहन मिलता है। इस प्रकार का प्रोत्साहन मिलने पर जनसंख्या बढकर OQ_2 हो जाता है और लाभ घट कर S_2T_2हो जाता है। इसी प्रकार से यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक अर्थव्यवस्था बिन्दु S_4 पर नही पहुंच जाती और स्थिर अवस्था प्रारम्भ हो जाती है। S_4 बिन्दु पर पहुंचने पर लाभ बिल्कुल ही समाप्त हो जाते है और कुल उत्पादन मजदूरों और लगान में बंट जाता है।

रिकार्डो महत्व की मुख्य बाते :–

1 रिकार्डो मॉडल वितरण से सम्बन्धित है।

2 यह सिद्धान्त कृषि पर आधारित है।

3 इस सिद्धान्त में यह भी माना गया है कि समस्त भूमि पर अनाज उगाया जाता है।

4 इस सिद्धान्त में तकनीकी परिवर्तन को स्थिर माना गया है।

5 इस सिद्धान्त में मुक्त व्यापार को माना गया है।

6 यह एक Dynamic सिद्धान्त है।

7 रिकार्डो ने करो के स्थान पर बचतों को पूंजी संचय के लिए अधिक महत्व दिया है।

8 मजदूरी और लाभ में विपरीत सम्बन्ध है।

9 पूंजी संचय के लिए लाभ को अत्यधिक महत्व दिया है।

10 अल्पकाल में मजदूरी दर को कम या ज्यादा किया जा सकता है लेकिन दीर्घकाल में नही दीर्घकाल में यह निर्वाह – स्तर के बराबर होती है।

आलोचनाएं

1 वितरण का सिद्धान्त

शुम्पीटर ने बताया है कि रिकार्डो का सिद्धान्त वितरण का सिद्धान्त है जोकि मजदूरों, पूंजीपतियो और भूमिपत्तियों के भाग का निर्धारण करता है। यह आर्थिक विकास का सिद्धान्त प्रतीत होता है।

2 भूमि में अनाज के साथ – साथ अन्य वस्तुएं

भूमि में अनाज के साथ – साथ अन्य वस्तुएं उत्पादित की जाती है जबकि रिकार्डो ने यह माना है कि भूमि को केवल अनाज के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

3 घटते प्रतिफल का नियम

रिकार्डो ने अपने सिद्धान्त में बताया है कि घटते प्रतिफल का नियम लागू होता है। भूमि के संबध में घटते प्रतिफलों के निवारण में प्रौद्योगिकीय प्रगति की क्षमताओं का कम मूल्यांकन किया।

4 स्थिर अवस्था की धारणा

रिकार्डो ने बताया है अर्थव्यवस्था में अन्त में अपने – आप ही स्थिर अवस्था आ जाती है लेकिन यह बात असत्य है क्योंकि किसी भी अर्थव्यवस्था में जिसमें पूंजी संचय हो रहा है, लाभ बढाने के कारण और उत्पादन भी बढ रहा हो वहां पर स्थिर अवस्था हो ही नही सकती।

5 अबंध नीति

रिकार्डो के अनुसार अर्थव्यवस्था में सरकारी हस्तक्षेप पाया जाता है और इसके पूर्ण – प्रतियोगिता के अनुसार कार्य होता रहता है लेकिन वास्तविक जीवन में पूर्ण – प्रतियोगिता की स्थिति पाई ही नही जाती

3.4 मार्क्स का सिद्धान्त

कार्ल मार्क्स Das Capital (1867) के प्रसिद्ध लेखक हुए है। इन्होनें संसार के करोडों लोगों को अपने सिद्धान्त से वशीभूत किया है। शुम्पीटर ने मार्क्स के बारे में बताया है कि ''मार्क्सवाद एक धर्म है। किसी अन्य धर्म के विश्वास करने वाले की भांति कट्टर मार्क्सवादी के लिए विरोधी केवल गलती पर ही नही है बल्कि पापग्रस्त है। मार्क्स ने जब पूंजीवाद के आवश्यक विनाश की बात की तो उनके इसी प्रकार की भविष्यवाणी पर साम्यवाद ने अपने भवन का निर्माण किया है। इस विकास सिद्धान्त में सभी मार्क्सवादी प्रणाली का नही सिर्फ आर्थिक विकास के लिए दी गई मार्क्सवादी प्रणाली की व्याख्या की जायेगी। विकास के बारे में कार्ल मार्क्स के मुख्य विचार इस प्रकार है।

1. इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या

मार्क्स द्वारा इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या का प्रयोग यह बताने के लिए किया गया है कि आर्थिक परिस्थितियों द्वारा सभी ऐतिहासिक घटनाएं प्रभावित होती है। अन्य शब्दों में इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या समाज के विभिन्न वर्गो के संघर्षो का परिणाम है। उत्पादन की विधि तथा उत्पादन के संबंधों के बीच विरोध को इस संघर्ष का प्रमुख कारण माना जाता है। मनुष्य को जीवित रहने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है। मनुष्य का अतिजीवन उस की क्षमता पर आधारित है जिससे वह वस्तुओं का उत्पादन कर सकता है जिनकी आवश्यकता उसे है। उत्पादन को जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अत्यन्त आवश्यक माना जाता है। मनुष्य को जिस भी वस्तु की आवश्यकता होती है वह स्वंय उन वस्तुओं का उत्पादन नही कर सकता। मनुष्य को जो अन्य वस्तुएं चाहिए उनके लिए उन्हें संघर्ष करना पडता है। संघर्ष प्रक्रिया में मनुष्य को कई प्रकार के दवाब और तनाव सहन करने पडते है।

पहले, जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किए गए प्रयासों को चार चरणों में बांटा गया था।

1. प्राचीन साम्यवाद
2. पुरातन दास स्थिति
3. सामन्तवाद

4. पूंजीवाद

मार्क्स के अनुसार '' आर्थिक तत्वों द्वारा इतिहास का पथ प्रभावित होता है। मनुष्य आर्थिक प्रणाली की दशा बदल सकता है परन्तु जीवन का स्वरूप, आर्थिक प्रणाली द्वारा प्रभावित होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि आर्थिक क्रियाएं सामाजिक ढांचे का आधार है।

2. वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त

वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या का ही परिणाम माना जाता है। मार्क्स ने माना है कि समाज दो वर्गो में बंटा हुआ होता है अमीर और गरीब, शोषणकर्ता तथा शोषित। इन दोनो ही वर्गो में आपसी किसी भी प्रकार का सहयोग नही है। यदि हम इतिहास पर नजर डाले तो समाज का प्रत्येक चरण दो वर्गो में बंटा हुआ है। हर चरण में अमीर और गरीब शोषणकर्ता तथा शोषित वर्ग है। उत्पादन साधनों का स्वामी पूंजीपति होता है और पूंजीपति द्वारा श्रमिकों का शोषण किया जाता है। जब नई – नई मशीनों को उत्पादन के नए साधन नई तकनीक का प्रयोग बढाया जाता है। तब श्रमिकों का शोषण बढ जाता है। श्रमिकों को ये सभी प्रकार के परिवर्तन अत्यधिक मात्रा में कष्ट पहुंचाते है। इन सब के फलस्वरूप अशान्ति और असंतोष का फैलाव होता है। इन सब के बावजूद वर्ग संधर्ष द्वारा शक्ति लायी जाती है और समाजवाद का उदय होता है। वर्ग – संघर्ष को मार्क्सवाद द्वारा सामाजिक परिवर्तन का माध्यम समझा जाता है और श्रमिक वर्ग के लिए यह परिवर्तन हितकारी होगा। अतः कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक विकास के लिए मार्क्स प्रणाली में वर्ग सघर्ष को माध्यम समझा जाता है।

3. अधिशेष मूल्य सिद्धान्त

मार्क्स के आर्थिक सिद्धान्त में अधिशेष मूल्य सिद्धानत अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साहिने के अनुसार '' अधिशेष मूल्य सिद्धान्त श्रम का सिद्धानत का विस्तृत रूप है। श्रम सिद्धान्त इस बात की व्याख्या करता है कि श्रम वस्तु के मूल्य का मुख्य सिद्धान्त है अल्पकाल में मांग और पूर्ति द्वारा वस्तु का मूल्य निर्धारित होता है लेकिन दीघकाल में वस्तु का मूल्य, वस्तु के उत्पादन में प्रयोग श्रम मात्रा द्वारा होता है। लेकिन दीर्घकाल में वस्तु का मूल्य वस्तु के उत्पादन मे प्रयोग श्रम मात्रा द्वारा होता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि अधिशेष मूल्य कैसे पैदा होता है और पूंजीपति वर्ग द्वारा इसको कैसे हड़प लिया जाता है।

लाभ या अधिशेष किसी भी वस्तु का बाजारी मूल्य और श्रमिकों को जो मजदूरी दी जाती है उसका अन्तर होता है। बाजारी मूल्य अधिक होता है और श्रमिकों को मजदूरी कम दी जाती है। यह लाभ पूंजीपतियों द्वारा हडप लिया जाता है परन्तु मार्क्स के अनुसार यह श्रमिकों को मिलना चाहिए। शोषण ज्यादा होगा यदि यह अधिशेष ज्यादा होगा तो और शोषण कम होगा यदि यह अधिशेष कम होगा तो उत्पाद मूल्य को मार्क्स में तीन भागों में बांटा है।

1. स्थिर पूंजी (constant Capital - C)
2. चलपूंजी (Variable Capital - V)
3. अधिशेष मूल्य (Surplus Value - S

उत्पाद मूल्य = C+V+S

1 अधिशेष मूल्य दर (The rate of surplus value)

अधिशेष मूल्य दर या शोषण की मात्रा अधिशेष मूल्य (S) और चल पूंजी (V) का अनुपात है।

Surplux Value = $\frac{S}{V}$

(b) लाभ दर (The rate of Profit)

लाभ दर अधिशेष मूल्य और कुल पूंजी का अनुपात होता है। कुल पूंजी में स्थिर पूंजी और चल पूंजी दोनों को शामिल किया जाता है।

$$P=\frac{S}{C+V}$$

(c) पूंजी की मूलभूत बचना (The Organic composition)

पूंजी की मूलभूत रचना स्थिर पूंजी और चल पूंजी के अनुपात द्वारा ज्ञात की जा सकती है।

Organic composition of Capital=C/V

रिजर्व सेना की धारणा

लाभ अधिकतम करना किसी भी पूंजीपति का मुख्य उद्देश्य होता है। लाभ, अधिशेष के अनुसार होता है अर्थात अधिशेष पर निर्भर करता है। जब नई – नई तकनीको का प्रयोग किया जाता है तो श्रम बचत उपकरणों का प्रयोग किया जाता है और श्रम – बचत उपकरणों के कारण मानव शक्ति का प्रयोग कम हो जाता है और मार्क्स ने इसे अतिरिक्त मानव शक्ति को ही रिजर्व सेना कहा है।

कार्ल मार्क्स मॉडल की मुख्य बाते

1 यह सिद्वान्त रिकार्डो सिद्धान्त से उत्पन्न हुआ है।

2 यह विकास का सिद्धान्त है।

3 कार्ल मार्क्स की पुस्तक Das Capital प्रमुख पुस्तक है।

4 इसमें उत्पादन की विधि तथा उत्पादन के ढांचे को प्रमुख माना गया है।

5 इस सिद्धानत में ऐतिहासिक भौतिकवाद की व्याख्या की गई है।

6 इसमें वर्ग – संघर्ष द्वारा विकास की व्याख्या की गई है।

7 इसमें अधिशेष मूल्य सिद्धान्त का वर्णन किया गया है। विकास के लिए।

8 इसमें चल और अचल पूंजी दोनो को शामिल किया गया है।

9 पूंजी की मूलभूत रचना का वर्णन किया गया है।

10 इस सिद्धान्त में रिजर्व सेना की धारणा का उल्लेख किया गया है।

(d) कुल उत्पाद को C+V+S द्वारा बताया गया है।

C = चल पूंजी

V = अचल पूंजी

S = अधिशेष

आलोचनाएं

पूंजीवादी विकास के लिए कार्ल मार्क्स के सिद्धान्त को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया था फिर भी उनके विरोधियों ने मार्क्स के सिद्धान्त की आलोचना की है।

1 ऐतिहासिक भौतिकवाद की व्याख्या

इतिहास के आर्थिक तत्वों द्वारा व्याख्या इतिहास की भौतिकवादी धारणा द्वारा की जाती है कि आर्थिक तत्वों द्वारा मानवीय क्रियाएं प्रभावित होती है जबकि इस आधार पर इस सिद्धान्त की कडी आलोचना का शिकार होना पडा है कि मानवीय क्रियाएं आर्थिक ही नही अनार्थिक क्रियाएं भी प्रभावित होती है।

2 लाभ के घटने की व्याख्या

जान राबिन्सन ने बताया है कि मार्क्स की लाभों के घटने की प्रवृति की व्याख्या स्पष्ट नही है। मार्क्स का कहना है कि ज्यों – ज्यों विकास अग्रसर होता है, त्यों – त्यों पूंजी की संगठित संरचना में वृद्धि होती है जो लाभों की दर को घटा देती है।

3 वर्ग – संघर्ष की व्याख्या

मार्क्स ने व्याख्या की है कि किसी भी समाज में दो वर्ग होते है श्रमिक वर्ग आौर पूंजीपति वर्ग। पूंजीपति वर्ग द्वारा श्रमिक वर्ग का शोषण किया जाता है और इस प्रकार से वर्ग – संघर्ष उत्पन्न होता है लेकिन वर्ग संघर्ष की धारणा की आलोचना की है कि श्रमिक वर्ग और पूंजीपति वर्ग आपस में भाई –चारे की भावना से कार्य करते है और कोई वर्ग – संघर्ष उत्पन्न नही होता है।

4 रक्षित सेना

मार्क्स ने बताया है कि दिन – प्रतिदिन बढती जा रही प्रौद्योगिकीय प्रगति के साथ – साथ औद्योगिक रिजर्व सेना बढती जा रही है परन्तु प्रौद्योगिकीय विकास के कारण लंबे समय में कुल मांग तथा आय बढा कर रोजगार के अपेक्षाकृत अधिक अवसर उत्पन्न किए जाते है।

5 स्थैतिक विश्लेषण

शुम्पीटर के अनुसार मार्क्स ने गत्यात्मक प्रक्रिया का विश्लेषण करने का प्रयत्न किया है परन्तु यह ठीक नही है। उन्होनें विकास प्रकिया की जिस प्रकार से व्याख्या की है वह एक स्थैतिक विश्लेषण प्रतीत होता है।

3.5 शुम्पीटर का सिद्धान्त

जोसेफ एलोई शुम्पीटर ने जर्मन भाषा मे।प्रकाशित The Theory of Economic Development में पहली बार 1911 में अपना सिद्धान्त दिया। The Theory of Economic Development का 1934 में अंग्रेजी संस्करण आया। शूम्पीटर के बाद में अन्य पुस्तके ''व्यापार चक्र'' तथा पूंजीवाद, समाजवाद, प्रजातन्त्र भी आयी जिनमें उन्होनें अपने विचारों में सुधार करके आर्थिक विकास के बारे में पूर्ण व्याख्या की है। सबसे पहले शुम्पीटर कल्पना करता है कि अर्थव्यवस्था स्थिर सन्तुलन में ना हो। इस प्रकार की स्थिति में ना कोई लाभ होता है ना ही कोई बचत, ना ही किसी भी प्रकार का निवेश होता है। शुम्पीटर ने बताया है कि जिनकी संभावनाएं स्थिर अवस्था में होती है। वहां पर विकास उन नए संयोगों को कार्यान्वित करने में होता है।

शुम्पीटर के अनुसार विकास के लिए कुछ आवश्यक तत्व इस प्रकार है

शुम्पीटर ने अपने विकास सिद्धान्त में वृत्तीय प्रवाह को भी बताया है। वृत्तीय प्रवाह भी विकास सिद्धान्त के कुछ तत्व अत्यन्त महत्वपूर्ण बताये है जिनका वर्णन इस प्रकार है।

1. चक्रीय प्रवाह

जब हम हमेशा जहां से कार्य आरम्भ करते है तो स्थिति चक्रीय प्रवाह कहलाती है। उसी ढंग से वही वस्तुएं प्रति वर्ष उत्पन्न होती है। समान्तर मांग और पूर्ति होती रहती है हर मांग के लिए कही ना कही पूर्ति होती है और हर पूर्ति के लिए कही ना कही मांग उत्पन्न होती है। अतः ये आर्थिक क्रियाएं होती रहती है। चक्रीय प्रवाह मे। पूर्ण प्रतियोगिता होती है।यहां पर लागते प्राप्तियों के बराबर होती है और कीमते औसत लागत के बराबर होती है। शूम्पीटर ने बताया है कि साधनों की अनैच्छित बेरोजगारी नही होती और लाभ और ब्याज

शून्य होते है। उन्होनें अर्थव्यवस्था मे।गतिहीन सन्तुलन की बात कही है। चक्रीय प्रवाह में साधनों के बेकार होने की सम्भावना बहुत ही कम होती है। अर्थात ना के बराबर होती है क्योंकि आर्थिक प्रणाली में उत्पन्न स्तर इष्टतम और प्रयोग अधिकतम होता है गतिहीन ढांचे में चक्रीय प्रवाह का प्रयोग होता है। उसको गतिशील और विकास के लिए किस प्रकार प्रयोग किया जाए। इन सब के लिए प्रवाह प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता होती है जिस प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता होती है वह परिवर्तन चक्रीय प्रवाह द्वारा किस प्रकार लाये जाये। इन परिवर्तनों की चर्चा आविष्कार में होगी।

2. आविष्कार

वर्तमान में हम जिस भी उत्पादन प्रणाली का प्रयोग कर रहे है उस उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन, आविष्कार कहलाता है। उद्यमी अपने लाभ को अधिकतम करने तथा लागतो को कम से कम किया जा सके इनके लिए अपनी उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन लाते है। शूम्पीटर की विकास घारणा का आविष्कार से अत्यधिक जुडाव है। विकास प्रक्रिया तब शुरू होती है जब अर्थव्यवस्था में चक्रीय प्रवाह गडबडा जाता है। आविष्कार किस प्रकार से होते है अर्थात आविष्कार को कैसे पहचाना जाता है। आविष्कार को कई प्रकार से जाना जा सकता है जैसे – 1. नए बाजारों को कैसे खोला जाए। 2. कच्चे माल को कैसे खोजा जाए। 3. उपभोक्ता जिन भी वस्तुओं से अनजान हो उन वस्तुओं को खोजा जाए। 4. उत्पादन को नए साधनों से कैसे उत्पन्न किया जाए।

विकास प्रक्रिया को शुरू करने के लिए इन सभी तत्वों के संयोग का होना आवश्यक है। ये विकास प्रक्रिया उद्यमी तथा आविष्कारी द्वारा की जाती है। शुम्पीटर ने विकास के लिए उद्यमकर्ता को नायक समझा है। उद्यमी भविष्य को जान कर कार्य करता है। पूंजीपति द्वारा धन उपलब्ध कराया जाता है तथा उद्यमी द्वारा इस धन को प्रयोग किया जाता है। उन्होनें विकास के लिए नेतृत्व को महत्वपूर्ण माना है।

3. उद्यमी की भूमिका

शुम्पीटर ने उद्यमी की भूमिका को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना है। उद्यमी को सब बातों का ज्ञान होता है जैसे कि 1. नई चीजों के लिए किस प्रकार प्रवेश पाया जा सकता है। 2. आविष्कार की सम्भावना कैसे होती है। 3. आविष्कार के लिए वित्त का समायोजन कैसे किया जाए। 4. लागत को कैसे उठाया जाए। इन सब के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना। इन सब के कारण व्यापार चक्र भी उत्पन्न होते है। अतः विकास के लिए व्यापार चक्र अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। व्यापार चक्र विकास का अन्तिम पडाव माना जाता है।

4. व्यापार – चक्र या संकट

शुम्पीटर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक आर्थिक विकास का सिद्धान्त में व्यापार – चक्र की व्याख्या की है। उन्होनें बताया है कि संकट के वास्तव कारण केवल आर्थिक क्षेत्र के ही नही बल्कि आर्थिक क्षेत्र से बाहर के भी हो सकते है। शूम्पीटर ने कहा है कि संकट एक प्रक्रिया है जिस द्वारा आर्थिक जीवन अपने आप को नई परिस्थितियों के अनुसार ढालता है। '' व्यापार – चक्र की कार्यविधि से पता चलता है स्फूर्ति तथा मंदी कैसे पनपति है और उनका पतन किस प्रकार से होता है। उद्यमी द्वारा जो बैंक से धन उधार लिया जाता है। उस धन का किस प्रकार से निवेश किया जाता है। शुम्पीटर ने बताया है कि पूंजीवाद न '' केवल अपने संस्थागत ढांचे को नष्ट करता है बल्कि एक और प्रणाली अर्थात् समाजवाद को पैदा करने में परिस्थितियां पैदा करता है, जो कई रूप धारण कर सकता है।

शुम्पीटर मॉडल की मुख्य बाते इस प्रकार है :

1 इनका विकास सिद्धान्त 1911 में The Theory fo Economic Development में प्रकाशित हुआ।

2 इस पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण 1934 में आया।

3 शुम्पीटर पूंजीवाद के प्रशंसक थे।

4 इन्होनें दो महत्वपूर्ण तत्व माने है – नव प्रर्वतन तथा उद्यमी
5 शूम्पीटर ने एक ऐसी अर्थव्यवस्था की कल्पना की है जो स्थिर संतुलन में हो।
6 उन्होनें निजी सम्पति को महत्व दिया है।
7 उन्होनें बैंकिग संस्थाओं को अत्यधिक महत्व दिया है।
8 यह मॉडल तीन चीजों पर टिका हुआ है।
   a. वृत्तीय प्रवाह
   b. विकास और नवप्रवर्तन
   c. संकट
9 लाभों को लागतों के ऊपर आधिक्य माना है।
10 शूम्पीटर ब्याज को भी विकास की देन मानता है।
11 नवप्रवर्तन से होने वाले गत्यात्मक परिवर्तनों के कारण लाभ उत्पन्न होते है।

आलोचनाएं

1. अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाओं के लिए

शूम्पीटर का विकास मॉडल अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाओं पर लागू नही होता। अल्पविकसित देशों में आविष्कार कर्त्ताओं का वर्ग छोटा होता है क्योंकि इन देशों में बाजार का आकार छोटा होता है और उनके लाभ भी कम होते है परन्तु ऐसा माना गया है कि निर्धन देशों में सरकार स्वंय सब से बडा आविष्कारकर्ता होती है।

2. बैंको को महत्व

शूम्पीटर मॉडल में बैंक साख को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है परन्तु नवप्रवर्तकों द्वारा केवल बैंकों से ही शाख प्राप्त नही किया जाता बल्कि अन्य साधन जैसे शेयर, डिबेन्चर आदि द्वारा. धन प्राप्त किया जाता है।

3. आविष्कारी की भूमिका

शूम्पीटर के विकास मॉडल में आविष्कारी को अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका में बताया गया है। जबकि इस मॉडल की इस आधार पर आलोचना की गई है। बडे व्यापार प्रतिष्ठानों में आविष्कार कर्त्ताओं का काम बहुत से व्यक्तियों द्वारा किया जाता है।

4. चक्रीय प्रवाह

शूम्पीटर विकास मॉडल मे।विकास महत्वपूर्ण माना गया है कि चक्रीय प्रवाह नवप्रवर्तनों द्वारा होते है जबकि चक्रीय प्रवाह वित्तीय, प्राकृतिक कारणों द्वारा भी हो सकते है।

5. वास्तविक बचत

शूम्पीटर ने अपने विकास मॉडल मे।वास्तविक बचतों की भूमिका की अवहेलना की है। उन्होनें बताया है कि जो भी आविष्कार किए जाते है वो बैकों से उधार लेकर किए जाते है जबकि आविष्कारों में की गई वास्तविक बचतों द्वारा भी आविष्कार किए जा सकते है। अतः शूम्पीटर ने वास्तविक बचतों की अवहेलना की है।

3.6 सारांश

परम्परावादी अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक संवृद्धि और विकास में पूजी निर्माण के महत्व की व्याख्या की है। परम्परावादी अर्थशास्त्रियों ने अबंध नीति की बात की है जिसमें की अपने आप चलने वाली अर्थव्यवस्था पर विकास रखा जाता है। पूंजी निर्माण बचत पर निर्भर करती है। परन्तु मजदूर वर्ग बचत नही कर सकता है। केवल पूंजीपति और जमींदार वर्ग ही बचत कर पाते है। परन्तु अधिक पूंजी निर्माण होने से लाभ घटने की प्रवृति पाई जाती है। क्योंकि पूंजीपतियों मे प्रतियोगिता होने लगती है। अन्त में अर्थव्यवस्था में स्थिर अवस्था आ जाती है। जब एक बार लाभ घटने लगता है तो यह क्रम लगातार चलता रहता है। इस प्रकार अर्थव्यवस्था में लाभ शून्य हो जाते है। मजदूरी दर निर्वाह स्तर पर पहूंच जाती है।

3.7 मुख्य शब्दावली

- **विकास के दूत –** एडम स्मिथ ने उत्पादक, किसान तथा व्यापारियों को विकास के दूत माना है। इन तीनों के कार्य एक – दूसरे से सम्बन्धित है।
- **स्थिर अवस्था –** एडम स्मिथ के अनुसार एक ऐसी अवस्था आ जाती है कि जब अर्थव्यवस्था स्थिर हो जाती है। स्थिर का यह अर्थ नही है कि बिल्कुल ही रूक जाती है। वृद्धि तो होती है लेकिन स्थिर दर से होती है।
- **रिकार्डो सिद्धान्त** – यह मॉडल वितरण से सम्बन्धित है। यह कृषि पर आधारित है। इसमें तकनीकी परिवर्तन को स्थिर माना है। अल्पकाल में मजदूरी दर को कम या ज्यादा किया जा सकता है लेकिन दीर्घकाल मे यह निर्वाह – स्तर के बराबर होगी।
- **इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या –** मार्क्स द्वारा इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या का प्रयोग यह बताने के लिए किया गया है की आर्थिक परिस्थितियों द्वारा सभी ऐतिहासिक घटनाएं प्रभावित होती है।
- **अधिशेष मूल्य दर** – अधिशेष मूल्य दर या शोषण की मात्रा अधिशेष मूल्य और चल पूंजी का अनुपात है।
- **लाभ दर** – लाभ दर अधिशेष मूल्य और कुल पूंजी का अनुपात होता है। कुल पूंजी में स्थिर पूंजी और चल पूंजी दोनों को शामिल किया जाता है।
- **पूंजी की मूलभूत रचना –** पूंजी की मूलभूत रचना स्थिर पूंजी और चल पूंजी के अनुपात द्वारा ज्ञात की जा सकती है।
- **रिजर्व सेना** – जब नई – नई तकनीकों का प्रयोग किया जाता है तो श्रम बचत उपकरणों का प्रयोग किया जाता है और श्रम बचत उपकरणों के कारण मानव – शक्ति का प्रयोग कम हो जाता है। मार्क्स द्वारा इस अतिरिक्त मानव – शक्ति को रिजर्व सेना कहा गया है।
- **चक्रीय प्रवाह –** जब हम हमेशा जहां से कार्य आरम्भ करते है तो स्थिति चक्रीय प्रवाह कहलाती है। उसी ढंग से वही वस्तुएं प्रति वर्ष उत्पन्न होती है।

3.8 अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न

1 एडम स्मिथ, रिकार्डो, कार्ल मार्क्स, शूम्पीटर .... अर्थशास्त्री है।
2 परम्परावादी अर्थशास्त्री .... को मानते है।
3 परम्परावादी अर्थशास्त्रीयों के अनुसार लाभ .... को प्रेरित करता है।
4 सभी परम्परावादी अर्थशास्त्री पूंजी – संचय की प्रक्रिया के अन्त में .... को देखते है।
5 |n Enquiry into the NatureAnd Causes of the Wealth of Nations ....की पुस्तक है।
6 एडम स्मिथ के अनुसार वृद्धि की शुरूआत .... से होती है।
7 विकास के दूत की बात .... ने कही
8 The Principle of Political EconomyAnd Tanation पुस्तक .... की पुस्तक है।
9 बंटवारे का सिद्धान्त .... का है।
10 रिकार्डो का नियम .... तथा .... पर आधारित है।
11 कृषि योग्य भूमि पर हमेशा .... लागू होता है।
12 रिकार्डो द्वारा .... को स्थिर माना गया है।
13 रिकार्डो मुक्त व्यापार के .... पक्ष में थे।
14 रिकार्डो का सिद्धान्त .... सिद्धान्त है।
15 मार्क्स का सिद्धान्त .... से सम्बन्धित है।
16 दास कैपीटल पुस्तक .... की है।

17 कार्ल मार्क्स द्वारा .... तथा .... दोनो प्रकार की पूंजी का प्रयोग किया गया है।

18 अतिरिक मूल्य की व्याख्या .... द्वारा की गई।

19 अधिशेष मूल्य = S/________

20 लाभ दर (P) = $\frac{S}{- + V}$

21 पूंजी की मूलभूत रचना = C/----------

22 शूम्पीटर .... के प्रशंसक थे।

23 The Theory of Economic Development .... की पुस्तक थी।

24 शूम्पीटर के सिद्धान्त के मुख्य घटक .... तथा .... है।

25 शूम्पीटर द्वारा .... को भी विकास की देन माना गया है।

3.9 अपनी प्रगति जानिए के उत्तर

1 क्लासिकल

2 अबन्द नीति

3 निवेश

4 स्थिर अवस्था

5 एडम स्मिथ

6 कृर्षि

7 एडम स्मिथ

8 रिकार्डो

9 रिकार्डो

10 सीमान्त नियम तथा अतिरेक नियम

11 घटते प्रतिफल का नियम

12 तकनीकी परिवर्तन

13 पक्ष में

14 प्रावैगिक

15 विकास

16 कार्ल मार्क्स

17 चल तथा अचल

18 कार्ल मार्क्स

19 V

20 C

21 V

22 पूंजीवाद

23 शूम्पीटर

24 आविष्कार तथा उद्यमी

25 ब्याज

3.10 अभ्यास हेतु प्रश्न

लघू उत्तरीय प्रश्न

1 पूंजी संचय से क्या अभिप्राय है ?
2 श्रम – विभाजन क्या है ?
3 प्राकृतिक – नियम क्या है ?
4 स्थिर – अवस्था से क्या अभिप्राय है ?
5 वर्ग – संघर्ष से आप क्या समझते है ?
6 अधिशेष मूल्य क्या है ?
7 लाभ दर से क्या अभिप्राय है ?
8 पूंजी की मूलभूत रचना से क्या अभिप्राय है ?
9 रिजर्व सेना की धारणा क्या है ?
10 चक्रीय प्रवाह से क्या अभिप्राय है ?
11 आविष्कार क्या है ?
12 उद्यमी को परिभाषित करे ?
13 व्यापार – चक्र से क्या अभिप्राय है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1 एडम स्मिथ सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या करे ?
2 रिकार्डो सिद्धानत की आलोचनात्मक व्याख्या करे ?
3 कार्ल माक्स की इतिहासिक भौतिकवादी सिद्धान्त की व्याख्या करे ?
4 शूम्पीटर के सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या करे ?

3.11 आप ये भी पढ़ सकते है एवम् सन्दर्भ सूची

- Ahuja, H.L. (2017). Development Economics (Ist Edition). New Delhi S. Chand & Company Pvt. Ltd.
- Jhingan, M.L. (2004). The Economics of DevelopmentAnd Planning (4 th edition). New Delhi : Vrinda publication Pvt. Ltd. Hindi medium
- Puri, V.K. & Mishra, S.K. (2019). Indian Economy (37th edition). Mumbai : Himalaya Publishing House Pvt. Ltd.
- Mishra, S.K. & Puri, V.K. (2006). Economics of DevelopmentAnd Planning (12th edition). Mumbai : Himalya Publisnig House
- Singh, S.P. (2007). Economic DevelopmentAnd Planing (21st Edition). New Delhi : S.Chand & Company Ltd. (Hindi Medium)
- Todaro, M.P. & Smith, S.C. (2012). Economic Development (11th Edition). Boston :Addision - Wesley
- Thirlwal,A.P. (2006). Growth & Development (8th Edition). Palgrave Macmillan. Hampsnire
- Taneja, M.L. & Myer, R.M. (2014). Economics of Development & Planning (2nd Edition). Jalandhar. Vishal Publishing Co. (Hindi Medium)

इकाई – 4

संवृद्धि मॉडल

इकाई की रूपरेखा

4.0 परिचय

4.1 इकाई के उद्देश्य

4.2 हैराड और डोमार के मॉडल – संतुलन मे।अस्थिरता

4.3 नव क्लासिकी संवृद्धि मॉडल

4.3.1 सोलो का संवृद्धि मॉडल

4.3.2 मीड का संवृद्धि मॉडल

4.4 जॉन राबिन्सन का पूंजी – संचय सिद्धान्त

4.5 कैल्डोर का संवृद्धि मॉडल

4.6 सारांश

4.7 मुख्य शब्दावली

4.8 अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न

4.9 अपनी प्रगति जानिए के उत्तर

4.10 अभ्यास हेतू प्रश्न

4.11 आप ये भी पढ सकते है

4.0 परिचय

हम सभी समष्टि अर्थशास्त्र में क्लासिकी अर्थशास्त्रियों और केन्जीयन और केन्ज जैसे अर्थशास्त्रियों के योगदान को भली भांति जानते है। केन्ज ने अर्थव्यवस्था में मांग पक्ष का ज्यादा महत्व बताया जबकि परम्परावादी अर्थशास्त्रियों ने पूर्ति पक्ष का ज्यादा महत्व बताया। परन्तु हैरोड – डोमार जैसे अर्थशास्त्रियों ने बताया कि अर्थव्यवस्था में पूर्ति पक्ष और मांग पक्ष दोनों का समान महत्व है। पूर्ति पक्ष के अधिक या कम होने से और इसी तरह से मांग वक्र के अधिक या कम हो जाने से अर्थव्यवस्था का संतुलन बिगड जाता है। या तो अर्थव्यवस्था मंदी के दौर में चली जाती है और या फिर तेजी के दौर में चली जाती है। जिससे की पूर्ण रोजगार की स्थिति नही रह पाती है। जबकि हम अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार मान कर चल रहे थे। इस असंतुलन का कीमतों पर भी प्रभाव पडता है। इससे कीमते या तो कमी की तरफ जाती है और या फिर कीमतों में बढोतरी होती है। इस इकाई में हम तीन प्रकार के मॉडल का अध्ययन करेगें। पहला हैरोड – डोमार, दूसरा नव – क्लासिकी सिद्धान्त और तीसरा कैम्ब्रिज सिद्धान्त। इन सिद्धान्तों का प्रतिपादन अलग – अलग अर्थशास्त्री ने किया है।

4.1 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है।

1 हैरोड – डोमर मॉडल का अध्ययन करना।

2 नव – क्लासिकी सिद्धान्त का अध्ययन करना।

3 कैम्ब्रिज सिद्धान्त का अध्ययन करना।

4.2 हैरोड–डोमर के मॉडल – संतुलन में अस्थिरता

इस वृद्धि मॉडल को दो अलग – अलग अर्थशास्त्रियों के नाम से एक साथ जोडा जाता है। इन दोनो अर्थशास्त्रियों ने अपने मॉडल अलग – अलग लेकिन एक साथ प्रतिपादित किए थे। हैरोड तथा डोमार ने एक उन्नत पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के लिए वृद्धि मॉडल तैयार किए है। इनका मुख्य उद्देश्य अर्थव्यवस्था की वृद्धि के लिए मुख्य अर्थात आवश्यक दशाओं की व्याख्या करने का रहा है। इस मॉडल में उन्होने केन्ज के विश्लेषण को आधार बनाया है। और कुछ मान्यताएं या निष्कर्ष परम्परावादी अर्थशास्त्रीय के भी लिए है। उन्होनें केन्ज के माडल का विस्तार किया है। दोनों अर्थशाऱ्त्रीयों ने बताया है कि किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए दीर्घकालीन समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए। उन्होने बताया की दीर्घकाल में हमारे सामने क्या – क्या समस्याएं आएगी और कैसे उन्हे दूर किया जाएगा। हैराड ने बताया है कि केन्ज ने बचत को अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक नही माना है। डोमर ने कहा है की केन्ज ने निवेश की पूर्ण प्रभाव की व्याख्या नही की है। हैरोड तथा डोमर के मुख्य विचार यह था कि अर्थव्यवस्था मे पूर्ण रोजगार की सतत् वृद्धि को मन्दी और तेजी के बिना कैसे लाया जा सकता है। इन दोनों ने अपने विश्लेषण की व्याख्या करने के लिए केन्ज की तरह समष्टिगत विश्लेषण पर अधिक ध्यान दिया है। प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रीयों ने पूजीं सचयं के लिए क्षमता वृद्धि को अति आवश्यक माना था जबकि मांग पक्ष को उतना महत्व नही दिया गया था और केन्जीयन अर्थशास्त्रीय ने मांग पक्ष को अति आवश्यक माना है। उन्होने क्षमता वृद्धि को आवश्यक नही बताया है। हैरोड तथा डोमर ने किसी अर्थव्यवस्था की सतत् वृद्धि के लिए इन दोनो को एक साथ जोड दिया है। और इन दोनो को एक साथ रखना ही इस माडल की सबसे बडी विशेषता है।

मान्यताएं

1 इन माडल मे मुक्त अर्थव्यवस्था को माना गया है।

2 इस माडल मे बन्द अर्थव्यवस्था अर्थात विदेशी व्यापार तथा अनुदान की भूमिका को नजर अन्दाज किया गया है।

3 ब्याज की दरों के परिवर्तन को नही माना गया है।

4 समय – अन्तराल को संतुलन के लिए आवश्यक नही माना गया है।

5 औसत बचत प्रवृति और सीमान्त बचत प्रवृति दोनों बराबर है।

6 प्रत्येक बचत और निवेश उसी वर्ष की आय से सम्बन्धित माने जाते है।

7 उत्पादन के लिए पूंजी और श्रम के अनुपात को स्थिर माना गया है।

8 सामान्य कीमत स्तर को स्थिर माना गया है।

9 पूंजीगत वस्तुओं का मूल्यह्रास नही होता है।

10 स्थिर प्रतिफल का नियम लागू होता हैं

11 वास्तविक एवम् अनुमानित बचत और निवेश आपस में बराबर है।

हैरोड संवृद्धि मॉडल

केन्ज ने अपने सिद्धान्त मे। कोई जगह नही दी है। केन्ज ने विश्लेषण की हैरोड प्रावैगिक बनाना चाहते थे। हैरोड के अनुसार गुणक एवम् त्वरक में वैवाहिक सम्बन्ध है। हैराड का लक्ष्य अर्थव्यवस्था की सतत् वृद्धि के लिए उपयुक्त दशाओं का पता लगाना था। जिससे की अर्थव्यवस्था ठीक प्रकार से आगे बढ सके। हैराड ने पूर्ण रोजगार को बनाए रखने के लिए रास्ता बताया है।

हैराड ने उससे सम्बन्धित कुछ मान्यताएं ली है।

1 हैराड ने देश की सम्भावित और वास्तविक बचतों को बराबर माना है। अर्थात ।PS=MPS

2 सम्भावित निवेश और वास्तविक निवेश को भी बराबर माना है।

3 इस मॉडल का आधार तटस्थ तकनीक प्रगति को माना गया है।

4 पूंजी – उत्पाद तथा श्रम उत्पाद अनुपात को स्थिर माना गया है।

5 स्थिर प्रतिफल का नियम लागु होता है अर्थात उत्पादन स्थिर अनुपात में बढता है।

6 पूंजी गुणांक को स्थिर माना गया है।

हैराड मॉडल यह व्याख्या करता है कि

1. निरन्तर वृद्धि दर को स्थिर पूंजी उत्पाद अनुपात तथा स्थिर बचत आय अनुपात द्वारा कैसे प्राप्त किया जा सकता है।
2. निरन्तर वृद्धि दर को कैसे बनाया रखा जा सकता है।
3. प्राकृतिक तत्व किसी अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर पर अंकुश लगाते है।

हैराड ने तीन वृद्धि दरों की व्याख्या इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए की है।

1. **वास्तविक वृद्धि दर** – वास्तविक वृद्धि दर को G द्वारा प्रदर्शित किया गया है।
2. **वास्तविक वृद्धि दर** (Actual Growth Rate)

वास्तविक वृद्धि दर को G द्वारा प्रदर्शित किया गया है। अर्थव्यवस्था में वास्तविक मात्रा में जो बचत और निवेश उपलब्ध होता है उनके द्वारा वास्तविक वृद्धि दर का निर्धारण होता है। इसका आय में परिवर्तन ΔY तथा कुल आय Y के अनुपात में की जाती है। जिस दर पर देश विकास कर रहा होता है उसे वास्तविक वृद्धि दर कहते है।

$$G=\frac{\Delta Y}{Y}$$

बचत आय अनुपात तथा पूंजी – उत्पाद वास्तविक वृद्धि दर के निर्धारण के लिए दो आवश्यक तत्व है। यह दर अल्पकालीन चक्रीय परिवर्तनों को प्रकट करती है। समीकरण के रूप में इस प्रकार किया जा सकता है।

$$GC=S$$

G = आय की वृद्धि – दर अर्थात $\Delta Y/Y$; C= सीमान्त पूंजी – उत्पाद अनुपात $\left(\frac{\Delta K}{\Delta Y}\right)$ को दर्शाता है।

S = बचत – आय अनुपात को दर्शाती है। इनकी व्याख्या इस प्रकार से की जा सकती है।

$$G=\frac{\Delta Y}{Y}$$

$$C=\frac{\Delta K}{\Delta Y}=\frac{I}{\Delta Y}\quad [\Delta K=I]$$

G, C&S के मूल्यों को समीकरण 1 मे रखने पर

$$\frac{\Delta Y}{Y}\left(\frac{I}{\Delta Y}\right)=\frac{S}{Y}$$

or $\frac{I}{Y} = \frac{S}{Y}$

or I=S [Dynamic Equilibrium)

इस बराबरी को गतिशील सन्तुलन कहा जा सकता है। यह एक प्रकार से त्वरण सिद्धान्त ही है। इस को एक उदाहरण से समझा जा सकता है। अतः यदि किसी समय आय 4000 करोड रूपये है। बचते 200 करोड रूपये है और पूंजी – उत्पाद अनुपात 4:1 है तो वास्तविक वृद्धि – दर

$G = \frac{S}{C} = \frac{200}{4000} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{80} = 1.25\ \%$ होगी

2. आवश्यक या अभीष्टवृद्धि दर (Warranted Growth Rate)

हैरोड के अनुसार आवश्यक वृद्धि दर विकास की वह दर कहलाती है। जिसे यदि प्राप्त कर लिया जाता है तो उद्यमी ऐसी मानसिक स्थिति मे।आ जाता है कि वे उसी प्रकार से विकास करते रहना चाहेगें। इसमें अर्थव्यवस्था पूर्ण क्षमता पर काम करती है और मशीन तथा मशीन शक्ति का सर्वोतम उपयोग किया जाता है। इसको कई अन्य नाम से भी जाना जा सकता है जैसे पूर्ण रोजगार वृद्धि दर, सम्भावित वृद्धि दर तथा पूर्ण क्षमता वृद्धि – दर समाज में इस प्रकार की विकास दर प्राप्त होने पर कुछ मात्रा में ''अनैच्छिक बेरोजगारी'' रह ही जाती है।

पूंजी उत्पाद अनुपात (Capital – Output Ratio) तथा बचत आय अनुपात (Saving – Income Ratio)

दो मुख्य निर्धारण तत्व है। आवश्यक या अभीष्ट बुद्धि – दर है। इस वृद्धि दर को निम्न समीकरण द्वारा भी समझा जा सकता है।

$G_W\, Cr = S$ या $G_W = \frac{S}{Cr}$

Gw = आवश्यक वृद्धि – दर

Cr = पूंजीगत आवश्यकतायें

S = सीमान्त बचत प्रवृति (MPS)

यह समीकरण सन्तुलन की उन दशाओं को स्पष्ट करता है जो सत्त प्रगति के लिए आवश्यक है। अन्य शब्दों में अर्थव्यवस्था के पूंजी स्टाक का पूर्ण शोषण होता है जब आय में वृद्धि 'विकास की आवश्यक' दर के अनुसार होती है और ऐसा होने पर अर्थव्यवस्था सतत प्रगति के मार्ग पर आरूढ हो जाती है। दूसरे शब्दों में यदि अर्थव्यवस्था G_W की सतत् दर पर प्रगति करना चाहती है जिससे कि उसकी पूर्ण क्षमता का उपयोग हो सके, तो आपको S/ Cr प्रति वर्ष की दर से बढना चाहिये अर्थात

$G_W = \frac{\Delta Y}{Y} = \frac{S}{Cr}$

पूर्ण रोजगार प्राप्त करने के लिए

$G = G_W$ और C=Cr

यह अवस्था स्थाई वृद्धि की अवस्था है। इसका अर्थ है कि स्थाई वृद्धि की अवस्था वह होती है। जब वास्तविक वृद्धि दर उत्पाद वृद्धि दर के बराबर हो अर्थात् आय वृद्धि – दर उत्पाद वृद्धि दर के बराबर है।

वृद्धि की अस्थिरता (Instability of Growth)

जैसा कि बताया गया है कि स्थाई वृद्धि के लिए $G=G_W$ और $C=C_r$ में बराबरी का होना आवश्यक है परन्तु अर्थव्यवस्था में कई कारणों से इस प्रकार की बराबरी का होना आवश्यक नही है। अर्थव्यवस्था ने इस प्रकार की भी स्थिति हो सकती है जब

$G>G_W$ या $C>C_r$

$G<G_W$ या $C<C_r$

जब आय की वृद्धि दर उत्पाद की वृद्धि दर से ज्यादा होती है अर्थात $G>G_W$ तो इसका अर्थ है उत्पाद की पूर्ति उत्पाद की मांग से कम है। इस कारण अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति होती है। जब $C<C_r$ पूंजी की वास्तविक मात्रा, पूंजी की आवश्यक मात्रा से कम होगी तब भी मुद्रा स्फीति की स्थिति उत्पन्न होती है। दूसरी ओर जब $G<G_W$ से कम होती है तो इस अवस्था में आय की वृद्धि दर, उत्पाद वृद्धि दर से कम हो जाती है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि बिक्री के लिए ज्यादा वस्तुएं होती है परन्तु उन वस्तुओं को खरीदने के लिए आय प्राप्त नही होती। इसके कारण अर्थव्यवस्था में अति – उत्पादन की समस्या उत्पन्न हो सकती है क्योंकि मांग की कमी होती है। इन सब के कारण अर्थव्यवस्था में मंदी तथा बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

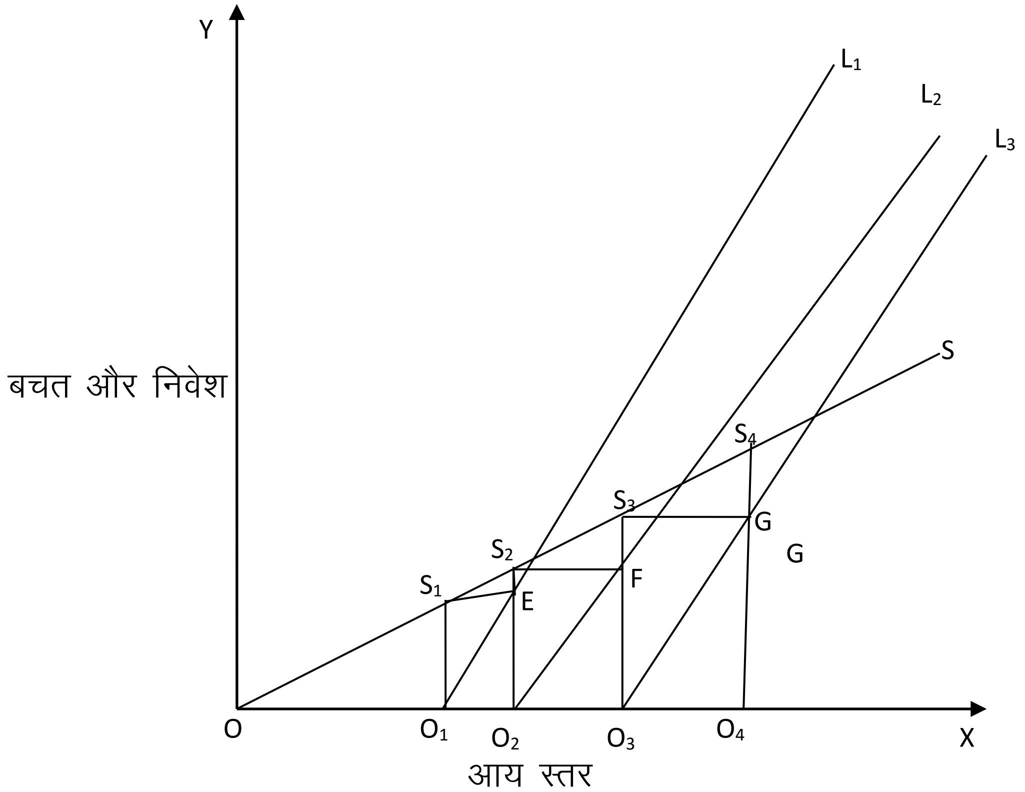

हैरोड के वृद्धि मॉडल को चित्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है। चित्र में OX - अक्ष पर आय स्तर तथा OY - अक्ष पर बचत और निवेश को लिया गया है। OS बचत फलन माना गया है चित्र द्वारा बताया गया है जब आय में O से O_2 तक परिवर्तन होता है तब इस परिवर्तन पर S_1 बचत के बराबर होने के लिए I_1 निवेश को प्रोत्साहन मिलता है। यह प्रोत्साहन मिलने पर यह O_3 तक आय – स्तर को बढाता है। इसी प्रकार निवेश फलन

O_1L_1 से बढकर O_2L_2 हो जाता है। इसी प्रकार यह चक्र निरन्तर चलता रहता है। अतः कहा जा सकता है कि निवेश गुणक में कोई परिवर्तन न होने पर बचतों का अनुपात जितना अधिक होगा सन्तुलन बनाये रखने की खातिर पर्याप्त निवेश को प्रेरित करने के लिए उत्पादन में वृद्धि की दर भी उतनी ही अधिक होगी।

इस विवरण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सत्त वृद्धि के लिए $G=G_W$ और $C=C_r$ की मुख्य दशाओं का उचित प्रकार से पूरी होनी चाहिए। यदि इस प्रकार की दशाएं पूर्ण हो रही हो तो उद्यमियों को पूंजी की जितनी मात्रा की आवश्यकता है उसके बराबर बचते प्राप्त होती रहेगी जिससे की लगातार विकास होने की सम्भावना हो सकेगी। अतः कहा जा सकता है कि विकास के लिए जो आवश्यक दूर बताई गई है वह एक अर्थव्यवस्था के विकास के लिए अधिकतम दर नही हो सकती। इस प्रकार के उद्देश्य को पूरा करने के लिए हैरड ने विकास की प्राकृतिक दर पर विचार किया है।

3. प्राकृतिक वृद्धि – दर

हैरोड ने प्राकृतिक वृद्धि दर को बारे में व्याख्या की है कि यह उस प्रवृत्ति के बारे में बताता है जिसमें पूर्ण रोजगार बना रहता है। इसे कई अन्य नामों से भी जाना जाता है जैसे वृद्धि की पूर्ण रोजगार दर " या वृद्धि की सामान्य दर"। यह दर कई घटकों पर निर्भर करती है। जैसे कि देश के प्राकृतिक साधन कितनी मात्रा में है। श्रम की मात्रा कितनी है। तकनीकी उन्नति किस प्रकार की है और ये घटक परिवर्तनशील प्रवृत्ति के है इसलिए Gn, S के बराबर हो भी सकती है और नही भी हो सकती है अर्थात

$$G_n C_r = S \text{ या } G_n C_r \neq S \quad \text{------------ (iii)}$$

हैरड वृद्धि माडल में प्राकृतिक वृद्धि दर दो पहलुओं पर व्याख्या करता है और अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पहला यह दीर्घकालीन पूर्ण रोजगार संतुलन वृद्धि दर की व्याख्या करता है इसे उत्पादक क्षमता वृद्धि भी कहा जा सकता है। दूसरा यह हैरड के व्यापार चक्र प्रकिया का वर्णन किया जा सके। इस प्रकार की वास्तविक वृद्धि दर की ऊपरी सीमा निश्चित करता है। हैरड ने प्राकृतिक वृद्धि दर को Gn से प्रदर्शित किया है। अतः Gn को प्राकृतिक दर कहा गया है।

G, Gw, Gn में सम्बन्ध

G, Gw, Gn में सम्बन्ध इस प्रकार से दिखाया जा सकता है कि G, Gw से दूर होता जायेगा यदि G, Gw से अधिक है। (G> Gw) और ऐसा तब तक होता जायेगा जब तक यह Gn से बराबर नही हो जाता। जब G और Gn आपस में बराबर हो जाते है। (G= Gn) तो इसका अर्थ है कि सभी श्रमिकों को जोकि उपलब्ध है को रोजगार मिल रहा है। हैरड ने बताया कि G, Gn दीर्घकाल में ज्यादा नही हो सकता। जब उत्पादन पर स्थिर प्रतिफल का नियम लागू होता है तो श्रम पूर्ण रोजगार स्थिति में तब होगा जब G और Gn (G=Gn) आपस में बराबर होगें। जब श्रम पूर्ण रोजगार में होता है और पूंजी का पूर्ण उपयोग होता है तो इस स्थिति में G, Gw, Gn में बराबरी का होना जरूरी है अर्थात G=Gw=Gn

जोन रोबिन्सन जोकि नवक्लासिकी अर्थशास्त्री थी ने इस परिस्थिति (G=Gw=Gn) को स्वर्ण काल (GoldenAge) माना है। दूसरी ओर जब Gw>Gn या Gw≠Gn अर्थात् जब Gw और Gn बराबर नही होते। जब Gn Gw से कम होता है तब अर्थव्यवस्था में मन्दी होने की प्रवृत्ति हो जाती है और जब Gn Gw से अधिक होता है तब अर्थव्यवस्था में स्फीति जैसी स्थिति पैदा हो जाती है।

डोमर का मॉडल (Domar Model)

हैरड ने बताया कि डोमर का मॉडल उनके मॉडल के सात वर्षो के अन्तराल पर देखा जा सकता है। डोमर ने कीन्स के विश्लेषण में कुछ कमियों को देखा और उन्होनें उन कमियों को दूर करने के लिए इस प्रणाली में

प्रौवैगिक तत्व को शामिल करना आवश्यक समझा है। डोमर ने अल्पकालीन साधनों से दीर्घकालीन समस्याओं का अध्ययन किया है और गुणक, त्वरक एवं पूंजी अनुपातों के द्वारा विकास समस्याओं का अध्ययन किया है कीन्स ने रोजगार को राष्ट्रीय आय का फलन माना है जबकि **डोमर** ने रोजगार को 'राष्ट्रीय आय' एंव उत्पादन – क्षमता के अनुसार का फलन माना है। डोमर के अनुसार कीन्स का सिद्धान्त सन्तुलित विकास की दर के बारे में नही बता पाया। कीन्स ने माना था कि यदि अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की स्थिति को बनाए रखना है तो राष्ट्रीय आय सामूहिक दर से बढनी चाहिए परन्तु डोमर ने इस प्रकार की स्थिति को असम्भव बताया है।

डोमर मॉडल की विशेषताएं

डोमर ने अपना विकास मॉडल बताने से पहले उसके बारे में कुछ मान्यताएं रखी है जो इस प्रकार है।

1. आय का निर्धारण निवेश, गुणक द्वारा करता है। मॉडल को सरलतम बनाने और समझने के लिए बचत – आय अनुपात को स्थिर माना गया है अर्थात

   $Y(t) = \frac{It}{S}$

   Y = उत्पाद को प्रदर्शित करता है।

   I = वास्तविक निवेश

   S = बचत आय अनुपात अर्थात बचत प्रवृत्ति

   T = समय अवधि
2. इस माडल में समय अन्तराल अन्तराल नही लगता।
3. सरकारी हस्तक्षेप नही पाया जाता।
4. सामान्य कीमत – स्तर को स्थिर माना गया है।
5. औसत तथा सीमान्त प्रवृत्ति (APS=MPS) को स्थिर माना गया है।
6. पूंजी गुणांक स्थिर है।
7. निवेश द्वारा उत्पादक क्षमता पैदा हो जाती है और यह भावी सामाजिक औसत निवेश उत्पादकता के अनुकूल होती है। सरलतम बनाने के लिए इसे स्थिर माना गया है।

   इसको σ द्वारा प्रकट किया गया है। उत्पादक क्षमता तथा निवेश के सम्बन्ध को एक समीकरण द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है।

   $\bar{Y}_t - \bar{Y}_{t-1} = \frac{It}{\gamma}$

   $\bar{Y}_t - \bar{Y}_{t-1}$ = 't' समय अवधि में उत्पादक क्षमता में परिवर्तन का घोतक है।

   α= सीमान्त पूंजी – उत्पाद अनुपात है और इसका निर्धारण ' भावी सामाजिक औसत निवेश उत्पादकता के उल्ट है अर्थात्

   $\alpha = \frac{1}{\sigma}$

डोमर ने अपने वृद्धि मॉडल की व्याख्या निवेश के दोहरे स्वरूप के रूप में की है। निवेश एक तरफ तो उत्पादक क्षमता बढाता है और दूसरी तरफ आय की उत्पत्ति का निर्धारण करता है। एक अर्थव्यवस्था में किस प्रकार से निरन्तर वृद्धि प्राप्त की जा सके इस प्रकार का समाधान निवेश के इन दोनों पहलुओं के बारे में बताता है। डोमर ने निवेश के द्वारा कुल पूर्ति तथा कुल मांग के बीच सम्बन्ध स्थापित किया है।

पूर्ति पक्ष

डोमर द्वारा पूर्ति पक्ष का स्पष्टीकरण किया गया है। उन्होनें निवेश की वार्षिक दर को I तथा नयी पूंजी की उत्पादन क्षमता को S के बराबर माना है। ऐसा करने पर I डालर उत्पादन क्षमता IS डालर वार्षिक होगी लेकिन

ऐसा पुरानी मशीनों के स्थान पर नयी मशीनों का उपयोग करने पर हो सकता है। ऐसा करने पर वार्षिक उत्पादन क्षमता IS से कम होगी। डोमर ने इसे $I\sigma$ से बताया है अर्थात

$\Delta Y = I\sigma$ ---------------- (4)

दूसरी ओर निवेश की औसत उत्पादकता $\sigma = \frac{\Delta Y}{I}$ और $I\sigma$ एक अर्थव्यवस्था के उत्पादन में कुल शुद्ध संभाव्य वृद्धि है जिसे सिग्मा प्रभाव भी कहा जाता है।

मांग पक्ष

केन्ज की गुणक प्रक्रिया द्वारा डोमर ने मांग पक्ष की व्याख्या की है। उन्होनें माना है कि राष्ट्रीय आय में वार्षिक वृद्धि ΔY होगी। वह निवेश में वृद्धि ΔI की $\frac{1}{\infty}$ गुणा होगी।

$I = \infty Y$ अथवा $I \frac{1}{\infty}$ = अन्य शब्दों में, $\Delta Y = \Delta I \frac{1}{\infty}$ ---------------- (5)

संतुलन

कुल मांग तथा कुल पूर्ति द्वारा आय का पूर्ण रोजगार संतुलन बनाए रखा जा सकता है। समीकरण 4 और 5 को बराबर रखने पर

इसलिए $\frac{\Delta I}{\infty} = I\sigma$ अर्थात $\frac{\Delta I}{I} = \infty\sigma$ ---------------- (6)

समीकरण 6 से बताया गया है कि यदि हम पूर्ण रोजगार को बनाए रखना चाहते है तब $\frac{\Delta I}{I}$ शुद्ध स्वायत निवेश की वृद्धि दर $\infty\sigma$ के बराबर होनी चाहिए।

हैरड – डोमर मॉडल की सीमाएं

1. **बचत प्रवृत्ति तथा पूंजी उत्पाद – अनुपात का स्थिर न रहना**

   हैराडे और डोमर ने बचत – प्रवृत्ति (α और S) तथा पूंजी – उत्पाद अनुपात (σ) के बारे में बताया है कि ये दोनो चर स्थिर होते है जबकि इनकी इस मान्यता पर आलोचना की गई है। इन दोनों चरों मे।दीर्घकाल में परिवर्तन हो सकता है और ऐसा होने पर सतत विकास की **जो** आवश्यक दशायें होती है उनको ये चर बदल देते है।

2. **कीमते स्थिर नही रह सकती**

   हैरोड – डोमर दोनों अर्थशास्त्रियों ने सामान्य कीमत – स्तर को स्थिर मानकर मॉडल की व्याख्या की है। जबकि व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो समय के साथ कीमते भी बदल जाती है और जब इन कीमतों में परिवर्तन होता है तो ये विकास प्रक्रिया पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है।

3. **स्थिर ब्याज दर**

   हैरोड डोमर ने माना है कि ब्याज दरों में कोई परिवर्तन नही होता जबकि व्यावहारिक रूप में ब्याज की दरे परिवर्तित होती है जिससे निवेश निश्चित रूप से प्रभावित होता है।

4. **सरकारी कार्यक्रमों की उपेक्षा**

   हैराड डोमर में अपने मॉडल की व्याख्या सरकारी कार्यक्रमों की उपेक्षा करके की है। उदाहरण के लिए विकास के कार्यक्रमों को सरकार अपने हाथो में लेकर करे तो हैराड – डोमर मॉडल अवास्तविक बन जायेगा। सरकारी हस्तक्षेप के बिना आर्थिक विकास की सम्भावना नही है।

5. **एक प्रकार की वस्तु**

   हैरोड डोमर ने अपने मॉडल की व्याख्या एक प्रकार की वस्तु लेकर की है। उनकी इस प्रकार की मान्यता की अत्यन्त आलोचना हुई है और कहा गया कि व्यावहारिक जीवन में केवल एक ही प्रकार की वस्तु द्वारा

अर्थव्यवस्था नही चल सकती। उपभोक्ताओं को जीवन चलाने के लिए एक से अधिक वस्तुओं की आवश्यकता होती है।

6. संरचनात्मक विशेषताओं की अवहेलना

हैरोड – डोमर की प्रकृति अत्यधिक समष्टि – परक है। इन दोनों अर्थशास्त्रियों मे।संरचनात्मक विकास की ओर कोई ध्यान नही दिया और इसी आधार पर भी इस मॉडल को आलोचना का शिकार होना पडा।

4.3 नव – क्लासिकी संवृद्धि मॉडल

पिछले अध्याय में हमने हैरोड – डोमर मॉडल का अध्ययन किया है। इस अध्याय में हम मीड और सोलो के नव – क्लासिकी सिद्धान्त का अध्ययन करेंगे। नव – क्लासिकी सिद्धान्त का विचार 1950 और 1960 के दशक में दिया गया था। नव – क्लासिकी सिद्धान्त वृद्धि में पूंजी निर्माण को अधिक महत्व देते है और पूंजी निर्माण के लिए बचत को महत्व दिया गया है। नव – क्लासिकी सिद्धान्त में उत्पादन फलन के निर्धारक तत्व श्रम और पूंजी के लिए गए है। परन्तु हम जानते है कि तकनीकी का भी उत्पादन में अहम रोल होता है। नव – क्लासिकी सिद्धान्त में तकनीक को बहिर्जात चर के रूप में लिया गया है। नव क्लासिकी सिद्धान्त में निम्न उत्पादन फलन को लिया गया है।

$$Y=f(K,AL)$$

$$Y=Af(K,L)$$

A यहां पर कुल साधन उत्पादकता को दिखा रहा है।

4.3.1 सोलो का संवृद्धि मॉडल

नव– क्लासिकी मॉडल में सोलों के मॉडल का नाम प्रमुखता से लिया गया है। इस मॉडल के लिए प्रो0 सोलों का अर्थशास्त्र में नोबल पुरूस्कार प्राप्त हुआ था। यह मॉडल वृद्धि का एक आधारभूत मॉडल माना जाता है। सोलो मॉडल में यह बताता है कि यदि बचत की दरे, घिसावट, श्रम – शक्ति वृद्धि, उत्पादकता की वृद्धि दरे समान हो तो अर्थव्यवस्थाताएं आय के समान स्तर की ओर अभिमुख होगी।

सोलो मॉडल हैरोड – डोमर मॉडल का एक विस्तृत रूप है। जहां हैरोड – डोमर मॉडल में श्रम – पूंजी के स्थिर अनुपात की बात की है। वही सोलो मॉडल में श्रम और पूंजी के स्थानापन्न की बात की गई है। इस मॉडल में तकनीकी परिवर्तन को भी शामिल किया गया है। इस मॉडल में अलग – अलग दो श्रम और पूंजी के घटते प्रतिफल प्राप्त होती है किन्तु संयुक्त रूप से देखे तो श्रम और पूंजी से समान प्रतिफल के नियम से उत्पादन दर बढता है। तकनीकी परिवर्तन वृद्धि को तो प्रभावित करता है किन्तु यह बाहरी तत्वों द्वारा प्रभावित होता है।

इस मॉडल की मान्यताएं निम्नलिखित है

1 कीमतों और मजदूरी में लोचशीलता पाई जाती है।
2 बचत अनुपात स्थिर पाया जाता है।
3 श्रम में वृद्धि स्थिर बाहरी दर से होती है।
4 उत्पादन के निर्धारक तत्व श्रम और पूंजी है।
5 स्थिर प्रतिफल का नियम लागू होता है।
6 प्रतिस्थापन्न की लोच इकाई के बराबर है।
7 तकनीकी परिवर्तन तटस्थ है।
8 श्रम और पूंजी को प्रतिस्थापित किया जा सकता है।
9 श्रम पूर्ण रोजगार में होता है।

10 उत्पादन के साधनों को उनकी सीमान्त उत्पादकता के अनुसार भुगतान किया जाता है।

11 समस्त बचत का निवेश होता है।

ओलो ने अपने मॉडल में यह बताया है कि यदि तकनीकी गुणाकं परिवर्तित हो तो पूंजी – श्रम अनुपात में इस तरह से परिवर्तन होता है की समय के साथ संतुलन की दिशा में बढते रहते है।

मॉडल की व्याख्या

सोलो के मॉडल की गैर – गणितीय और गणितीय दोनों प्रकार से व्याख्या हो सकती है। हम यहां पर दोनो तरह से व्याख्या करेगें।

1. गैर – गणितीय व्याख्या

सोलो मॉडल के अनुसार पूंजी – श्रम और पूंजी – उत्पाद अनुपात की परिवर्तनशीलता के कारण पूंजी – श्रम अनुपात में इस तरह से परिवर्तन होता है कि अर्थव्यवस्था संतुलन की तरफ बढती है। यदि शुरूआत दौर में पूंजी – श्रम अनुपात संतुलित अवस्था में पूंजी – श्रम अनुपात से ऊंचा है तो पूंजी बढने की दर श्रम शक्ति बढने की दर से कम होगी। इस प्रकार परिवर्तन होते हुए हम एक संतुलित अनुपात की तरफ बढ जाऐगे।

प्रो0 सोलो ने बताया है कि अर्थव्यवस्था में औद्योगिक क्षेत्र और कृषि क्षेत्र को माना गया है। औद्योगिक क्षेत्र में पूंजी संग्रह करने की दर श्रम बढने की दर से अधिक होती है। श्रम – पूंजी के अनुसार में परिवर्तनशीलता के कारण रोजगार की अधिक सम्भावना होती है। जैसा कि हम जानते है कि विकासशील देशों में छिपी हुई बेरोजगारी पाई जाती है। जिससे की श्रमिकों की मजदूरी भी कम होती है और उत्पादकता भी कम होती है। ऐसी हालत में पूंजी – श्रम अनुपात को बढाकर कृषि क्षेत्र में छिपी हुई बेरोजगारी को दूर किया जा सकता है। यह निष्कर्ष विकासशील देशों के नीतिगत मुद्दों के लिए उचित लगता है।

सोलो मॉडल बह – संतुलन अवस्था की भी बात करता है। अस्थिर संतुलन की अवस्था में उत्पाद वृद्धि दर और पूंजी – श्रम अनुपात के बराबर नही होती है। इस तरह से एक अस्थिर संतुलन में पूंजी – श्रम अनुपात ऊंचा होता है और दूसरे अस्थायी संतुलन में पूंजी – श्रम अनुपात नीचा होता है। अब हम मान कर चलते है कि अस्थिर संतुलन ज्यादा पूंजी – श्रम अनुपात से शुरू हो रहा है। इसका प्रभाव यह पडेगा की पूंजी – गहन तकनीक की सहायता से वृद्धि दर ज्यादा हो जाऐगी। परन्तु यदि अस्थिर संतुलन नीचे पूंजी – श्रम अनुपात से शुरू होती है तो वृद्धि दर कम गति से बढेगी। इस तकनीक को श्रम – गहन तकनीक भी कहते है। इससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते है की अगर कोई देश पूंजी प्रधान है तो वहां ज्यादा पूंजी के प्रयोग से अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर बढ जाती है। परन्तु किसी देश में पूंजी – श्रम अनुपात अगर कम है तो उस देश में वृद्धि दर उत्पाद की कम होती है, परन्तु श्रम – गहन तकनीक का प्रयोग करके बेरोजगारी को दूर किया जा सकता है।

2. गणितीय व्याख्या

जैसा कि हम जानते है कि पिछले भाग में हमने नव – क्लासिकी सिद्धान्त के अध्ययन फलन का प्रयोग किया था। यह इस प्रकार है

$$Y = AF(K,L)$$

यहां पर। तकनीकी गुणांक है।

परन्तु सोलो मॉडल प्रति व्यक्ति आय की बात करता है।

इसलिए हम श्रम की मात्रा से Y को भाग देगें।

$$\frac{Y}{L} = AK\left(\frac{K}{L}, \frac{L}{L}\right)$$

$$=AF\left(\frac{K}{L},1\right)$$

$$=AF\left(\frac{K}{L}\right)$$

हम यह मान कर चलते है कि तकनीकी परिवर्तन अभी शून्य है।

$$\frac{Y}{L} = F\left(\frac{K}{L}\right)$$

इस प्रकार यह समीकरण प्रति व्यक्ति आय को पूंजी – श्रम अनुपात का फलन मानते है। उसको हम इस प्रकार से भी लिख सकते है। की $\frac{Y}{L} = y$ और $\frac{Y}{L} = k$

इस प्रकार Y=f(k)

इस समीकरण से यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि k का मान बढने पर प्रति व्यक्ति आय बढती है। इस समीकरण को चित्र की सहायता से भी दिखा सकते है।

चित्र – 4.1

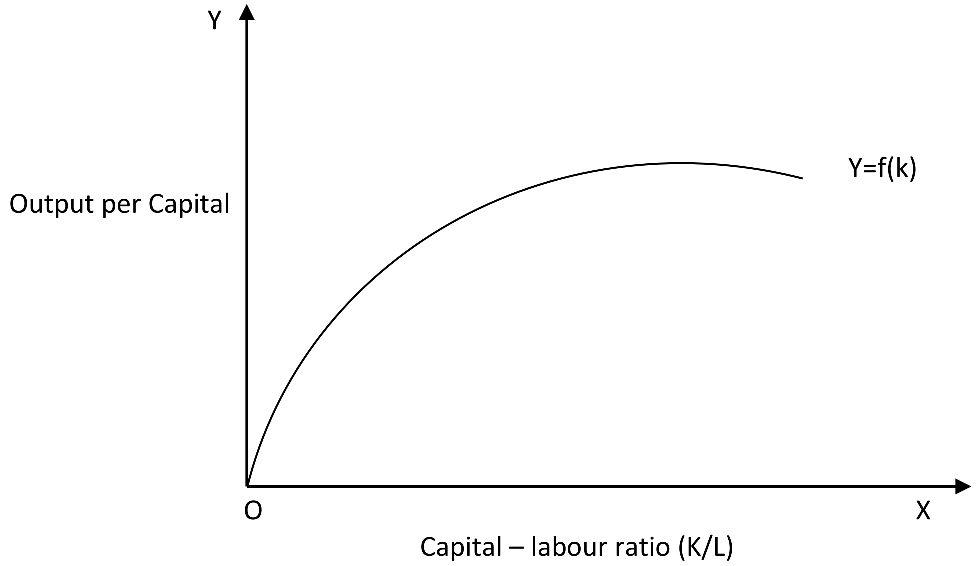

चित्र – 4.1 में X- अक्ष पर प्रति व्यक्ति पूंजी ली गई है और Y- अक्ष पर प्रति व्यक्ति आय को लिया गया है। OY वक्र यह दिखा रहा है कि प्रति व्यक्ति पूंजी बढने पर प्रति व्यक्ति उत्पाद बढ रहा है।

सोलो मॉडल की आधारभूत वृद्धि समीकरण

नव क्लासिकी सिद्धान्त में बताया गया है कि वृद्धि को बढाने के लिए बचत की एक अहम भूमिका होती है। डैरोड – डोमार की तरह सोलो मॉडल में भी बचत की दर को कुल आय का एक भाग माना गया है।

S=sy

S = बचत

s=बचत का प्रतिशत

Y=कुल आय

यहां पर औसत बचत प्रवृत्ति और सीमान्त बचत प्रवृति को बराबर मान लिया गया है। उपरोक्त समीकरण को इस प्रकार से भी लिख सकते है।

S=sy

sy=sf(k,L)

सोलो ने नियोजित निवेश को नियोजित बचत के बराबर माना है। जोकि पूंजी स्टाक में वृद्धि दर के बराबर होता है। निवेश एक वर्ष में कुल पूंजी स्टॉक में वृद्धि को कहते है। इसमें से घिसावट को घटा दिया जाता है।

$\Delta K = I = sy - D$

ΔK = पूंजी स्टॉक में परिवर्तन

I = निवेश

D = घिसावट

घिसावट यहां पर कुल पूंजी का भाग ही होता है। उसको हम यहां पर प्रतिशत के रूप में ले लेते है।

D = dk

इस प्रकार $\Delta K = sy - dk$

$sy = \Delta k + dk$

Δk को k से गुणा और भाग करने के बाद

$sy = k.\frac{\Delta K}{K} + dk$

जैसा कि हम जानते है कि स्थिर अवस्था संतुलन के लिए पूंजी की वृद्धि $\left(\frac{\Delta K}{k}\right)$ को श्रम की वृद्धि दर के बराबर होना चाहिए। श्रम की वृद्धि दर को हम $\frac{\Delta L}{K} = n$ मान कर चलते है। इस प्रकार स्थिति अवस्था के लिए $\frac{\Delta K}{\Delta K} = n$ होना चाहिए

$\frac{\Delta L}{K} = n$ को समीरकण में रखने के बाद

sy=k.n+dk

sy=(n+d)k

उपरोक्त समीकरण स्थिर अवस्था को प्राप्त करने की समीकरण है। यह समीकरण बता रही है कि स्थिर अवस्था संतुलन के प्राप्ति के लिए बचत दर को आय से गुणा करने के बाद यह श्रम की वृद्धि दर और घिसावट की दर को जोडकर पूंजी से गुणा करने के बाद जो मान प्राप्त होता है, उसके बराबर होना चाहिए। यह अवस्था स्थिर – अवस्था संतुलन की अवस्था होगी। इस प्रकार (n+d)k हमारा वांछित निवेश होगा।

वृद्धि प्रकिया

उपरोक्त समीकरण से यह स्पष्ट है कि अगर नियोजित बचत नियोजित निवेश से ज्यादा हो और प्रति व्यक्ति आय को स्थिर रखा जाए तो श्रमिकों के लिए पूंजी अधिक हो जाऐगी। प्रति व्यक्ति पूंजी बढने से श्रमिकों की उत्पादकता बढ जाऐगी। इस तरह से अर्थव्यवस्था स्थिर संतुलन अवस्था से ज्यादा दर से बढने लग जाऐगी।

परन्तु यह वृद्धि दर हमेशा ही बढती नही रहेगी क्योंकि पूंजी के प्रतिफल घटते रहते है। परन्तु हम पहले से प्रति व्यक्ति आय के ऊंच स्तर पर पहुंच जाते है। इस प्रकार पूंजी प्रति श्रमिक भी बढ जाऐगी। स्थिर अवस्था की समीकरण sy=(n+d)k को श्रमिकों की संख्या से भाग देने पर

$$\frac{sy}{L}=(n+d)\ \frac{k}{L}$$

$\frac{Y}{L}$ यहां पर प्रति व्यक्ति आय और $\frac{k}{L}$ प्रति व्यक्ति पूंजी है।

sy=(n+d)k

यह समीकरण प्रति व्यक्ति सन्दर्भ में आधारभूत नवक्लासिकी वृद्धि समीकरण है।

वृद्धि प्रकिया और स्थिर अवस्था वृद्धि दर

चित्र – 4.2 यह दिखा रहा है कि अर्थव्यवस्था कैसे स्थिर अवस्था संतुलन के तरफ बढ रही है। sy वक्र बचत और प्रति व्यक्ति पूंजी के बीच सम्बन्ध दिखा रहा है। (n+d) वक्र वांछित निवेश की दर को दिखा रहा है।

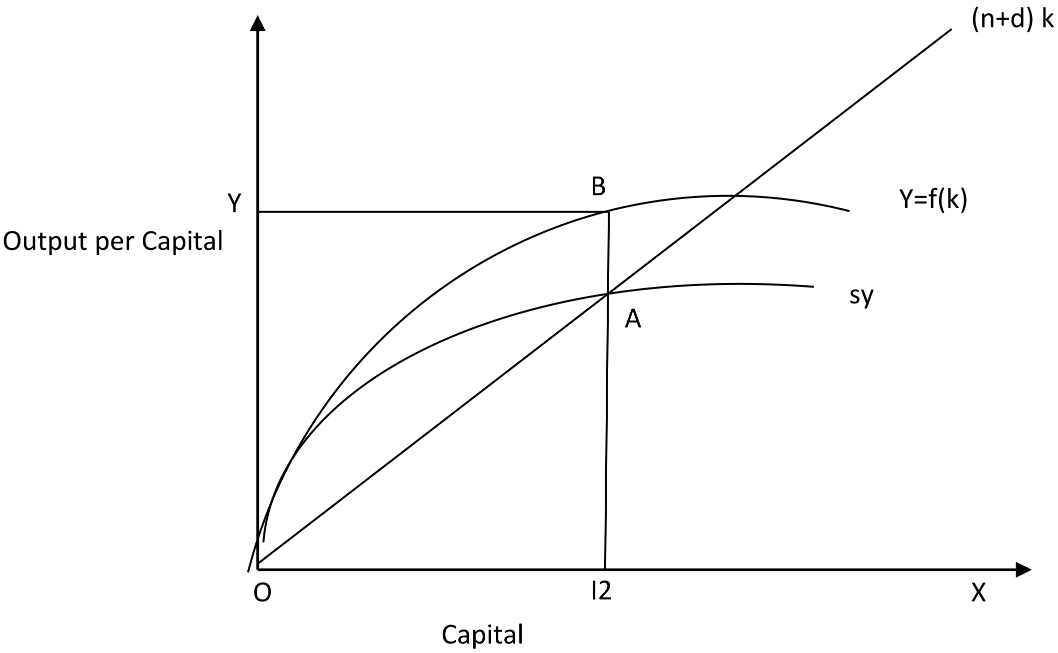

4.3.2 मीड का संवृद्धि मॉडल

आर्थिक क्षेत्र में अत्यंत महत्त्वपूर्ण विकास परिवर्तन नव–प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने जब आर्थिक क्षेत्र में प्रवेश किया उससे पहले हो चुके थे। समाज में जो भी विकास तथा आविष्कार हुए उनका महत्त्व समझ तथा स्पष्ट आने लगा था। अर्थव्यवस्थाओं के विकास की सम्भावना स्पष्ट होने लगी थी। जो भी वास्तविक मजदूरी दरें थी वो जीवन– निर्वाह स्तर से ऊपर उठ गयी थी। लाभ की दर में लगातार वृद्धि होने लगी थी। इस प्रकार आर्थिक विकास की विकासशील प्रवृत्ति ने 'स्थिर अवस्था' की धारणा को निर्मूल सिद्ध कर दिया था। मीड द्वारा वृद्धि–सिद्धांत को प्रतिपादित किया गया। इस वृद्धि सिद्धांत में आय, पूँजी, श्रम तथा तकनीक की भूमिका तथा महत्त्व पर अत्यंत बल दिया गया। मीड द्वारा अपने माडल में उन शर्तों को बताया जिनके द्वारा वृद्धि सम्भव है। इसी कारण, इस माडल को निरन्तर वृद्धि सिद्धांत भी कहा जाता है।

मान्यताएं

1. मीड मॉडल की मुख्य मान्यता बन्द अर्थव्यवस्था का पाया जाना है।
2. सरकार द्वारा आर्थिक क्रियाओं में किसी प्रकार का कोई हस्तक्षेप नही किया जाता।
3. पूंजी केवल मशीनों के रूप में ही पाई जाती है।
4. इस मॉडल की एक मुख्य मान्यता यह भी है कि जो भी उत्पादन फलन है वह स्थिर प्रतिफल नियम के अनुसार है।
5. पूर्ण प्रतियोगिता भी पाई जाती है।
6. एक अर्थव्यवस्था मे।केवल दो पदार्थ उपभोग वस्तुएं तथा पूंजी पदार्थ का उत्पादन होता है।
7. पूर्ण प्रतिस्थापन पाई जाती है उपभोग तथा पूंजी पदार्थो में।
8. मशीनो की मुरम्मत तथा प्रतिस्थापन की आवश्यकता होती है। मशीनों की घिसाई के कारण।
9. श्रम – मशीनरी अनुपात का अल्पकाल तथा दीर्घकाल में परिवर्तन हो सकता है।

नव – प्रतिष्ठित सिद्धान्त का सामान्य रूप

1. पूंजी संचय का सिद्धान्त

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों द्वारा माना गया है कि उत्पादन के लिए एक स्थिर अनुपात में श्रम और पूंजी का होना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु नव – प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों द्वारा माना गया है कि उत्पादन के लिए इस स्थिर अनुपात की कोई आवश्यकता नही है। अतः उनके द्वारा बताया गया है कि पूंजी संचय में वृद्धि श्रम में वृद्धि न करके केवल पूंजी द्वारा भी की जा सकती है। इनके द्वारा मुख्य रूप से दो बातों को ध्यान में रखा गया – 1. यदि पूंजी संचय में वृद्धि होती है तो राष्ट्रीय आय और प्रति – व्यक्ति आय में भी वृद्धि होती है, बेशक से जनसंख्या में किसी भी प्रकार की कोई वृद्धि ना हुई हो। 2. पूंजी की सीमान्त उत्पादकता भी घटने लगती है जब एक दिए हुए प्राविधिक – स्तर पर पूंजी संचय में वृद्धि होती है तो।

नव – प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों द्वारा मुख्य रूप से यह भी माना गया है कि बचतों का पूंजी संचय के लिए होना अत्यन्त आवश्यक है। बचतों को किस प्रकार से बढाया जाए यह दो बातो पर निर्भर करता है। – 1. ब्याज की दर और आय का स्तर। पूंजी संचय के लिए ये दोनो अत्यन्त आवश्यक है। नव – प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों द्वारा ब्याज की दर व आय की मात्रा और बचत की पूर्ति में कार्यात्मक सम्बन्ध माना गया है। अतः कहा जा सकता है कि बचत की दर की मात्रा अधिक होगी यदि ब्याज की दर व आय का स्तर यदि ऊंचा होता है तो इनके द्वारा यह भी माना गया है है कि निवेश में वृद्धि करनी है तो ब्याज की दर का नीचा होना आवश्यक है। नव – प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों द्वारा माना गया है कि पूंजी – निर्माण की प्रकिया में अन्त में पूंजी – संचय का क्रम रूक जाता है और इसके कारण अर्थव्यवस्था में स्थिर अवस्थ की स्थिति आ जाती है। पूंजी संचय की प्रक्रिया को ब्याज की दर और पूंजीगत निवेश द्वारा निम्न चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

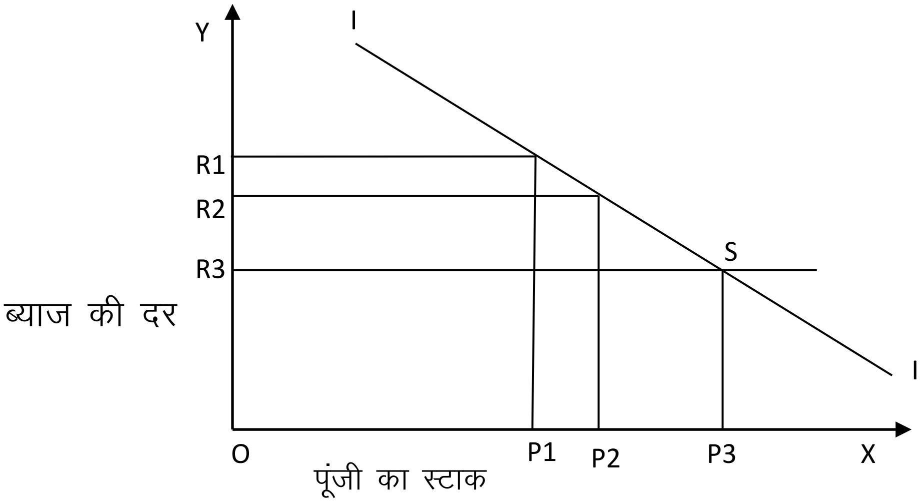

चित्र में OX- अक्ष पर पूंजी का स्टॉक बताया गया है तथा OY- अक्षपर ब्याज की दर को बताया गया है। II रेखा द्वारा पूंजीगत विनियोग के विभिन्न स्तरों पर प्राप्त होने वाले प्रतिफल की दरों को बताया गया है। रेखा के ढाल से स्पष्ट होता है कि जैसे – जैसे पूंजी का आर्थिक मात्रा में विनियोग होने लगता है। उसका प्रतिफल उत्तरोतर कम होता जाता है। जैसे – जैसे ब्याज की दर में कमी होने लगती है तो पूंजी के स्टाक की मात्रा में वृद्धि होने लगती है। सबसे पहले जब ब्याज की दर OR_1 है तो पूंजी के स्टॉक की मात्रा OP_1 है तथा जब ब्याज की दर कम होकर OR_2 हो जाती है तो पूंजी के स्टाक में वृद्धि हो कर यह OP_2 हो जाती है तथा इसके बाद भी यदि ब्याज की दर और भी ज्यादा कम होकर OR_3 हो जाती है तो पूंजी के स्टॉक की मात्रा और भी ज्यादा बढकर OP_3 हो जाती है। OR_3 ब्याज की दर तथा OP_3 पूंजी के स्टॉक पर वह स्थिति है जहां पर न तो निवेश करना लाभदायक है और न ही बचत करना। अतः यह वह स्थिति है जो पूंजी संचय तथा आर्थिक विकास की दृष्टि से 'स्थिर अवस्था' कही जायेगी।

परन्तु यह नही समझ लेना चाहिए की अर्थव्यवस्था में स्थायी रूप से यह स्थिति बनी ही रहेगी। नव – प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों द्वारा इस अवस्था को अस्थायी माना गया है। उनके द्वारा माना गया है कि जैसे – जैसे प्राविधिक प्रगति होती जाती है तो निवेश और विकास के रास्ते बढते जाते है और ऊपरी चित्र में जो S बिन्दु है। यह आगे की ओर सरक जाता है जिसे अगले चित्र में इस प्रकार स्पष्ट किया गया है।

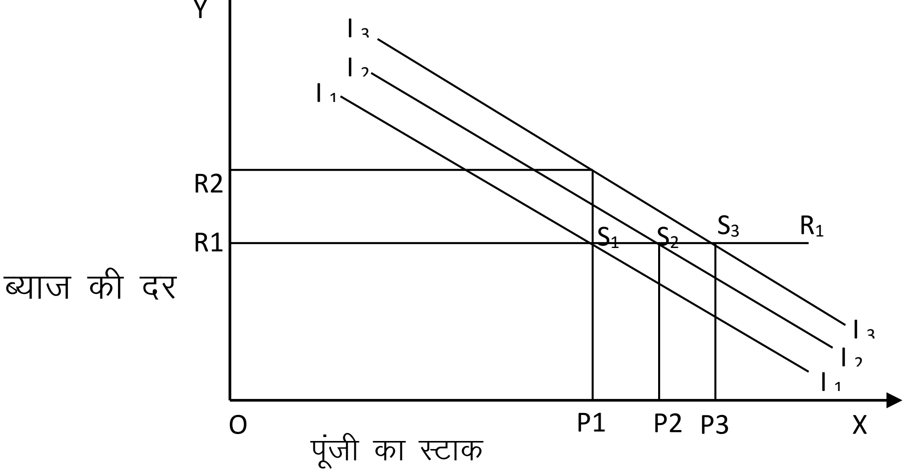

चित्र में OX- अक्ष पर पूंजी का स्टॉक बताया गया है तथा OY- अक्ष पर ब्याज की दर को बताया गया है। पहले चित्र में जो S बिन्दु पर स्थिर अवस्था थी वह सरक कर S_3 बिन्दु पर पहुंच गई है। यह स्थिरता की दूसरी अवस्था कहलाती है। इसी प्रकार से यह क्रम आगे की ओर लगातार चलता रहता है।

2. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और आर्थिक विकास

आर्थिक विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को नव – प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों द्वारा अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है। नव – प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों द्वारा माना गया है की जो भी श्रम – विभाजन तथा विशिष्टीकरण, बाजार को बढावा मिलना, उत्पादन के साधनों का जो भी सही प्रकार का बंटवारा होता है। ये सभी कार्य अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार द्वारा ही सम्भव है। इन सब के कारण अत्यन्त मात्रा में राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है और इस कारण अर्थव्यवस्था विकास की ओर बढने लगती है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण निर्यातों को बढावा मिलता है और जो वस्तुएं घरेलू देश में बनाने में आर्थिक लागत आती है तो उनका आयात कर लिया जाता है। इस प्रकार की प्रक्रिया के कारण देश आर्थिक विकास की ओर बढता है।

3. राष्ट्रीय आय

राष्ट्रीय आय की गणना करने के लिए कई साधनों जैसे भूमि अथवा प्राकृतिक साधनों को स्थिर मान लिया जाता है। किसी भी एक वर्ष में जब राष्ट्रीय आय मे।वृद्धि को ज्ञात करना हो तो जबकि K, L और t में वृद्धि होती है तो राष्ट्रीय आय को निम्न प्रकार से व्यक्ति किया जाता है।

$\Delta Y = MPP_K \, \Delta K + MPP_L \, \Delta L + \Delta Y^1$

Δ = प्रत्येक स्थिति में वृद्धि को बताता है।

MPP_L = श्रम का सीमान्त उत्पादन

MPP_K = पूंजी का सीमान्त उत्पादन

ΔL= श्रम की मात्रा में वृद्धि

ΔK= मशीनरी के स्टॉक मे।वृद्धि

Y^1= तकनीकी प्रगति के कारण वार्षिक उत्पादन की वृद्धि दर

4. प्रति व्यक्ति आय

जब अर्थव्यवस्था की वास्तविक वृद्धि का पता लगाना है तो यह आय – वृद्धि – दर की अपेक्षा प्रति व्यक्ति वास्तविक आय की वृद्धि – दर से चलता है। प्रति व्यक्ति वास्तविक आय की वृद्धि – दर

$Y - l = U_K + Q_L + r - L$

$= U_K - L + QL + r$

$= U_K - (1-Q)L + r$

$= U_K - (1-Q)L + r$ में $[-(1-Q)L]$ द्वारा घटते प्रतिफल की प्रवृति का पता चलता है जबकि भूमि एवं पूंजी की दी हुई मात्रा पर श्रम की मात्रा बढती है।

5. कान्तिक वृद्धि दर

जब सतत वृद्धि दर को ज्ञात करना हो तो जो आय की वृद्धि दर होती है तथा पूंजी स्टॉक की वृद्धि दर होती है ये आपस में बराबर होनी चाहिए। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि $\Delta Y / Y = \Delta K / K$। प्रोफेसर

मीड द्वारा माना गया है कि जब आय की वृद्धि – दर व पूंजी – स्टॉक की वृद्धि – दर आपस में बराबर होती है तो यह पूंजी स्टॉक की एक क्रान्तिक वृद्धि दर कहलाती है।

निरन्तर वृद्धि की शर्ते

1. यदि पूंजी का श्रम के स्थान पर प्रयोग किया जाता है तथा श्रम का पूंजी के स्थान पर प्रयोग किया जाता है तो कुल उत्पादन में कोई परिवर्तन नही होना चाहिए। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि साधनों में प्रतिस्थापन की लोच इकाई के बराबर होती है।
2. सभी साधनों के प्रति तकनीकी प्रगति तटस्थ पाई जाती है।
3. लाभ का अनुपात, मजदूरी का अनुपात और किराये का अनुपात जोकि बचत के रूप में किया जाता है स्थिर रहते है।

अतः ऊपर जिन शर्तो का वर्णन किया गया है उनके कारण उत्पाद की जो वृद्धि दर होती है वो उस स्तर तक बढ पायेगी जो निरन्तर वृद्धि का प्रतीक होगा।

आलोचनाएं

1. इस मॉडल की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मान्यता पायी जाती है की बन्द अर्थव्यवस्था है जबकि वास्तविक जीवन में ऐसा होना सम्भव नही है।
2. यह मॉडल काल्पनिक कहानी जैसा प्रतीत होता है इसमें अनिश्चितता को कोई महत्व नही दिया गया।
3. इस मॉडल को अधिक मात्रा में गणितीय रूप दिया गया जोकि आम लोगों की समझ से बाहर की बात है।
4. इस मॉडल की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मान्यता है कि पूंजी केवल मशीनों के रूप में पाई जाती है। जबकि वास्तविक जीवन में केवल मशीनों को ही पूंजी नही समझा जाता अन्य को भी पूंजी में शामिल किया जाता है।
5. इस मॉडल की इस आधार पर भी आलोचना की गई है कि उत्पादन फलन केवल पैमाने के स्थिर प्रतिफल के अनुसार ही नही होते।
6. इस मॉडल की आलोचना पूर्ण प्रतियोगिता के आधार पर भी की गई है।

4.4 जान राबिन्सन का पूंजी – संचय सिद्धान्त

खेल के पूंजीवादी नियमों पर आधारित आर्थिक वृद्धि का एक मॉडल श्रीमति जान राबिन्सन द्वारा अपनी प्रसिद्ध पुस्तक The Accumulation of Capital मे।दिया है। जान राबिन्सन के माडल की नीव कई अन्य मॉडलों के कारण पडी। कई अन्य मॉडल को इस मॉडल के मुख्य स्त्रोत माना गया है। इस मॉडल को मार्क्स के मॉडल से '' विस्तृत पुनः उत्पादन'' के बारे मे।पता चला तथा केन्ज से आय सिद्धान्त के बारे में पता चला। केन्ज के इस सिद्धान्त में मुख्य रूप से प्रभावी मांग तथा स्फीति अन्तर के बारे में पता चलता है। की पूंजीपतियों द्वारा बचत की जाती है तथा श्रमिकों द्वारा अपनी सारी आय को खर्च कर लिया जाता है। विकसल से पूंजी सिद्धान्त के बारे मे।पता चला तथा हैरड से सन्तुति विकास तथा तटस्थ तकनीकी प्रगति की धारणाएं प्राप्त होती है। इन सभी माडलों के कारण ही जान – राबिन्सन के पूंजी – संचय सिद्धान्त की नीव पडी है। न्यू – केन्जीयन विचारो।से पता चलता है कि जो भी आय वितरण में परिवर्तन होने के कारण आने वाले समय में बचत तथा निवेश में समन्वय होता है। इस सिद्धान्त में विकास का इंजन पूंजी को माना गया है। अतः कहा जा सकता है कि इस सिद्धान्त का मुख्य बल पूंजी संचय पर ही है। पूंजी संचय पर बल होने के कारण यह मॉडल पूंजी का संचय वृद्धि मॉडल के नाम से भी जाना जाता है।

मान्यताएं

इस मॉडल की मुख्य मान्यताएं इस प्रकार है :

1. इस मॉडल की मुख्य मान्यताएं है कि उत्पादन के केवल दो ही साधन है – श्रम और पूंजी। इनके द्वारा प्राप्त उत्पादन फलन को निम्न प्रकार से दर्शाया जा सकता है।

   $Y= f(N,K)$

   यहां $Y=$ कुल उत्पाद

   $N=$ श्रम

   $K=$ पूंजी
2. जो कुल आय प्राप्त होती है उसे श्रम तथा पूंजी में ही बांटा गया है। ऐसा इस कारण है क्योंकि उत्पादन करने के लिए केवल ये ही दो साधन है। श्रम में मजदूरों को शामिल किया गया है जबकि पूंजी में उनको शामिल किया गया है जिनको लाभ प्राप्त होते है।
3. कीमत – स्तर में किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन नही होता।
4. श्रमिकों को जो भी मजदूरी प्राप्त होती है उसे उपभोग करने पर खर्च कर लिया जाता है क्योंकि श्रमिकों द्वारा किसी भी प्रकार की कोई बचत नही की जाती।
5. एकाधिकार शक्ति के तत्व, आय वितरण के माध्यम से बचत को प्रोत्साहित करते है।
6. निश्चित तकनीक द्वारा उपभोग तथा निवेश पदार्थो का उत्पादन किया जाता है।
7. उद्यमियों के जो भी लाभ होते है वो सभी निवेश कर दिये जाते है।

मॉडल की व्याख्या

राष्ट्रीय आय को मजदूरी और लाभ का जोड माना जाता है। इसलिए जो आय वितरण होता है उसे निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है।

$$py=WN+\pi pK \qquad \text{------------------------} \ (1)$$

$p=$ औसत कीमत स्तर

$y=$ शुद्ध राष्ट्रीय आय

$W=$ शुद्ध नकद मजदूरी

$N=$ कार्यरत श्रमिकों की संख्या

$\pi=$ कुल लाभ

$K=$पूंजी निवेश

.जब समीकरण को आधिक वास्तविक बनाना हो तो समीकरण को p से विभाजित कर दिया जाएगा। इस प्रकार की प्रक्रिया करने पर निम्न समीकरण प्राप्त होगा।

$$Y = \frac{W}{p} N + \pi K \qquad \text{-----------------} \ (2)$$

या $$\pi K = Y - \frac{W}{p} .N$$

या $$\pi = \frac{Y - \frac{W}{P} .N}{K}$$

दाई ओर के अंश तथा हर को N से विभाजित करने से निम्न समीकरण प्राप्त होगा।

$$\pi = \frac{\frac{Y}{N} - \frac{W}{P}}{K/N} \quad \text{------------- (3)}$$

यहां पर Y/N = श्रम की उत्पादकता

W/p = वास्तविक मजदूरी दर

K/N = पूंजी श्रम अनुपात

सुनहरी युग

एक अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास निर्धारित करने के लिए पूंजी संचय के साथ – साथ एक अन्य घटक जनसंख्या की वृद्धि – दर भी है जिसे $\Delta N/N$ से प्रकट किया जाता हैं एक अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार सन्तुलन में तब होगी यदि जनसंख्या की वृद्धि – दर तथा पूंजी की वृद्धि – दर आपस में बराबर होते है। जॉन राबिन्सन द्वारा इस समानता को सुनहरी युग का नाम दिया गया है। इस सन्तुलन को निम्न प्रकार से व्यक्ति किया जाता है।

$$\frac{\Delta K}{K} = \frac{\Delta N}{N} \quad \text{(सुनहरी युग)}$$

स्थायी सन्तुलन को सुनिश्चित किया जाता है इन दोनों में वृद्धि होने पर सुनहरी युग की अवस्था में किसी भी प्रकार की अनिश्चित बेरोजगारी तथा पूंजी – भण्डार के अर्थ – उपभोग की सम्भावना नही होती।

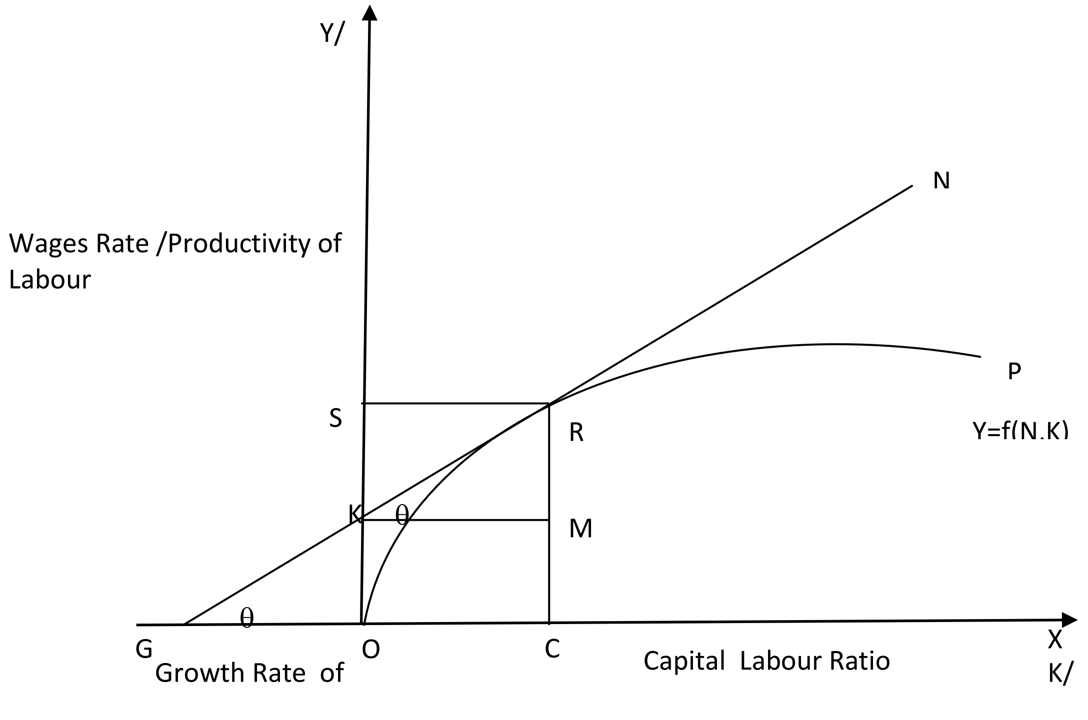

हैरड के अनुसार सुनहरी युग से अभिप्राय G,Gw तथा Gn में समानता से है। अतः कहा जा सकता है कि G=Gw=Gn सुनहरी युग की व्याख्या चित्र द्वारा भी की जा सकती है जोकि इस प्रकार है।

चित्र में X - अक्ष पर मूल बिन्दु से दाई ओर पूंजी – श्रम अनुपात को प्रकट किया गया है तथा X - अक्ष पर ही मूल बिन्दु के बाई ओर श्रम वृद्धि दर को प्रकट किया गया है। Y - अक्ष पर मजदूरी दर तथा श्रम – उत्पादकता को प्रकट किया गया है। OP वक्र उत्पादन वक्र है। इस OP वक्र पर उत्पादन फलन $Y=f(N,K)$ का प्रतीक है। इस वक्र पर प्रत्येक बिन्दु अनुपात को बताता है जिसके अनुसार पूंजी तथा श्रम को जोड कर उत्पाद के निश्चित स्तर का उत्पादन होता है। उत्पादन वक्र उच्चतम स्तर पर जा कर चपटी हो जाती है। जोकि धटते प्रतिफल के लागू होने का प्रतीक मानी जाती है। सन्तुलन की अवस्था R बिन्दु पर होती है क्योंकि इस बिन्दु पर GN रेखा का ढलान तथा OP रेखा का ढलान आपस में बराबर है। इसलिए R बिन्दु पर सुनहरी युग की अवस्था है। इस R बिन्दु पर पूंजी की वृद्धि दर $\left(\frac{\Delta K}{K}\right)$ तथा श्रम वृद्धि दर $\left(\frac{\Delta N}{N}\right)$ आपस में बराबर है।

असन्तुलन की स्थिति

जान राबिन्सन द्वारा एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न किया गया है कि यदि एक अर्थव्यवस्था सुनहरी युग के सन्तुलन पथ से अलग हो जाती है तो सन्तुलन को किस प्रकार से पुनः प्राप्त किया जा सकता है। अतः सन्तुलन प्राप्त करने का माध्यम क्या है। पहली सम्भावना है जब अर्थव्यवस्था में निम्न असमानता हों।

$$\frac{\Delta N}{N} > \frac{\Delta K}{K}$$

यह धारणा तो बताई गई है। मुख्यता अल्पविकसित देशों में पाई जाती है। लाभ – मजदूरी सम्बन्ध के व्यवहार पर सुनहरी युग सन्तुलन निर्भर करता है। मुद्रा मजदूरी के कम होने का मुख्य कारण श्रम की अधिकता का पाया जाना है। यदि कीमत स्तर स्थिर अवस्था में हो तो वास्तविक मजदूरी भी कम हो जाती। जब वास्तविक मजदूरी में कमी होती है तो लाभ की मात्रा बढ जाती है। लाभ की मात्रा के बढने पर पूंजी वृद्धि दर भी बढेगी। यह बढी हुई पूंजी की वृद्धि दर अन्ततः श्रम पूर्ति वृद्धि के बराबर हो जायेगी। इस प्रकार दोनो वृद्धि दरों में समानता स्थापित होगी और अर्थव्यवस्था सुनहरी युग का अनुभव करेगी।

एक दूसरी सम्भावना भी पैदा हो सकती है अर्थव्यवस्था में इस दूसरी सम्भावना द्वारा अर्थव्यवस्था में असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और यह असन्तुलन की स्थिति निम्न असमानता के कारण होती है।

$$\frac{\Delta N}{N} < \frac{\Delta K}{K}$$

इस प्रकार की स्थिति मुख्यतया विकसित देशों में पाई जाती है। इस स्थिति में पहुंचने पर फिर से सन्तुलन की स्थिति को प्राप्त किया जाता है जोकि सुनहरी युग की अवस्था कहलाती है। अतः सन्तुलन की अवस्था $\frac{\Delta N}{N} = \frac{\Delta K}{K}$ ही होती है।

सुनहरी युग के प्रकार

अब तक हमने पढा है कि किस प्रकार की कार्य विधि द्वारा सुनहरी युग की अवस्था को प्राप्त किया जा सकता है। अब हम जॉन राबिन्सन द्वारा अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "Essays in the Theory of Economic Growth " में दिए गए सुनहरी युग के प्रकार की चर्चा करेगें।

1. निर्बल सुनहरी युग

निर्बल सुनहरी युग से अभिप्राय उस परिस्थिति से है जब अर्थव्यवस्था सन्तुलन में होते हुए उस रास्ते से दूर चली जाती है और उसके द्वारा यह समझा जाने लगता है कि वह सन्तुलन में पहुंचने में असमर्थ है। इस काल में रोजगार में भी कमी होती है, पूंजी निर्माण की दर भी बहुत कम हो जाती है।

2. सीसा युग

इस युग में पूंजी निर्माण की दर जनसंख्या की वृद्धि दर से कम होती है। तकनीकी विकास भी नही हो पाता। बेरोजगारी भी काफी मात्रा में बढने लगती है।

3. प्रतिबन्धित स्वर्ण युग

प्रतिबन्धित स्वर्ण युग की अवस्था में पूर्ण रोजगार तथा पूंजी संचय दोनों ही पाए जाते है। लेकिन इस प्रकार की स्थिति केवल $\frac{\Delta K}{K} = \frac{\Delta N}{N}$ के कारण ही नही होती बल्कि अन्य कारणों से भी होती है जैसे श्रमिकों के संघों के दवाब के कारण।

4. उछलता – कूदता प्लेटिनम युग

इस अवस्था की मुख्य विशेषता यह है कि शुरू में बेरोजगारी रहती है। परन्तु जैसे – जैसे लाभ बढने लगते है तो इस कारण से रोजगार भी बढने लगते है। यह अत्यन्त महत्वूर्ण अवस्था होती हे।

5. रेंगता हुआ प्लेटिनम युग

इस अवस्था में अर्थव्यवस्था द्वारा स्थैतिक रूप से लिया जाता है। यह अवस्था पूर्ण रोजगार की अवस्था होती है तथा इस अवस्था में पूंजी गहन तकनीके भी अपनायी जाती है। पूर्ण रोजगार होने पर भी इस अवस्था में लाभ घटने लगते है तथा अन्त में अर्थव्यवस्था स्थैतिक रूप धारण क लेती है।

6. दोगला स्वर्ण युग

इस युग में बेरोजगारी भी पाई जाती है। बेरोजगारी होने के बावजूद भी श्रमिक – वर्ग उत्पादकता बढाने के लिए तैयार नही होते। इस कारण से इस अवस्था में पूंजी संचय तथा तकनीकी प्रगति का कार्य भी रूक जाता है।

7. दोगला प्लैटिनम युग

इस युग में तकनीकी विकास, पूंजी संचय तथा पूर्ण रोजगार आदि सब कुछ होते हुए भी श्रमिकों की वास्तविक आय बढ नही पाती।

आलोचनाएं

1 इस मॉडल की एक मुख्य मान्यता यह है कि उत्पादन में केवल दो ही साधन होते है श्रम तथा पूंजी। परन्तु अर्थशास्त्रियों द्वारा इसकी इस आधार पर आलोचना की गई तथा कहा गया की उत्पादन के कई अन्य साधन भी होते है।

2 इस मॉडल की मान्यता है कि कीमत स्तर में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नही होता परन्तु वास्तविक जीवन में कीमत स्तर में परिवर्तन होता है।

3 यह आवश्यक नही कि उपभोग तथा निवेश पदार्थो का उत्पादन निश्चित तकनीक द्वारा ही किया जाए।

4 सुनहरी युग की भी आलोचना हुई की आवश्यक नही है कि इस प्रकार की सन्तुलन की अवस्था हो।

4.5 कैल्डोर का संवृद्धि मॉडल

निकोलस काल्डोर ने 1962 में वृद्धि से संबंधित एक माडल दिया। इन्होने आर्थिक वृद्धि से संबंधित अपने विचार किए जोकि अत्यन्त महत्वपूर्ण रहे। इन्होनें अपने वृद्धि माडल को दो तरीके से सम्बनिधत किया है 1. हैरेड प्रावैगिक सिद्धान्त तथा 2. केन्जयीन तकनीकी विश्लेषण। इन्होनें तकनीकी प्रगति के साथ – साथ पूंजी संचय पर भी ध्यान दिया है। कैल्डोर के संवृद्धि मॉडल का आर्थिक विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।

मान्यताएं

1 यह मॉडल केन्जीयन के पूर्ण रोजगार पर आधारित है। केन्ज ने अल्पकाल के लिए पूर्ण रोजगार को लिया।

2 इसकी एक मुख्य मान्यता यह भी है की तकनीकी प्रगति पूंजी निर्माण की दर पर निर्भर करती है।

3 तकनीकी प्रगति फलन दो बातो।पर निर्भर करती है। 1. पूंजी की वृद्धि और 2. उत्पादकता की वृद्धि दर। इन दोनो के इकट्ठे प्रभाव को तकनीकी प्रगति विकास फलन कह सकते है। कितनी पूंजी पर कितना उत्पादन हो रहा है ये पूंजी की वृद्धि दर तथा उत्पादकता की वृद्धि दर पर निर्भर करती है।

4 मॉडल की व्याख्या करने के लिए विभिन्न धारणाओं को शामिल किया गया है जैसे – आय, मजदूरी, लाभ, पूंजी, बचत और निवेश

व्याख्या

1 स्थिर कामगारी जनसंख्या

इस मॉडल की व्याख्या हम बचत फलन, निवेश फलन तथा तकनीकी प्रगति प्रकिया द्वारा भी कर सकते है।

(a) बचत फलन

कैल्डोर के संवृद्धि मॉडल की व्याख्या करने के लिए बचत फलन अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

$S_t = \alpha P_t + \beta(Y_t - P_t)$ ------- (1)

मजदूरी $= Y_t - P_t$

लाभ $= P$

$I > \alpha > \beta \geq 0$

निवेश फलन

काल्डोर के संवृद्धि मॉडल की व्याख्या के लिए निवेश फलन भी अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

$K_t = \alpha' Y_{t-1} + \beta' \frac{P_{t-1}}{K_{t-1}} Y_{t-1}$ --------------- (2).

पूंजी बनेगा पिछले साल की आय से (Y_{t-1})

α, β = गुणक

$I_t = K_{t+1} - K_t = K_{t+1}$ = पूंजी का अन्त

$\alpha' > 0$ And $\beta' > 0$

तकनीकी प्रगति फलन

कालडोर के संवृद्धि मॉडल की व्याख्या करने के लिए तकनीकी प्रगति फलन का जानना भी अत्यन्त आवश्यक है जोकि आर्थिक विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

$$\left[\frac{Yt+1}{Yt} = \alpha'' + \beta'' \frac{It}{Kt}\right]$$

$\frac{Yt+1}{Yt}$ = आय की वृद्धि दर

$\alpha'' + \beta''$ = बढते प्रतिफल

$\frac{It}{Kt}$ = स्टॉक पूंजी के अनुपात के रूप में व्यक्त शुद्ध निवेश की दर

$\alpha > 0$ और $1 > \beta > 0$

β'' = प्रति व्यक्ति पूंजी

$Kt = \alpha' Y_{t-1} + \beta' \frac{Pt-1}{Kt-1} Y_{t-1}$

$Kt+1 = \alpha' Y_t + \beta' \frac{Pt}{Kt} Yt$

$It = K_{t+1} - K_t$

$It = \alpha' Yt + \beta' \frac{Pt}{Kt} Yt - \left[\alpha' Y_{t-1} + \beta' \frac{Pt-1}{Kt-1} Y_{t-1}\right]$

$It = \alpha' Yt + \beta' \frac{Pt}{Kt} Yt - \alpha' Yt-1 - \beta' \frac{Pt-1}{Kt-1} Y_{t-1}$

$= \alpha'(Y_t - Y_{t-1}) + \beta' \left(\frac{P_t}{K_t} Y_t - \beta 1 \frac{P_{t-1}}{K_{t-1}} Y_{t-1}\right)$

$= \alpha'(Y_t - Y_{t-1}) + \beta' \frac{P_t}{K_t} Y_t - \beta' \frac{P_{t-1}}{K_{t-1}} Y_{t-1} + \beta' \frac{P_{t-1}}{K_{t-1}} Y_t - \beta' \frac{P_{t-1}}{K_{t-1}} Y_t$

$= \alpha'(Y_t - Y_{t-1}) + \beta' \frac{P_{t-1}}{K_t - 1} (Y_t - Y_{t-1}) + \beta' \left(\frac{P_t}{K_t} - \frac{P_{t-1}}{K_{t-1}}\right) Y_t$

$= \alpha'(Y_t - Y_{t-1}) + \beta' \frac{P_{t-1}}{K_t - 1}(Y_t - Y_{t-1}) + \beta' \left(\frac{P_t}{K_t} - \frac{P_{t-1}}{K_{t-1}}\right) Y_t$

$I_t = (Y_t - Y_{t-1}) (\alpha' + ' \frac{P_{t-1}}{K_t - 1}) + \beta' \left(\frac{P_t}{K_t} - \frac{P_{t-1}}{K_{t-1}}\right) Y_t$ --------------------- (3)

$= \frac{Y_{t+1}}{Y_t} - Y_t$

$= \alpha'' + \beta'' \frac{I_t}{K_t}$ ------------------------- (3)

$= \alpha'' + \beta'' \frac{I_t}{K_t}$ = प्रति व्यक्ति पूंजी के साथ संयुक्त रूप से निवेश की दर की आय की वृद्धि दर + तकनीकी प्रगति

स्थिर कामगारी जनसंख्या

$\frac{K_1}{Y_o} = \alpha' + \beta' \frac{P_o}{K_o}$ $\quad (Kt = \alpha' Y_{t-1} + \beta' \frac{P_{t-1}}{K_{t-1}} Y_{t-1})$

$\frac{I_1}{Y_1} = \frac{Y_1 - Y_0}{Y_o} \quad \frac{K_1}{Y_1} + \beta' \left(\frac{P_t}{K_1} - \frac{P_0}{K_1}\right)$

$\frac{I_t}{Y_t} = (Y_t - Y_{t-1})(\alpha' + \beta' \frac{P_{t-1}}{K_{t-1}}) + \beta' \left(\frac{P_t}{K_t} - \frac{P_{t-1}}{K_{t-1}}\right) Y_t$

$\frac{I_t}{Y_t} = \frac{Y_t - Y_{t-1}}{Y_t} (\alpha' + \beta' \frac{P_{t-1}}{K_{t-1}}) + \beta' \left(\frac{P_t}{K_t} - \frac{P_{t-1}}{K_{t-1}}\right) \frac{Y_t}{Y_t}$

$\frac{I_t}{Y_t} = \frac{(Y_{t-}Y_{t-1)}}{Y_t}\frac{K_t}{Y_{t+1}} + \beta^{'}\left(\frac{P_t}{K_t} - \frac{P_{t-1}}{K_{t-1}}\right)$

$\frac{S_1}{Y_1} = \alpha\frac{P_1}{Y_1} + \beta\left(\frac{Y_t - Y_{t-1}}{Y_t}\right) = \beta + (\alpha - \beta)\frac{P_1}{Y_1}$ $[S_t = \alpha P_t + \beta(Y_t - P_t)]$

$\frac{S_1}{Y_1} = \frac{I_1}{Y_1}$ $\left[\frac{I_1}{Y_1} = \frac{Y_{1-}Y_0}{Y_o}\frac{K_1}{Y_1} + \beta'\left(\frac{P_t}{K_t} - \frac{P_0}{K_0}\right)\right]$

$\frac{S_1}{Y_1} = \left[\frac{Y_{1-}Y_0}{Y_o}\frac{K_1}{Y_1} - \beta'\frac{P_0}{K_1}\right] + \beta'\frac{Y_1}{K_1}.\frac{P_1}{Y_1}$

महत्वपूर्ण भूमिका लाभ की है।

स्थिर सन्तुलन की अवस्था को बनाए रखने के लिए इस शर्त को पूरा करना पडेगा।

$\alpha - \beta > \beta^1\frac{Yt}{K_t}$

आवश्यक शर्त

$Pt \leq Yt - W$

Pt = लाभ

$\frac{P_t}{Y_t} \geq m$; $\frac{P_t}{Y_t}$ = लाभ की दर

m = न्यूनतम लाभ की सीमा

(B) जनसंख्या में वृद्धि

जनसंख्या में वृद्धि होने पर काल्डोर के वृद्धि मॉडल की गणना निम्न समीकरण द्वारा कर सकते है।

$$\frac{Y_{t+1}}{Y_t} - \lambda = \alpha'' + \beta''\left(\frac{I_t - \lambda}{K_t}\right)\left[\frac{Y_{t+1} - Y_t}{Y_t} = \alpha'' + \beta''\frac{Y_t}{K_t}\right]$$

$\frac{Y_{t+1-}Y_t}{Y_t}$ And $\frac{I_t}{K_t}$ =gt

$= gt - \lambda = \alpha'' + \beta''(gt - \lambda)$

$= gt - \lambda = \frac{\alpha''}{1-\beta''}$ But $\frac{\alpha''}{1-\beta''}$ =gt

gt = आय वृद्धि दर

λ = जनसंख्या की अधिकतम वृद्धि

It = जनसंख्या की वास्तविक वृद्धि दर

gt = λ if gt ≤ λ, then It = gtAnd

gt <λ if gt >λ, then It = λ

gt >I

आलोचना

कालडोर के वृद्धि मॉडल ने देशों के आर्थिक विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई अर्थात पता चलता है कि कितनी वृद्धि हो रही है। परन्तु फिर भी इस मॉडल की आलोचना हुई है जो इस प्रकार है।

1. काल्डोर मॉडल में यह व्याख्या नही की गई कि वृद्धि दर का निर्धारण किस प्रकार से हुआ है।
2. इस मॉडल में यह भी व्याख्या नही की गई कि अर्थव्यवस्था में स्थिरता और अस्थिरता की स्थिति का निर्धारण किस प्रकार होता है अर्थात ये स्थिति कैसे आती है।
3. इस मॉडल द्वारा तकनीकी प्रगति फलन की भी सही प्रकार से व्याख्या नही की गई।

4.6 सारांश

परम्परावादी अर्थशास्त्रियों के बाद सबसे ज्यादा योगदान अर्थव्यवस्था में 1929 की मन्दी दूर करने का अर्थशास्त्री जे0 एम0 केन्ज को जाता है। परन्तु केन्ज ने केवल अल्पकाल की व्याख्या की है। दूसरा केन्ज ने केवल मांग पत्र की बात की है। पूर्ति पक्ष की केन्ज ने अवहेलना की है। केन्ज के बाद अर्थशास्त्री हैरोड और डोगार ने मांग पक्ष के साथ पूर्ति पक्ष पर भी बल दिया था। अर्थव्यवस्था में जितना मांग का महत्व है उतना ही पूर्ति का भी महत्व है। हैरोड और डोमर ने दीर्घकालीन संवृद्धि दर की व्याख्या की है। जिसमें दीर्घकाल में पूर्ण रोजगार की स्थिति बनी रहती है परन्तु हैरोड और डोमार में श्रम – पूंजी के स्थिर अनुपात की बात की थी। जबकि इस मान्यता को नव – क्लासिकी अर्थशास्त्रियों ने त्याग दिया था। नव – क्लासिकी अर्थशास्त्रियों में परिवर्तनशील श्रम – पूंजी अनुपात को लेकर के अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार का अध्ययन किया है। परन्तु सोलो जैसे नव – क्लासिकी अर्थशास्त्रियों ने स्थिर बचत आय अनुपात की बात की है। जबकि कैम्ब्रिज अर्थशास्त्रियों ने परिवर्तनशील बचत आय अनुपात को अपने अध्ययन का हिस्सा बनाया है।

4.7 मुख्य शब्दावली

- **वास्तविक वृद्धि दर –** अर्थव्यवस्था मे।वास्तविक मात्रा में जो बचत और निवेश उपलब्ध होते हे उनके द्वारा वास्तविक वृद्धि दर का निर्धारण होता है। जिस दर पर देश विकास कर रहा होता है उसे वास्तविक वृद्धि दर कहते है।
- **अभीष्ट वृद्धि दर –** यह वह दर है जिसे यदि प्राप्त कर लिया जाए तो उद्यमी ऐसी मानसिक स्थिति में आ जाता है कि वे उसी प्रकार से विकास करते रहना चाहेगे।
- **प्राकृतिक वृद्धि दर** – इसके द्वारा उस प्रवृति को बताया जाता है कि जिसमें पूर्ण रोजगार बना रहता है।
- **सोलो मॉडल** – सोलो मॉडल मे।यह बताया है कि यदि बचत की दरे, घिसावट, श्रम – शक्ति वृद्धि, उत्पादकता की वृद्धि दरे, समान हो तो अर्थव्यवस्थाएं आय के समान स्तर की ओर अभिमुख होगी।
- **सुनहरी युग** – एक अर्थव्यवस्था पूर्ण – रोजगार सन्तुलन में तब होगी यदि जनसंख्या की वृद्धि – दर तथा पूंजी की वृद्धि दर आपस में बराबर होते है। जान राबिन्सन द्वारा इस समानता को सुनहरी युग की अवस्था का नाम दिया गया है।
- **क्रान्तिक वृद्धि दर** – जब आय की वृद्धि दर व पूंजी– स्टाक की वृद्धि दर आपस में बराबर होती है तो यह पूंजी स्टाक की एक क्रान्तिक वृद्धि दर कहलाती है।
- **निर्बल सुनहरी युग** – निर्बल सनहरी युग से अभिप्राय उस परिस्थिति से है जब अर्थव्यवस्था सन्तुलन में होते हुए उस रास्ते से दूर चली जाती है और उसके द्वारा यह समझा जातने लगता है कि वह सन्तुलन में पहुंचने में असमर्थ है।

4.8 अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न

1. हैरोड – डोमर दोनो ने .... की बात कही है।
2. पूंजी – संचय से .... बढेगी।
3. हैरोड ने उत्पादन तथा .... पक्ष दोनो को ध्यान मे।रखा है।
4. अभीष्ट वृद्धि दर को .... भी कहा जाता है।
5. डोमर मॉडल के अनुसार $Yd=1/\alpha$ (–)
6. डोमर मॉडल के अनुसार $Ys=\sigma.$ (–)
7. हैरड माडल .... को मानते है।
8. डोमर मॉडल ....को मानते है।
9. सोलो मॉडल .... का विस्तार है।
10. सोलो मॉडल .... मॉडल है।
11. दोहरी अर्थव्यवस्था को .... द्वारा माना गया है।
12. .... द्वारा तकनीकी वृद्धि फलन को महत्व दिया है उत्पादन फलन की जगह।
13. मीड मॉडल .... अर्थव्यवस्था पर लागू होता है।
14. मीड मॉडल में उत्पादन .... के अन्तर्गत होता है।
15. मीड मॉडल में उत्पादन के लिए केवल .... का उपयोग किया जाता है।
16. मीड मॉडल में तकनीकी प्रगति .... होती है।
17. जॉन राबिन्सन मॉडल .... पर लागू होता है।
18. जान राबिन्सन द्वारा आर्थिक विकास का उल्लेख किया गया है।
19. जान राबिन्सन द्वारा .... का उल्लेख किया गया है।
20. जान राबिन्सन मॉडल .... अर्थव्यवस्था के लिए है।

4.9 अपनी प्रगति जानिए के उत्तर

1. पूंजी संचय
2. उत्पादन क्षमता
3. आय
4. पूर्ण – क्षमता वृद्धि
5. I
6. K
7. पूंजी – उत्पाद अनुपात
8. उत्पाद – पूंजी अनुपात
9. हैरड – डोगर
10. बहिर्जात
11. सोलो
12. काल्डोर
13. बन्द
14. पैमाने के समान प्रतिफल
15. भूमि और श्रम
16. तटस्थ
17. विकासशील
18. जनसंख्या वृद्धि
19. सुनहरी अवस्था
20. बन्द अर्थव्यवस्था

4.10 अभ्यास हेतु प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वास्तविक वृद्धि दर क्या है ?
2. अभीष्ट वृद्धि दर क्या है ?
3. प्राकृतिक वृद्धि दर क्या है ?
4. बहिर्जात मॉडल से क्या अभिप्राय है ?
5. आन्तरिक मॉडल से क्या अभिप्राय है ?
6. सुनहरी युग से आप क्या जानते है ?
7. पूंजी भण्डार की वृद्धि दर से आप क्या जानते है ?
8. सोलो मॉडल क्या है ?
9. मीड मॉडल से क्या अभिप्राय है ?
10. जान राबिन्सन मॉडल क्या है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हैरड – डोमर मॉडल की आलोचनात्मक व्याख्या करे ?
2. मीड के वृद्धि मॉडल की मान्यताओं की विस्तार से व्याख्या कीजिए ?
3. सोलो वृद्धि मॉडल, हैरड – डोमर मॉडल का सुधरा रूप है व्याख्या कीजिए ?
4. जान राबिन्सन के पूंजी – संचयन मॉडल में सन्तुलन – वृद्धि निर्धारक क्या है ? स्वर्णिम – यग के रूपान्तरों को भी बताइए ?
5. हैरोड के विकास मॉडल को समझाइए। यह डोमर के मॉडल से किस प्रकार भिन्न है ?
6. सोलो के आर्थिक संवृद्धि सिद्धान्त का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए ?

4.11 आप ये भी पढ़ सकते है एवम् सन्दर्भ सूची

- Ahuja, H.L. (2017). Development Economics (Ist Edition). New Delhi S. Chand & Company Pvt. Ltd.
- Jhingan, M.L. (2004). The Economics of DevelopmentAnd Planning (4 th edition). New Delhi : Vrinda publication Pvt. Ltd. Hindi medium
- Puri, V.K. & Mishra, S.K. (2019). Indian Economy (37th edition). Mumbai : Himalaya Publishing House Pvt. Ltd.
- Mishra, S.K. & Puri, V.K. (2006). Economics of DevelopmentAnd Planning (12th edition). Mumbai : Himalya Publisnig House
- Singh, S.P. (2007). Economic DevelopmentAnd Planing (21st Edition). New Delhi : S.Chand & Company Ltd. (Hindi Medium)
- Todaro, M.P. & Smith, S.C. (2012). Economic Development (11th Edition). Boston :Addision - Wesley
- Thirlwal,A.P. (2006). Growth & Development (8th Edition). Palgrave Macmillan. Hampsnire
- Taneja, M.L. & Myer, R.M. (2014). Economics of Development & Planning (2nd Edition). Jalandhar. Vishal Publishing Co. (Hindi Medium)